Nitin-Gupta.com

अनुक्रमणिका

- भारत में यूरोपीय वाणिज्य का प्रारम्भ/भारत में यूरोपियों का आगमन....3
- बंगाल में अंग्रेजी प्रभुसत्ता....9
- सिक्ख राज्य एवं आँग्ल-सिक्ख युद्ध....15
- भारत में ब्रिटिश राज्य का आर्थिक प्रभाव....21
- 1857 का विद्रोह....23
- कृषक आन्दोलन....27
- आधुनिक शिक्षा का विकास....29
- 19वीं शताब्दी पुनर्जागरण....30
- मुस्लिम सुधार आन्दोलन....33
- गवर्नर एवं गवर्नर जनरल/वायसराय....36
- राष्ट्रीय आन्दोलन (1885-1947 ई.)....44
- कांग्रेस के उदय में सहायक कारक....46
- कांग्रेस की स्थापना....47
- भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के महत्वपूर्ण अधिवेशन....48
- बंगाल विभाजन एवं स्वदेशी तथा बहिष्कार आन्दोलन....53
- प्रथम विश्व युद्ध के दौरान राष्ट्रीय आन्दोलन....55
- होमरूल आन्दोलन....56
- क्रान्तिकारी आन्दोलन....57
- विदेशों में क्रान्तिकारी आन्दोलन....59
- द्वितीय चरण का क्रान्तिकारी आन्दोलन....60
- कांग्रेस आन्दोलन का तीसरा चरण (1919-1947 ई.)....62
- रौलेट एक्ट (1919 ई.)....65
- खिलाफत एवं असहयोग आन्दोलन (1920-22 ई.)....66
- साइमन कमीशन....68
- सविनय अवज्ञा आन्दोलन (1930 ई.)....71
- 1937 का प्रान्तीय चुनाव....75
- भारत छोड़ो आन्दोलन (1942)....77
- भारत स्वतंत्रता अधिनियम (1947 ई.)....84

GET IT ON Google Play Best Study PDF के लिए हमारी App को Download करें "GK Trick By Nitin Gupta"

🚀 All-in-One Best Hindi PDF Notes – सभी प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए सम्पूर्ण समाधान 🟦

📥 अभी जॉइन करें ⬇️

★★★★★ 1,000+ छात्रों द्वारा प्रमाणित

📕 600+ PDF Notes सभी विषयों के लिए उपलब्ध

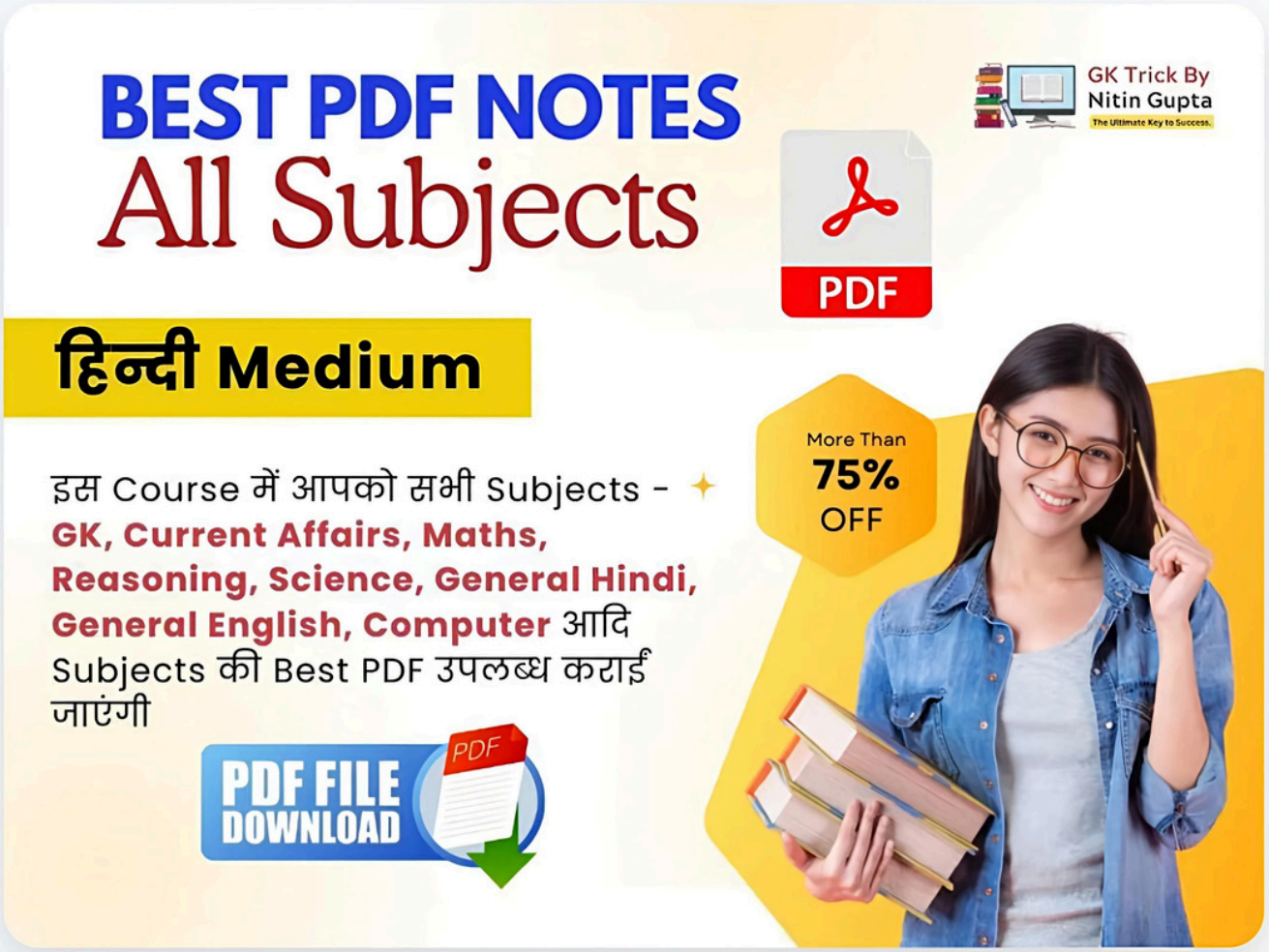

🎁 अब 75% छूट + सभी PDF मोबाइल में Download करें!

आधुनिक भारत का इतिहास

भारत में यूरोपीय वाणिज्य का प्रारम्भ/भारत में यूरोपियों का आगमन

- मध्यकाल में भारत को पश्चिमी देशों से जोड़ने वाले दो समुद्री मार्ग थे—
  1. फारस की खाड़ी वाला मार्ग
  2. लाल सागर वाला मार्ग
- दो कारणों से लाल सागर का मार्ग दुष्कर था—
  1. मार्ग में अत्यधिक कुहरा पड़ना
  2. मार्ग में चट्टानों का पड़ना
- ज्यादातर व्यापार फारस की खाड़ी से जाने वाले मार्ग से होता था जिसे अधिक प्राथमिकता दी जाती थी।
- एशिया से यूरोप को जाने वाली वस्तुएं अनेक राज्यों एवं मार्गों से होकर गुजरती थी और हर राज्य को चुंगी और मार्ग कर देने पड़ते थे।
- यूरोप के व्यापार में इटली के व्यापारियों का एकाधिकार था, इसके कारण यूरोप के नवीन राज्य व्यापार से वंचित थे।
- 1453 ई. में तुर्कों ने कुस्तुनतुनिया की विजय कर ऑटोमन साम्राज्य की स्थापना की और फारस की खाड़ी वाले मार्ग पर इनका नियंत्रण स्थापित हो गया और फिर तुर्कों ने इस क्षेत्र से होने वाले यूरोपीय व्यापार में दिक्कतें पैदा करने लगे।
- भौगोलिक खोजों एवं व्यापारिक मार्गों के आविष्कार में पुर्तगाल अग्रणी था। यहाँ का शासक प्रिंस हेनरी द नेविगेटर ने इस कार्य में महत्वपूर्ण योगदान दिया।
- 1486 ई. में एक पुर्तगाली नाविक बार्थ लोम्युडेज ने अफ्रीका स्थित उत्तमाशा द्वीप (केप ऑफ गुड होप) खोज निकाला।
- 1492 ई. में स्पेन की सहायता से कोलम्बस नामक एक नाविक भारत की खोज के लिए अटलांटिक महासागर में जोखिम से भरी यात्रा प्रारम्भ की। अन्ततः इसने अमेरिका की खोज की।
- 1498 ई. में एक पुर्तगाली वास्कोडिगामा उत्तमाशा अन्तरीप के रास्ते से होकर भारत पहुँचा जो एक सीधा मार्ग था।

यूरोपियों के भारत आगमन का क्रम

देश	वर्ष	कम्पनी का नाम
1. पुर्तगाली	1498 ई.	एस्तादो-द-इण्डिया
2. डच	1605 ई.	विरिंगदे-ओस्त-इंडिशे
3. ब्रिटिश	1608 ई.	द गवर्नर एंड कम्पनी ऑफ मर्चेन्ट ऑफ लंदन ट्रेडिंग इन टू द ईस्ट इंडीज
4. डेनिश	1616 ई.	डेनिश-ईस्ट इंडिया कम्पनी
5. फ्रांसीसी	1667 ई.	कम्पनी-द-इंड-ओरियंटल

पुर्तगाली

- पुर्तगाल द्वारा यूरोप और भारत के बीच सीधे समुद्री मार्ग खोजने में आर्थिक एवं धार्मिक कारण सक्रिय थे। आर्थिक कारण में व्यापार करना और धार्मिक कारण में एशिया में ईसाई धर्म का प्रचार करना।
- सर्वप्रथम 1498 ई. में वास्कोडिगामा भारत में कालीकट बंदरगाह (केरल-मालाबार तट) पहुँचा। यहाँ पहले से बसे हुए अरबी व्यापारियों द्वारा वैमनस्य का रवैया अपनाया लेकिन कालीकट के राजा जमोरिन ने इसका स्वागत किया और मसाले तथा जड़ी-बूटियाँ ले जाने की अनुमति प्रदान की।

Nitin-Gupta.com

GET IT ON Google Play Best Study PDF के लिए हमारी App को Download करें "GK Trick By Nitin Gupta"

- 1500 ई. में अल्वारेज केब्रल के नेतृत्व में पुर्तगालियों का दूसरा अभियान दल भारत गया, ये भी मसाला आदि लेकर पुर्तगाल पहुँचा।
- 1502 ई. में वास्कोडिगामा पुनः भारत आया और इसी वर्ष इसने **कोचीन** में पुर्तगालियों की प्रथम फैक्ट्री की स्थापना की। अर्थात् भारत में प्रथम पुर्तगाली बस्ती बसाई।
- 1505 ई. में पुर्तगाली सरकार ने एक नई नीति अपनाई जिसके द्वारा भारत में एक गवर्नर की नियुक्ति की गयी। इस संदर्भ में पहला गवर्नर अल्मीडा बना।

अल्मीडा (1505-09 ई.)

- अल्मीडा ने **कोचीन** का दुर्गीकरण कराया तथा इसे अपना मुख्यालय बनाया।
- 1508-09 ई. में इसने गुजरात, मिस्र और तुर्की के संयुक्त मुस्लिम जल बेड़े को पराजित कर द्वीव पर अधिकार कर लिया।

अल्बूकर्क (1509-15 ई.)

- अल्बूकर्क भारत में पुर्तगाली सत्ता का वास्तविक संस्थापक था।
- इसने 1510 ई. में बीजापुर से **गोवा** को जीत लिया और किलेबंदी करवाई। एक शक्ति के केन्द्र के रूप में विकास हुआ।

वास्कोडिगामा (1524-29 ई.)

- वास्कोडिगामा 1524-29 ई. तक यहाँ का गवर्नर रहा और 1529 ई. में गोवा में इसकी मृत्यु हो गयी।
- गोवा में ही वास्कोडिगामा की कब्र बनाई गयी।
- सेंट जेबियर ईसाई संत की कब्र भी गोवा में है।

नुनो-द-कुन्हा (1529-38 ई.)

- यह अल्बूकर्क का वास्तविक उत्तराधिकारी था। इसने 1530 ई. में कोचीन की जगह गोवा को अपनी राजधानी बनाई।
- कुन्हा ने मद्रास के निकट सैन्थोम तथा बंगाल में **हुगली** में पुर्तगाली बस्तियों की स्थापना करके भारत के पूर्वी तट की ओर पुर्तगाली वाणिज्य का विकास किया।

पुर्तगालियों की देन

- भारत में प्रेस (छापाखाना) पुर्तगालियों की देन है।
- तम्बाकू की खेती सर्वप्रथम 1508 ई. में दक्षिण भारत में पुर्तगालियों ने शुरु करवाई फिर उत्तर भारत में शाहजहाँ के काल में आई।
- भारत में पपीता, अनन्नास, लीची, संतरा, आलू, शकरकंद, मूँगफली, काजू और बादाम की खेती पुर्तगालियों की देन थी।

प्रमुख पुर्तगाली गवर्नर

1. अल्मीडा 1505-09 ई.	—	मिस्र, तुर्की एवं गुजरात की संयुक्त मुस्लिम जल बेड़े को पराजित किया।
	—	कोचीन का दुर्गीकरण
	—	केन्नानोर में पुर्तगाली फैक्ट्री की स्थापना।
2. अल्बूकर्क 1509-15 ई.	—	1510 ई. में गोवा को जीतकर पुर्तगाली आधिपत्य की स्थापना।
	—	भारत में पुर्तगाली सत्ता का वास्तविक संस्थापक।
3. नुनो-द-कून्हा 1529-38 ई.	—	कोचीन के स्थान पर गोवा को राजधानी बनाया।
	—	पूर्वी तट की ओर पुर्तगाली वाणिज्य का विस्तार।
	—	हुगली एवं सेन्थोम में पुर्तगाली फैक्ट्री की स्थापना।

डच

- डच हालैण्ड/नीदरलैण्ड के निवासी थे। सर्वप्रथम 1595 ई. में कार्नेलियस हाउटमैन के नेतृत्व में डचों का पहला

Nitin-Gupta.com

GET IT ON Google Play Best Study PDF के लिए हमारी App को Download करें "GK Trick By Nitin Gupta"

अभियान दल सुमात्रा पहुंचा।

- 1602 ई. में विभिन्न डच कम्पनियों को मिला करके हालैण्ड की सरकार ने युनाइटेड ईस्ट इंडिया कम्पनी ऑफ नीदरलैण्ड के नाम से एक व्यापारिक संस्थान की स्थापना की।
- सर्वप्रथम 1605 ई. में डच नौसेना नायक वाँ-देर-हेग के नेतृत्व में डचों का पहला अभियान दल भारत को भेजा और पूर्वी तट पर स्थित मसुलीपत्तनम में इन्होंने अपनी पहली फैक्ट्री स्थापित की।
- 1610 ई. में इन्होंने पूर्वी तट पर स्थित **पूलीकट** को अपनी फैक्ट्री बनाई और इसे अपना मुख्यालय भी बनाया। ये लोग यहाँ स्वर्ण पैगोडा (सोने की मुद्रा) ढालते थे।
- 1653 ई. में डचों ने बंगाल स्थित **चिनसुरा** में अपनी फैक्ट्री स्थापित की। बंगाल में यह डचों का सबसे बड़ा केन्द्र था।

डचों द्वारा भारत में स्थापित फैक्ट्रियाँ

वर्ष	स्थान
1.1605 ई.	मसुलीपत्तनम (आं. प्र.)
2.1606 ई.	पेत्तोपोली (आं. प्र.)
3.1610 ई.	पूलीकट (आं. प्र.)
4.1616 ई.	सूरत (गुजरात)
5.1627 ई.	पीपली (प. बंगाल)
6.1653 ई.	चिन्सुरा (प. बंगाल)
7.1658 ई.	कासिम बाजार, बालासोर एवं नेगपत्तम

- डच लोग भारत से सूती वस्त्र, नील, शोरा, कच्च रेशम, अफीम, नमक और चावल का निर्यात करते थे।
- डच लोग भारत से मसाला का निर्यात नहीं करते थे।

डचों द्वारा भारत से निर्यात की जाने वाली वस्तुयें

सूती वस्त्र	नील
शोरा	कच्चा रेशम
अफीम	चावल
नमक	

अंग्रेज

- एलिजाबेथ-I का शासनकाल ब्रिटिश इतिहास काल में स्वर्णिम युग के नाम से जाना जाता है। यह कई दृष्टियों में महत्वपूर्ण रहा।
- इस काल में व्यापारिक उन्नति के लिए भी अनेक प्रयास किए गए। महारानी एलिजाबेथ-I के समय 31 दिसम्बर, 1600 ई. को एक विशाल व्यापारिक संघ की स्थापना हुई, जिसका नाम रखा गया–द गवर्नर एण्ड कम्पनी ऑफ मार्चेंट ऑफ लंदन ट्रेडिंग इन टु द ईस्ट इंडीज। इस कम्पनी में अनेक शेयर होल्डर थे।
- कम्पनी की पहली यात्रा 1601 ई. में हुई जब कम्पनी के जहाज इण्डोनेशिया गए।
- सर्वप्रथम 1608 ई. में कैप्टन हाकिंस के नेतृत्व में कम्पनी का पहला प्रतिनिधिमण्डल हेक्टर नामक जल जहाज से भारत में **सूरत** पहुँचा और यहाँ पर अंग्रेजों की पहली अस्थाई फैक्ट्री की स्थापना की।
- कैप्टन हॉकिन्स सूरत से **जहाँगीर** के दरबार पहुँचा जहाँगीर ने इसे **400 का मनसब** तथा **खॉन/इंग्लिश खॉन** की उपाधि दी।
- 1611 ई. में अंग्रेजों ने पूर्वी तट पर स्थित **मसुलीपत्तनम** में अपनी दूसरी फैक्ट्री की स्थापना की।
- 1613 ई. में सूरत की फैक्ट्री को स्थायित्व प्राप्त हुआ।
- 1615 ई. में ब्रिटिश सम्राट जेम्स-I के राजदूत के रूप में **सर टामस रो** जहांगीर के दरबार में आया। यह तीन वर्षों तक (1618 ई. तक) जहाँगीर के दरबार में रहा।

Nitin-Gupta.com

GET IT ON Google Play Best Study PDF के लिए हमारी App को Download करें "GK Trick By Nitin Gupta"

इसने व्यापार करने से सम्बंधित तथा व्यापार करों के छूट से संबंधित दो लाइसेंस कम्पनी के लिए प्राप्त किया।

- 1632 ई. में अंग्रेजों ने गोलकुण्डा के सुल्तान अब्दुल्ला कुतुबशाह से 500 पौण्ड वार्षिक कर देने के बदले गोलकुण्डा के सभी बंदरगाहों से व्यापार करने का अधिकार प्राप्त किया। लाभकारी फरमान होने के कारण इसे सुनहरा फरमान के नाम से जाना जाता है।
- 1639 ई. में चंद्रगिरि के शासक से अंग्रेजों ने मद्रास को पट्टे पर प्राप्त किया। यहाँ पर अंग्रेजों ने सेंट जार्ज नामक किले का निर्माण कराया था।
- 1661 ई. में ब्रिटेन के सम्राट चार्ल्स-II का विवाह पुर्तगाली राजकुमारी कैथरीन के साथ हुआ। इस उपलक्ष्य में पुर्तगालियों से दहेज रूप में बम्बई चार्ल्स-II को प्राप्त हुआ।
- 1669 ई. में चार्ल्स-II ने बम्बई को 10 पौण्ड वार्षिक किराए पर कम्पनी को दे दिया और फिर कम्पनी ने औंगियार को अपना अधिकारी नियुक्त कर बम्बई के गाँव का शहरीकरण करवा दिया।
- 1698 ई. में अंग्रेजों ने बंगाल के एक जमींदार इब्राहिम खाँ से 1200 रु. में तीन गाँव की जमींदारी खरीद ली। ये गाँव थे–गोविन्दपुर, सूतानती और कोलकाता।
- यहीं तीनों गाँव विकसित होकर कलकत्ता नगर बसा। कलकत्ता नगर को बसाने का **श्रेय जॉब चारनाक** को जाता है।
- 1700 ई. में कलकत्ता में फोर्ट विलियम किले का निर्माण हुआ और यह पूर्वी भारत के सभी बस्तियों का केन्द्र बन गया। फोर्ट विलियम का प्रथम अध्यक्ष सर चार्ल्स आयर था।
- 1715 ई. में कम्पनी का एक प्रतिनिधि मण्डल जॉन सरमन की अध्यक्षता में मुगल सम्राट फर्रुखशियर के दरबार में पहुँचा। इस प्रतिनिधि मंडल में **हेमिल्टन नामक एक चिकित्सक** भी था।
- हेमिल्टन ने फर्रुखशियर को एक गम्भीर रोग से मुक्ति दिलाई थी। इससे प्रसन्न होकर फर्रुखशियर ने 1717 ई. में एक फरमान द्वारा कम्पनी को अनेक रियायतें प्रदान की।

अंग्रेजों द्वारा भारत में स्थापित फैक्ट्रियाँ	
वर्ष	**स्थान**
1.1608 ई.	सूरत (अस्थायी रूप में) (स्थायित्व 1613 में)
2.1611 ई.	मसुलीपत्तनम्
3.1616 ई.	अहमदाबाद, बुरहानपुर आगरा में
4.1632 ई.	गोलकुंडा में
5.1633 ई.	बालासोर एवं हरिहरपुर (उड़ीसा)
6.1639 ई.	मद्रास
7.1651 ई.	हुगली
8.1669 ई.	बम्बई
9.1700 ई.	कलकत्ता

डेनिस

- डेनिस डेनमार्क के निवासी थे, जो 1616 ई. में भारत आया और बंगाल स्थित सेरामपुर में अपनी बस्ती स्थापित की। यही भारत में इनका मुख्य केन्द्र था।

ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कम्पनी से सम्बन्धित तथ्य

- जहाँगीर ने कैप्टन हाकिन्स को इंग्लिश खाँ की उपाधि देकर, इसका विवाह एक आर्मीनियन स्त्री से करवा दिया था।
- भारत आने वाला प्रथम अंग्रेज जॉन मिल्डेन हॉल था।
- फ्रांसिस डे नामक अंग्रेज ने मद्रास को पट्टे पर चन्द्रगिरि के राजा से प्राप्त किया।

Nitin-Gupta.com

GET IT ON Google Play Best Study PDF के लिए हमारी App को Download करें "GK Trick By Nitin Gupta"

- गेराल्ड औंगियार को बम्बई नगर का संस्थापक माना जाता है।
- अंग्रेजी कम्पनी की प्रथम प्रेसीडेन्सी की स्थापना सूरत में हुई।

फ्रांसीसी

- फ्रांसीसी ईस्ट इंडिया कम्पनी की स्थापना लुई-XIV के शासन काल में इसके मंत्री कोल्बर्ट के प्रयासों से 1664 ई. में हुई।
- सर्वप्रथम 1667 ई. में फ्रांसिस कॉरो के नेतृत्व में फ्रांसीसियों का पहला अभियान दल भारत में सूरत पहुँचा और यहीं पर इन्होंने अपनी पहली फैक्ट्री की स्थापना की।
- 1669 ई. में फ्रांसीसियों ने पूर्वी तट पर स्थित मसुलीपत्तनम् में अपनी दूसरी फैक्ट्री की स्थापना की।
- 1673 ई. में बंगाल के सूबेदार शाइस्ता खाँ से एक जमीन प्राप्त की, इसी जमीन पर चंद्रनगर नामक प्रसिद्ध फ्रांसीसी बस्ती का विकास हुआ।
- 1701 ई. में फ्रांसीसियों ने पाण्डिचेरी को अपना मुख्यालय बनाया और यहाँ का पहला गवर्नर फ्रेंसिस मार्टिन था।
- 1735 ई. में ड्यूमा फ्रांसीसी गवर्नर बनकर पाण्डिचेरी आया, इसके समय में फ्रांसीसी व्यापार का अत्यधिक विकास हुआ।

आंग्ल-फ्रांसीसी संघर्ष/कर्नाटक के युद्ध

कर्नाटक का प्रथम युद्ध (1746-48 ई.)

- 18वीं शताब्दी तक कोरोमण्डल तट की भूमि को कर्नाटक के नाम से जाना जाता था। यह हैदराबाद के निजाम के अधीन एक प्रांत था, यहाँ के प्रांतपति को नवाब कहा जाता था।
- सर्वप्रथम 1746 ई. में बारनेट के नेतृत्व में अंग्रेजी जलबेड़े ने कुछ फ्रांसीसी जलपोतों को पकड़कर अपने कब्जे में ले लिया।
- डूप्ले ने इसकी शिकायत कर्नाटक के नवाब से किया लेकिन नवाब ने डूप्ले के किसी बात का ध्यान नहीं दिया।
- अतः डूप्ले ने अंग्रेजी बस्ती मद्रास का घेरा डाल दिया। अब अंग्रेजों ने नवाब का संरक्षण चाहा, नवाब ने डूप्ले को मद्रास से हटने के लिए कहा लेकिन डूप्ले नहीं माना परिणामस्वरूप नवाब ने फ्रांसीसियों के विरुद्ध युद्ध की घोषणा कर दी और फिर एक युद्ध सेंटथोम का युद्ध हुआ।
- सेंटथोम का युद्ध 1748 ई. में कर्नाटक के नवाब एवं फ्रांसीसियों के बीच लड़ा गया।
- 1748 ई. में यूरोप में एक्स-ला-शैपेल की संधि द्वारा आस्ट्रिया के उत्तराधिकार युद्ध का अंत हुआ और इसी संधि के द्वारा कर्नाटक के प्रथम युद्ध का अंत हो गया।

कर्नाटक का द्वितीय युद्ध (1748-54 ई.)

- इस युद्ध का मुख्य कारण दोनों कम्पनियों का भारतीय राजनीति में हस्तक्षेप रहा।
- 1748 ई. में हैदराबाद के निजाम-उल-मुल्क आसफजाह की मृत्यु होने से उत्तराधिकार के लिए संघर्ष प्रारम्भ हुआ।
- निजाम-उल-मुल्क की मृत्यु के बाद इनका पुत्र नासिरजंग हैदराबाद का निजाम बना, इसी समय नासिरजंग का एक भांजा मुजफ्फरजंग ने निजाम पद की दावेदारी प्रस्तुत की।
- इसी समय 1748 ई. में मराठों ने चंदा साहब को रिहा कर दिया और यह कर्नाटक में अपने उत्तराधिकार की माँग की।
- इसी समय सर्वप्रथम डूप्ले ने निजाम पद के लिए मुजफ्फरजंग और नवाब पद के लिए चंदा साहब का साथ दिया।
- मुजफ्फरजंग, चंदा साहब और डूप्ले की संयुक्त सेनाओं ने 1749 ई. में कर्नाटक पर आक्रमण कर अम्बूर की लड़ाई में अनवरुद्दीन को पराजित कर मार डाला। अनवरुद्दीन का पुत्र एवं उत्तराधिकारी मुहम्मद अली ने भागकर त्रिचनापल्ली के दुर्ग में शरण ली।

Nitin-Gupta.com

GET IT ON Google Play Best Study PDF के लिए हमारी App को Download करें "GK Trick By Nitin Gupta"

- फ्रांसीसियों के बढ़ते हुए प्रभाव को देखकर अंग्रेज भी शांत नहीं रहे, उन्होंने निजाम पद के लिए नासिरजंग एवं कर्नाटक के नवाब पद के लिए मुहम्मद अली को समर्थन दिया।
- 1750 ई. में नासिरजंग अंग्रेजों के सहयोग से कर्नाटक पर आक्रमण किया और त्रिगुट मित्र शक्तियों को पराजित कर दिया लेकिन इसी समय नासिरजंग की सेना ने विद्रोह कर दिया और इसी विद्रोह में नासिरजंग की हत्या कर दी गई। इसका लाभ उठाकर फ्रांसीसियों ने (डूप्ले) मुजफ्फरजंग को हैदराबाद का निजाम घोषित कर दिया।
- 1752 ई. में क्लाइव के नेतृत्व में अर्काट पर आक्रमण किया और चंदा साहब के पुत्र राजा साहब के नेतृत्व वाली सेना को पराजित कर अर्काट पर अधिकार कर लिया। यह खबर सुनकर चंदा साहब त्रिचनापल्ली भाग गया लेकिन तंजौर के राजा ने उसकी हत्या कर दी।
- 1754 ई. में फ्रांसीसी सरकार ने डूप्ले को वापस बुला लिया और उसके स्थान पर **गोदेहो** को गवर्नर बनाकर भारत भेजा।
- गोदेहो आते ही युद्ध समाप्ति की घोषणा कर दी और अन्ततः 1755 ई. में पाण्डिचेरी की संधि द्वारा यह युद्ध समाप्त हो गया।
- पांडिचेरी की संधि द्वारा दोनों कम्पनियों ने भारतीय नरेशों के झगड़े में हस्तक्षेप न करने का वादा किया।

कर्नाटक का तृतीय युद्ध (1756-63 ई.)

- 1756 ई. में यूरोप में आस्ट्रिया एवं प्रशा के बीच सप्तवर्षीय युद्ध प्रारम्भ हुआ, इस युद्ध में एक बार फिर अंग्रेज और फ्रांसीसियों के बीच युद्ध हुआ।
- 1756 ई. में दोनों कम्पनियाँ एक दूसरे की बस्तियों पर आक्रमण प्रारम्भ कर दिया लेकिन वास्तविक युद्ध की शुरुआत तब हुई जब 1758 ई. में फ्रांसीसी सरकार ने काउंट-डी-लैली को कमांडर-इन-चीफ बनाकर भारत भेजा। इसके आने से युद्ध को गति मिली।
- इस युद्ध का सबसे महत्वपूर्ण युद्ध 1760 ई. में वांडीवास का युद्ध था जो आयरकूट के नेतृत्व वाली अंग्रेजी सेना और काउंट-डी-लैली की नेतृत्व वाली फ्रांसीसी सेना के बीच हुआ।
- इस युद्ध में अंग्रेज विजयी रहे, इसके बाद पाण्डिचेरी सहित लगभग सभी फ्रांसीसी बस्तियों का अंत हो गया।
- 1763 ई. में पेरिस की संधि द्वारा सप्तवर्षीय युद्ध समाप्त हुआ और इसी संधि द्वारा कर्नाटक का तृतीय युद्ध भी समाप्त हो गया।

कर्नाटक के युद्ध

युद्ध का नाम	वर्ष	कारण	समाप्ति	परिणाम
1.प्रथम कर्नाटक युद्ध	1746-48	आस्ट्रियाई उत्तराधिकार का प्रश्न एवं अंग्रेज एवं फ्रांसीसियों में अमेरिका में युद्ध	1748 में एक्स-ला-शैपेल की संधि द्वारा	अंग्रेज एवं कर्नाटक के नवाब की पराजय
2.द्वितीय कर्नाटक युद्ध	1748-54	दोनों कम्पनियों द्वारा भारतीय राजनीति में हस्तक्षेप	1755 में पांडिचेरी की संधि द्वारा	अंग्रेजों की अच्छी स्थिति
3.तृतीय कर्नाटक युद्ध	1756-63	यूरोप का सप्तवर्षीय युद्ध	1763 की पेरिस क़ी संधि द्वारा	अंग्रेजों की विजय

Nitin-Gupta.com

Best Study PDF के लिए हमारी App को Download करें "GK Trick By Nitin Gupta"

महत्वपूर्ण युद्ध			
युद्ध का नाम	वर्ष	किसके मध्य	परिणाम
1. सेंट थोम का युद्ध	1748 ई.	कर्नाटक के नवाब एवं फ्रांसीसियों के बीच	फ्रांसीसी विजय
2. अम्बूर का युद्ध	1749 ई.	डूप्ले, मुजफ्फरजंग एवं चंदा साहब के त्रिगुट एवं कर्नाटक के नवाब अनवरुद्दीन के मध्य	त्रिगुट विजय
3. अर्काट का युद्ध	1752 ई.	क्लाइव के नेतृत्व वाली अंग्रेजी सेना एवं चंदा साहब के पुत्र राजा साहब के बीच	अंग्रेज विजय
4. वांडीवास का युद्ध	1760 ई.	अंग्रेज एवं फ्रांसीसियों के बीच	अंग्रेज विजय

महत्वपूर्ण तथ्य

- सर्वप्रथम ब्रिटिश शासन ने 1593 में लीवेंट कम्पनी को स्थल मार्ग से भारत में व्यापार करने का पहला अधिकार प्रदान किया था। 31 दिसम्बर 1600 ई. को महारानी एलिजाबेथ प्रथम के अनुमोदन से "द गवर्नर एंड कम्पनी ऑफ मर्चेन्ट ऑफ लन्दन ट्रेडिंग इन टू द ईस्ट इंडीज" नाम से एक व्यापारिक संस्थान को सर्वप्रथम समुद्री मार्ग से व्यापार करने का अधिकार पत्र प्रदान किया गया।
- डचों ने पुर्तगालियों को पराजित कर उनसे कोच्चि प्राप्त किया था तथा 1663 ई. में डचों ने फोर्ट विलियम का निर्माण कराया था। 1814 ई. में कोच्चि को ब्रिटिश उपनिवेश में शामिल किया गया था।
- अंग्रेजी शासनकाल में बिहार अफीम उत्पादन हेतु प्रसिद्ध था। भारत में अफीम की तस्करी की जाती थी।

बंगाल में अंग्रेजी प्रभुसत्ता

- 1717 ई. में मुर्सिदकुली खाँ बंगाल का सूबेदार/नवाब बना। इसी समय से व्यवहारिक रूप में स्वतंत्र कार्य करने लगा। इसने ढाका के स्थान पर मुर्शिदाबाद को अपनी राजधानी बनाई। यह बंगाल का पहला नवाब था जिसने अंग्रेजों द्वारा दस्तक/अधिकार पत्र का दुरुपयोग किया।
- 1727 ई. में मुर्शिदकुली खाँ की मृत्यु के बाद शुजाउद्दौला बंगाल का नवाब बना। यह अत्यन्त न्यायप्रिय नवाब था जो 1732 ई. में अलीवर्दी खाँ को बिहार का उपसूबेदार नियुक्त किया।
- 1739 ई. में शुजाउद्दौला की मृत्यु के बाद इसका पुत्र सरफराज खाँ नवाब बना। इसके समय 1740 ई. में अलीवर्दी खाँ ने विद्रोह कर दिया और इसी विद्रोह में सरफराज खाँ मारा गया और अलीवर्दी खाँ बंगाल का नवाब बना।

अलीवर्दी खाँ (1740-56 ई.)

- इसने यूरोपियों की उपमा मधुमक्खियों से की है। इसके अनुसार–"यदि इन्हें न छेड़ा जाय तो यह शहद देगें, यदि इन्हें छेड़ा जाएगा तो ये काट-काटकर मार डालेंगे।"
- अलीवर्दी खाँ के कोई पुत्र न होने के कारण इसने अपनी सबसे छोटी पुत्री के पुत्र सिराजुद्दौला को अपना उत्तराधिकारी नियुक्त किया।

Nitin-Gupta.com

Best Study PDF के लिए हमारी App को Download करें "GK Trick By Nitin Gupta"

सिराजुद्दौला (1756-57 ई.)

- सिराजुद्दौला का अंग्रेजों के साथ संबंध बिगड़ गए क्योंकि अंग्रेजों ने नवाब के शत्रुओं को शरण दे रखी थी और नवाब के मना करने के बावजूद भी बस्तियों का दुर्गीकरण कर रहे थे।
- इसी के कारण सिराजुद्दौला रुष्ट हो गया और 15 जून, 1756 ई. को नवाब कलकत्ता स्थित फोर्टविलियम पर आक्रमण कर दिया, 5 दिनों के युद्ध के बाद 20 जून, 1756 ई. को फोर्टविलियम पर अधिकार कर लिया और अंग्रेज भागकर फुल्टा नामक टापू में शरण ली।

काल कोठरी की घटना (20 जून, 1756 ई.)

- इस घटना का उल्लेख एक अंग्रेज अधिकारी हॉलवेल ने किया है।
- हॉलवेल के अनुसार- 20 जून की रात्रि को नवाब ने 146 अंग्रेज बंदियों को एक कोठरी में बंद कर दिया। इसमें दूसरे दिन 123 अंग्रेजों की मृत्यु हो गयी और हॉलबेल सहित 23 अंग्रेज जीवित रहे।
- संभवतः यह हॉलवेल की मनगढ़ंत कहानी है क्योंकि इसकी पुष्टि अन्य स्रोतों से नहीं होती।

प्लासी का युद्ध (23 जून, 1757 ई.)

- प्लासी भागीरथी नदी के तट पर स्थित है, यह युद्ध क्लाइव की नेतृत्व वाली एक छोटी सी अंग्रेजी सेना और नवाब सिराजुद्दौला की 50 हजार सेना के साथ हुआ।
- युद्ध प्रारम्भ होते ही मीरजाफर अपनी सेना लेकर अलग हो गया अंततः इस युद्ध में नवाब सिराजुद्दौला पराजित होकर मुर्शिदाबाद भाग गया लेकिन नवाब को मुर्शिदाबाद में पकड़कर वध कर दिया गया।
- इसके बाद मीरजाफर बंगाल का नवाब बना और क्लाइव को व्यक्तिगत रूप से बहुत धन मिला। इस तरह प्लासी के युद्ध ने भारत में अंग्रेजी प्रभुसत्ता की नींव डाल दी।
- कम्पनी को 24 परगना जिले की दीवानी प्राप्त हुई।

क्लाइव का नवाब के विरुद्ध षड़यंत्र

- नवाब सिराजुद्दौला के प्रमुख अधिकारी उससे असंतुष्ट थे, इसका लाभ उठाकर क्लाइव ने नवाब के विरुद्ध एक षड़यंत्र रचा।
- इस षड़यंत्र में नवाब के मुख्य सेनापति मीरजाफर दीवान रायदुर्लभ और एक सैनिक अधिकारी यारलतीफ तथा बंगाल का एक व्यापारी जगत सेठ सम्मिलित थे।

मीरजाफर (1757-60 ई.)

- 1760 ई. में क्लाइव इंग्लैंड वापस चला गया, इसके स्थान पर बेन्सिटार्ट बंगाल का गवर्नर बनकर भारत आया।
- बेन्सिटार्ट ने नवाब बदलने का निश्चय किया, इसके लिए इसने मीरजाफर की दामाद मीरकासिम से समझौता किया।
- समझौते के अनुसार मीरकासिम को नवाब बनाया जाएगा बदले में मीरकासिम कम्पनी को वर्द्धवान, मिदनापुर और चटगाँव जिलों की दीवानी और अधिकारियों को धन देगा।
- इसके बाद वेन्सिटार्ट ने मीरजाफर के सामने यह प्रस्ताव रखा कि वह मीरकासिम को नायब सूबेदार नियुक्त कर दे और प्रशासन के सारे अधिकार सौंप दे।
- इससे असंतुष्ट होकर मीरजाफर ने नवाब पद से इस्तीफा दे दिया और मीरकासिम नवाब बन गया।

मीरकासिम (1760-63 ई.)

- मीरकासिम ने मुर्शिदाबाद के स्थान पर मुंगेर को अपनी राजधानी बनाई। इसने मुंगेर में तोपखाना एवं बंदूक निर्माण करने का कारखाना स्थापित किया।
- इसने अपनी सेना को यूरोपीय ढंग से प्रशिक्षित करने के लिए एक जर्मन अधिकारी बाल्टर रीनहार्ड (समरु) को नियुक्त किया।

Nitin-Gupta.com

GET IT ON Google Play Best Study PDF के लिए हमारी App को Download करें "GK Trick By Nitin Gupta"

- 1763 ई. में मीरकासिम ने संपूर्ण बंगाल को व्यापार कर से मुक्त कर दिया, इस घटना से अंग्रेज आग बबूला हो गए और अंग्रेजों ने मीरजाफर को पुनः नवाब घोषित कर मीरकासिम के विरुद्ध युद्ध छेड़ दिया।
- 1765 ई. में क्लाइव पुनः भारत आया और इसने बंगाल के नवाब, मुगल सम्राट व अवध के नवाब से अलग-अलग संधियाँ की।
- सर्वप्रथम क्लाइव ने बंगाल के नवाब नजमुद्दौला से संधि की। संधि के अनुसार- प्रशासन के सारे अधिकार कम्पनी के हाथों में होगा, नवाब को प्रतिवर्ष 53 लाख रुपए सालाना कम्पनी देगी। इस प्रकार बंगाल में द्वैध शासन लागू हो गया।

बक्सर का युद्ध (23 अक्टूबर, 1764 ई.)

- मीरकासिम अंग्रेजों से परास्त होकर शुजाउद्दौला के पास पहुँचा, इस समय वहाँ मुगल सम्राट शाहआलम द्वितीय भी उपस्थित थे, इन तीनों ने अंग्रेजों के विरुद्ध संयुक्त मोर्चे का निर्माण किया और तीनों अपनी सेना लेकर बक्सर पहुँचे और अंग्रेजों से युद्ध किया।
- अंग्रेजी सेना का नेतृत्व हेक्टर मुनरो ने किया।
- इस युद्ध में संयुक्त मोर्चे की शक्तियाँ पराजित हुई और मीरकासिम युद्ध भूमि से भाग गया जबकि शुजाउद्दौला और शाहआलम द्वितीय ने आत्मसमर्पण कर दिया।

इलाहाबाद की प्रथम संधि (12 अगस्त 1765 ई.)

- इलाहाबाद की प्रथम संधि मुगल सम्राट शाहआलम-II से हुई, इस संधि की मुख्य शर्तें इस प्रकार हैं—
  1. कम्पनी अवध के नवाब से इलाहाबाद एवं कड़ा दो जिले लेकर मुगल सम्राट को देगें।
  2. कम्पनी मुगल सम्राट को 26 लाख रुपए पेंशन के रूप में देगी।
  3. मुगल सम्राट बंगाल, बिहार व उड़ीसा की दीवानी कम्पनी को प्रदान करेगा।

इलाहाबाद की दूसरी संधि (16 अगस्त, 1765 ई.)

- यह संधि अवध के नवाब शुजाउद्दौला से हुई, इस संधि की मुख्य शर्तें इस प्रकार थी—
  1. कम्पनी अवध के नवाब से इलाहाबाद एवं कड़ा का जिला प्राप्त करके मुगल सम्राट को दे दिया।
  2. अवध के नवाब पर हर्जाने के रूप में 50 लाख रुपए एवं चुनार का किला कम्पनी प्राप्त करेगी।
  3. कम्पनी को अवध में कर मुक्त व्यापार करने का अधिकार होगा।
  4. अवध की सुरक्षा के लिए अवध में एक अंग्रेजी सेना रखी जाएगी जिसका खर्च अवध का नवाब देगा।
- 1765-1772 ई. तक बंगाल में द्वैध शासन चलता रहा। 1772 में वारेन हेस्टिंग्स बंगाल का गवर्नर बनकर आया, इसमें द्वैध शासन को समाप्त कर बंगाल में कंपनी का शासन स्थापित कर दिया।

आंग्ल-मैसूर संघर्ष

- 18वीं शताब्दी के मध्य में मैसूर में चिक्का कृष्णराज नामक शासक शासन कर रहा था लेकिन वास्तविक शक्ति नंदराज के हाथों में थी।
- इसी समय मैसूर की सेना में हैदर अली नामक एक व्यक्ति सिपाही के रूप में भर्ती हुआ जो एक दिन मैसूर का शासक बना।

हैदर अली

- हैदर अली का जन्म 1721 ई. में बुडिकोटा नामक स्थान पर हुआ था, इसके पिता फतेहमुहम्मद मैसूर की सेना में एक सिपाही थे जो एक युद्ध में मारे गए। बड़ा होने पर हैदर अली मैसूर की सेना में भर्ती हुआ।
- हैदर अपने गुण और योग्यता के कारण 1755 ई. में डिंडीगुल का फौजदार नियुक्त हुआ। डिंडीगुल के फौजदार के रूप में फ्रांसीसियों के सहयोग से एक आधुनिक शस्त्रागार की स्थापना किया।

Nitin-Gupta.com

GET IT ON Google Play Best Study PDF के लिए हमारी App को Download करें "GK Trick By Nitin Gupta"

- 1759 ई. में मराठों ने मैसूर पर आक्रमण किया, हैदर के नेतृत्व में मैसूर की सेना मराठों को पराजित कर मैसूर से बाहर खदेड़ दिया।
- 1760 ई. में चिक्का कृष्णराज की मृत्यु के बाद हैदर अली मैसूर का स्वतंत्र शासक बन गया।
- अंग्रेज प्रारम्भ से ही हैदर को अपना शत्रु मानते थे क्योंकि हैदर ने अपने उत्कर्ष में फ्रांसीसियों की मदद ली थी।

प्रथम आंग्ल-मैसूर युद्ध (1767-69 ई.)

- इस युद्ध का मुख्य कारण मद्रास की अंग्रेजी सरकार तथा मैसूर के बीच कर्नाटक का सीमा विवाद था।
- सर्वप्रथम 1767 ई. में जोसेफ स्मिथ के नेतृत्व में अंग्रेजी सेना ने मैसूर में आक्रमण किया। प्रारम्भ में हैदर पराजित हुआ लेकिन बाद में इसने अंग्रेजी सेना को पराजित कर मद्रास तक पीछा करते हुए आया अन्ततः अंग्रेजों ने संधि की याचना की परिणामतः मद्रास की संधि हुई।

मद्रास की संधि (1769 ई.)

- यह संधि हैदर अली और मद्रास की अंग्रेजी सरकार के बीच हुयी। इसकी शर्तें निम्न थीं—
  1. एक दूसरे के जीते हुए क्षेत्र एक दूसरे को वापस किए जाएंगे।
  2. हैदर अली अंग्रेज बंदियों को रिहा करेगा।
  3. अंग्रेज हैदर अली को युद्ध का हर्जाना देंगे।
- इस युद्ध में अंग्रेजों की अजेयता को समाप्त कर दिया।

द्वितीय आंग्ल-मैसूर युद्ध (1780-84 ई.)

- इस युद्ध का मुख्य कारण अंग्रेजों ने फ्रांसीसी बंदरगाह माही पर अधिकार कर लिया जो हैदर के राज्य के अंतर्गत था।
- इस घटना से हैदर अली अंग्रेजों से नाराज हो गया और अंग्रेजों के मित्र राज्य कर्नाटक पर आक्रमण कर दिया।
- कर्नाटक के नवाब मुहम्मद अली हैदर के विरुद्ध अंग्रेज से सहायता मांगी। अंग्रेजों ने दो सेनापतियों के नेतृत्व में दो अलग-अलग सेनाएँ कर्नाटक भेजी। रास्ते में हैदर के पुत्र टीपू ने हेक्टर मुनरो की नेतृत्व वाली अंग्रेजी सेना को रोककर युद्ध करने लगा जिससे एक ही सेना कर्नाटक पहुँच सकी।
- परिणामस्वरूप अरन्दी में हैदर ने कर्नल बेली के नेतृत्व वाली अंग्रेजी सेना को पराजित किया।
- 1782 ई. में अंग्रेजों ने आयरकूट के नेतृत्व में एक सेना मैसूर पर आक्रमण किया और पोर्टोनोवा के युद्ध में हैदर को पराजित किया। युद्ध में घायल होने के बाद हैदर की मृत्यु हो गयी।
- हैदर की मृत्यु के बाद उसका पुत्र टीपू मैसूर का शासक बना। इसने युद्ध को जारी रखा और 1783 ई. में इसने ब्रिग्रेडियर मैथ्यूज के नेतृत्व में अंग्रेजी सेना को पराजित किया लेकिन इसी समय यूरोप में एक संधि के कारण फ्रांसीसियों ने टीपू का साथ छोड़ दिया और टीपू ने अंग्रेजों से एक संधि कर लिया।

मंगलौर की संधि (1784 ई.)

- इस संधि के द्वारा द्वितीय आंग्ल-मैसूर युद्ध समाप्त हो गया।
- इस संधि के द्वारा एक-दूसरे के जीते हुए क्षेत्र एक-दूसरे को वापस कर दिए गए। टीपू ने अंग्रेज बंदियों को रिहा कर दिया।

तृतीय आंग्ल-मैसूर युद्ध (1790-92 ई.)

- इस युद्ध का तात्कालिक कारण अइकोटा और क्रेंगानूर के दो दुर्ग डचों से टीपू खरीदना चाहता था लेकिन अंग्रेजों के मित्रराज्य त्रावणकोर ने खरीद लिया। इस कार्य से टीपू नाराज होकर त्रावणकोर पर आक्रमण कर दिया।
- इसी समय गवर्नर जनरल लार्ड कार्नवालिस ने मराठा तथा निजाम से संधि करके सम्मिलित रूप से मैसूर पर

Nitin-Gupta.com

GET IT ON Google Play Best Study PDF के लिए हमारी App को Download करें "GK Trick By Nitin Gupta"

आक्रमण कर दिया।

- कार्नवालिस मैसूर के अनेक क्षेत्रों को जीतकर श्रीरंगपट्टनम को घेर लिया। बाध्य होकर टीपू ने अंग्रेजों से संधि कर ली।

श्रीरंगपट्टनम की संधि (1792 ई.)

- इस संधि के द्वारा तृतीय आंग्ल-मैसूर युद्ध समाप्त हो गया।
- इस संधि के द्वारा टीपू का आधा राज्य ले लिया गया जिसे अंग्रेज, मराठे व निजाम आपस में बाँट लिए।
- टीपू पर 3 करोड़ का हर्जाना लगाया गया, टीपू के पास धन न होने के कारण उसके दो पुत्रों को कार्नवालिस के पास बंधक के रूप में रख दिया और टीपू की सेना को भी सीमित कर दिया गया।

चतुर्थ आंग्ल-मैसूर युद्ध (1799 ई.)

- इस युद्ध का कारण अंग्रेज गवर्नर जनरल लार्ड वेलेजली टीपू के पास सहायक संधि स्वीकार करने का प्रस्ताव भेजा जिसे टीपू ने अस्वीकार कर दिया। परिणामतः 1799 ई. में लार्ड वेलेजली ने मैसूर पर आक्रमण कर दिया।
- वेलेजली ने टीपू के अनेक क्षेत्रों को विजित करते हुए श्रीरंगपट्टनम के दुर्ग को घेर लिया। टीपू अंग्रेजों से युद्ध करते हुए दुर्ग के द्वार पर ही मारा गया और मैसूर अंग्रेजों के नियंत्रण में आ गया।
- अंग्रेजों ने बोद्यार वंश के दो वर्षीय बालक कृष्णराज को मैसूर का शासक घोषित किया और इसे सहायक संधि स्वीकार कराकर मैसूर पर अपना प्रभाव स्थापित कर दिया।
- 1834 ई. में विलियम बैंटिक ने मैसूर को जीतकर अंग्रेजी साम्राज्य में मिला लिया।

आँग्ल-मैसूर युद्ध – एक दृष्टि में

युद्ध का नाम	वर्ष	कारण	समाप्ति	परिणाम
1. प्रथम आँग्ल-मैसूर युद्ध	1767-69 ई.	अंग्रेजों एवं हैदर के बीच कर्नाटक का सीमा विवाद	मद्रास की संधि 1769 में	अंग्रेज पराजित
2. द्वितीय आंग्ल-मैसूर युद्ध	1780-84 ई.	अंग्रेजों द्वारा फ्रांसीसी बन्दरगाह माही पर अधिकार करना	मंगलौर की संधि 1784 में	अनिर्णित
3. तृतीय आंग्ल-मैसूर युद्ध	1790-92 ई.	टीपू द्वारा त्रावणकोर पर आक्रमण	श्रीरंगपट्टनम की संधि 1792	टीपू की पराजय
4. चतुर्थ आंग्ल-मैसूर युद्ध	1799 ई.	टीपू द्वारा सहायक संधि स्वीकार न किया जाना	टीपू का वध	टीपू की पराजय

टीपू सुल्तान (1782-1799 ई.)

- हैदर अली के मृत्यु के बाद 1782 में टीपू सुल्तान बना।
- टीपू ने 1787 में बादशाह की उपाधि धारण की और अपने नाम के सिक्के चलाये। इसने वर्ष/महीनों के हिन्दू नामों के स्थान पर अरबी नामों का प्रयोग किया तथा एक नये पंचांग (कलेंडर) का प्रचलन किया।
- फ्रांसीसी क्रांति के फलस्वरूप जब कुछ फ्रांसीसी सैनिकों ने श्रीरंगपट्टनम में जैकोबिन क्लब बनाने का प्रस्ताव किया तो इसने सहर्ष स्वीकार किया।
- यह स्वयं जैकोबिन क्लब का सदस्य बना और अपने आपको नागरिक टीपू कहलाने लगा।
- टीपू सुल्तान धर्म सहिष्णु शासक था। इसने शृंगेरी के मंदिर की मरम्मत एवं शारदा देवी की मूर्ति स्थापना के लिए धन प्रदान किया।

Nitin-Gupta.com

Best Study PDF के लिए हमारी App को Download करें "GK Trick By Nitin Gupta"

आंग्ल-मराठा युद्ध

- पेशवा बाला जी बाजीराव की मृत्यु के बाद मराठा राज्य आंतरिक षड़यंत्रों का केन्द्र बनने लगा।
- पेशवा माधवराज के समय में उसके चाचा रघुनाथराव मराठा साम्राज्य के विभाजन की माँग की जिसे पेशवा माधवराव ने ठुकरा दिया।
- नाना फड़नवीस के नेतृत्व में मराठा सरदारों ने अल्पायु माधवराव नारायण को पेशवा बना दिया और प्रमुख मराठा सरदारों को मिलाकर एक "बाराभाई परिषद" का गठन करके प्रशासन चलाना प्रारम्भ कर दिया।
- प्रमुख मराठा सरदारों की इस चुनौती का सामना करने में अपने को असमर्थ पाकर रघुनाथराव उर्फ राघोबा पूना से भागने के लिए मजबूर हो गया।
- रघुनाथ राव बम्बई जाकर नाना फड़नवीस (पूना दरबार) के विरुद्ध बम्बई की अंग्रेजी सरकार से सहायता माँगी। इसके इस दुर्भाग्यपूर्ण प्रयास ने प्रथम आंग्ल-मराठा युद्ध की पृष्ठभूमि तैयार कर दी।
- बम्बई के अंग्रेजी सरकार रघुनाथराव को पेशवा बनाने के लिए सूरत की संधि की।

प्रथम आँग्ल-मराठा युद्ध (1775-1782 ई.)

- सूरत की संधि के अनुसार कर्नल किटिंग के नेतृत्व में एक अंग्रेजी सेना सूरत पहुँची।
- 18 मई 1775 ई. को आरस के मैदान में अंग्रेजों एवं मराठों के बीच भीषण युद्ध हुआ, जिसमें मराठे पराजित हुए लेकिन अंग्रेजों का मराठा क्षेत्र पर अधिकार नहीं हो सका।
- 1778 ई. में बम्बई की अंग्रेजी सरकार ने पुनः मराठों से युद्ध प्रारम्भ कर दिया। वारेन हेस्टिंग्स ने भी बंगाल से एक सेना इनकी सहायता के लिए भेज दिया।
- तेलगाँव के युद्ध में बम्बई की अंग्रेजी सेना मराठों से पराजित हो गई।
- परिणामस्वरूप 1779 में बड़गाँव की संधि हुई।

सालबाई की संधि (17 मई 1782 ई.)

- यह संधि पूना दरबार एवं अंग्रेजों के बीच हुई।
- इसके द्वारा प्रथम आंग्ल-मराठा युद्ध समाप्त हुआ।
- मुख्य शर्तें इस प्रकार थीं—
  1. सेलसेट द्वीप एवं थाना का दुर्ग अंग्रेजों को दिया जायेगा।
  2. अंग्रेज रघुनाथ राव का साथ छोड़ेंगे।
  3. रघुनाथ राव पर खर्च की गई राशि 12 लाख रुपये पूना दरबार अंग्रेजों को देगा।
  4. राघोबा को साढ़े तीन लाख रुपये वार्षिक पेंशन दी जायेगी।
  5. बम्बई एवं दक्षिण में एक दूसरे के जीते हुए क्षेत्र एक दूसरे को वापस किये जायेंगे।
- इस संधि के द्वारा 20 वर्ष की शांति रही।

द्वितीय आंग्ल-मराठा युद्ध (1803-1805 ई.)

- 1800 ई. में नाना फड़नवीस की मृत्यु के बाद पूना दरबार षडयंत्रों का केन्द्र बन गया।
- पेशवा बाजीराव II एवं दौलतराव सिंधिया ने होल्कर के विरुद्ध संयुक्त मोर्चा बनाकर उसे नीचा दिखाना चाहा।
- 1802 में पूना के निकट हुए युद्ध में होल्कर ने संयुक्त सेना को पराजित कर दिया और रघुनाथ राव के दत्तक पुत्र अमृतराव के बेटे विनायक राव को पेशवा घोषित किया।
- परिणामस्वरूप पेशवा बाजीराव II अंग्रेजों के पास पहुँचा और सहायता की माँग की परिणामस्वरूप बेसीन की संधि हुई।
- दौलत राव सिंधिया अप्पाजी भोंसले एवं यशवंत राव होल्कर ने पेशवा का विरोध किया जिसके कारण द्वितीय आंग्ल-मराठा युद्ध प्रारम्भ हो गया।

Nitin-Gupta.com

GET IT ON Google Play Best Study PDF के लिए हमारी App को Download करें "GK Trick By Nitin Gupta"

- लार्ड वेलेजली ने सर्वप्रथम सिंधिया एवं भोंसले की सेना को पराजित किया। दोनों ने अंग्रेजों से अलग-अलग संधि कर लिया।
- 1805 ई. में अंग्रेजों ने यशवंत राव होल्कर को भी पराजित कर दिया, परिणामस्वरूप इसने भी अंग्रेजों से संधि कर लिया।

तृतीय आँग्ल-मराठा युद्ध (1817-18 ई.)

- यह युद्ध लार्ड हेस्टिंग्स के शासनकाल में लड़ा गया।
- अंग्रेजों ने 1817 ई. में सिंधिया से ग्वालियर की संधि की जिसके अनुसार सिंधिया पिंडारियों के दमन में अंग्रेजों का सहयोग करेगा और चम्बल नदी के दक्षिण-पश्चिम राज्यों से अपना अधिकार समाप्त करेगा।
- जून 1817 में अंग्रेजों ने पेशवा से पूना की संधि की जिसके द्वारा पेशवा ने मराठों की प्रधानता त्याग दी। इससे पहले भोंसले ने भी अंग्रेजों की अधीनता स्वीकार कर लिया था।
- 1817 में ही संधि का उल्लंघन करके पेशवा भोंसले एवं होल्कर ने अंग्रेजों के विरुद्ध युद्ध की घोषणा की।
- परिणामस्वरूप किर्की में पेशवा, सीताबर्डी में भोंसले तथा महीदपुर में होल्कर अंग्रेजों से पराजित हुए।
- जनवरी 1818 में होल्कर अंग्रेजों से मंदसौर की संधि करके राजपूत राज्यों से अपने अधिकार वापस ले लिये।
- पेशवा बाजीराव II कोरेगाँव एवं अष्टी के युद्ध में पराजित होने के बाद आत्मसमर्पण कर दिया।
- अंग्रेजों ने पेशवा का पद समाप्त कर पेशवा के राज्य को अंग्रेजी राज्य में मिला लिया।
- पेशवा को 4 लाख रुपये वार्षिक पेंशन देकर कानपुर के निकट बिठूर में रहने की आज्ञा दी गई। यहीं 1853 में पेशवा बाजीराव II की मृत्यु हो गई।

आँग्ल-मराठा युद्ध : एक नजर में

युद्ध	समय	संधि जिससे युद्ध प्रारम्भ हुआ	संधि जिससे युद्ध समाप्त हुआ	पेशवा	गवर्नर जनरल
प्रथम आंग्ल-मराठा युद्ध	1775-82 ई.	सूरत की संधि 1775	सालबाई की संधि 1782	माधवराव नारायण	वारेन हेस्टिंग्स
द्वितीय आंग्ल-मराठा युद्ध	1803-05 ई.	बेसीन की संधि 1802 ई.	राजघाट की संधि 1805	बाजीराव II	जार्जबालों एवं वेलेजली
तृतीय आंग्ल-मराठा युद्ध	1817-18 ई.	—	—	बाजीराव II	लार्ड हेस्टिंग्स

सिक्ख राज्य एवं आँग्ल-सिक्ख युद्ध

- सिक्खों का प्रथम राजनीतिक नेता बँदा बहादुर था। 1716 ई. में इसने मुगल सेना के सामने आत्मसमर्पण किया लेकिन इसका वध कर दिया गया।
- बँदा बहादुर के बाद सिक्ख नेतृत्वविहीन हो गये।
- इसी समय से सिक्खों ने शर्बत खालसा एवं गुरुमत्ता की प्रथाओं को प्रारम्भ किया।
- वैशाखी एवं दीपावली पर वर्ष में दो बार सिक्खों ने अपनी सभायें करनी प्रारम्भ की, ये सभायें ही शर्बत खालसा कहलाती थीं। इन सभाओं में जो निर्णय होते थे उसे गुरु का मत मानकर गुरमत्ता पुकारा गया।
- 1748 में कपूर सिंह ने दल खालसा संगठन की स्थापना की।

Nitin-Gupta.com

Best Study PDF के लिए हमारी App को Download करें "GK Trick By Nitin Gupta"

- दल खालसा में 1753 ई. में प्रारम्भ हुई राखी प्रथा ने इसकी वित्तीय स्थिति को मजबूत किया।
- राखी प्रथा के अन्तर्गत प्रत्येक गाँव से उपज का 1/5 भाग लेकर दल खालसा उसकी सुरक्षा का दायित्व स्वीकार करता था। यही तथ्य सिक्खों के राजनीतिक अधिकारों का आधार बना।
- सिक्खों ने अपने छोटे राज्यों का निर्माण किया जिन्हें मिस्ल पुकारा जाता था।

रणजीत सिंह

- पंजाब में सिक्ख राज्य के वास्तविक संस्थापक राजा रणजीत सिंह थे।
- ये सिक्खों के पहले सार्वभौम शासक हुए जिन्होंने पंजाब के एक बड़े क्षेत्र पर अधिकार करके मुल्तान पेशावर कश्मीर एवं लद्दाख तक अपने राज्य का विस्तार किया।

रणजीत सिंह की उपलब्धियाँ

जन्म — 1780 ई.

पिता — महासिंह

मिस्ल — शुकरचकिया

1797 — काबुल के शासक जमानशाह का पंजाब पर आक्रमण

— रणजीत सिंह के नेतृत्व में सिक्ख सेना ने जमानशाह को पराजित किया।

- अब रणजीत सिंह सिक्खों के नेता बन गये।
- रणजीत सिंह ने जमानशाह की 12 तोपें जो चिनाब नदी में गिर गई थीं उन्हें निकलवा कर वापस भिजवाया।
- इस सेवा के बदले में जमानशाह ने रणजीत सिंह को लाहौर पर अधिकार करने की अनुमति दे दी।
- 1799 में लाहौर पर अधिकार कर लिया और लाहौर को अपनी राजधानी बनाई।
- 1806 में रणजीत सिंह एवं जनरल लेक के बीच संधि हुई। शर्तें इस प्रकार हैं—
  1. रणजीत सिंह होल्कर को अमृतसर छोड़ने को कहे।
  2. अंग्रेज पंजाब से अपनी सेना हटायेंगे।
  3. रणजीत सिंह के मित्रवत बने रहने पर अंग्रेज उसके क्षेत्र पर आक्रमण नहीं करेंगे।

रणजीत सिंह का साम्राज्य विस्तार

- 1809 ई. में रणजीत ने कांगड़ा विजय की।
- 1813 ई. में अफगान अमीर शाहशुजा से कश्मीर को अपने संरक्षण में ले लिया तथा शाहशुजा से कोहिनूर हीरा भी प्राप्त किया।
- 1813 ई. में अटक को जीत लिया तथा 1818 ई. में मुल्तान विजय की।
- 1819 ई. में अफगान गवर्नर जब्बर खाँ को पराजित कर कश्मीर पर अधिकार कर लिया।
- 1820-21 ई. में डेरा गाजी खाँ, डेरा स्माइल खाँ तथा लेह को जीत लिया।
- 1832 में पेशावर की विजय की।
- 1833-34 में मुजारी कबीले को पराजित कर शिकारपुर पर अधिकार कर लिया। लेकिन इसे अंग्रेजों को दे दिया।
- 1839 ई. में रणजीत सिंह की मृत्यु हो गयी।

रणजीत सिंह के उत्तराधिकारी-1839-49 ई.

1. खड़ग सिंह	रणजीत सिंह का पुत्र	1839-40
2. शेर सिंह	रणजीत सिंह का पुत्र	1841-43
3. दिलीप सिंह (अल्पवयस्क थे)	रणजीत सिंह के पुत्र	1843-49

आँग्ल-सिक्ख युद्ध

- दिलीप सिंह के शासन काल की सबसे महत्वपूर्ण घटना आंग्ल-सिक्ख युद्ध था।

Nitin-Gupta.com

GET IT ON Google Play Best Study PDF के लिए हमारी App को Download करें "GK Trick By Nitin Gupta"

- अल्पवयस्क दिलीप सिंह की माँ रानी जिन्दन संरक्षिका के रूप में शासन कर रही थीं।
- इस समय खालसा सेना काफी शक्तिशाली हो गई थी जिस कारण लाहौर दरबार उनसे डरने लगा था।
- सेना को नियंत्रित करने के लिए रानी जिन्दन एवं उनके सलाहकारों ने खालसा सेना को अंग्रेजों के साथ युद्ध में झोंक दिया।
- यह सोचकर की यदि खालसा सेना विजयी हुई तो क्षेत्र विस्तार होगा और यदि पराजित हुई तो राजनीति में दखल देना छोड़ देगी।

प्रथम आँग्ल-सिक्ख युद्ध (1845-46)

- इस युद्ध के अन्तर्गत चार लड़ाइयाँ लड़ी गई—
  1. मुदकी का युद्ध 1845 ई.
  2. फिरोजपुर का युद्ध 1845 ई.
  3. अलीवाल का युद्ध 1846 ई.
  4. सुबराँव का युद्ध 1846 ई.
- इन चारों युद्धों में सिक्ख सेना पराजित हुई।

लाहौर की संधि (9 मार्च 1846 ई.)

- यह संधि अंग्रेजों एवं दिलीप सिंह के बीच हुई। शर्तें—
  1. दिलीप सिंह को रानी जिन्दन की संरक्षता में राजा स्वीकार किया गया।
  2. सतलज के पूरब के प्रदेश व जालंधर के द्वाब क्षेत्र पर अंग्रेजों का आधिपत्य होगा।
  3. लाहौर दरबार पर डेढ़ करोड़ का जुर्माना लगाया गया।
  4. 50 लाख रुपये नगद एवं एक करोड़ के बदले कश्मीर गुलाब सिंह के हाथों बेच दिया गया।
  5. सिक्ख सैनिकों की संख्या कम एवं निश्चित कर दी गई।
  6. लाहौर में एक अंग्रेज रेजीडेंट की नियुक्ति की गई।
  7. अंग्रेजों के परामर्श के बिना किसी विदेशी को सेना में नहीं रखा जायेगा।

भैरववाल की संधि (16 दिसम्बर, 1846 ई.)

- 1846 में सिक्खों ने पुनः विद्रोह कर दिया, अंग्रेजी सेना ने इस विद्रोह का दमन करके दिलीप सिंह से पुनः एक संधि की। शर्तें—
  1. रानी जिन्दन की संरक्षता समाप्त कर दी गई और उन्हें डेढ़ लाख रुपये वार्षिक पेंशन देने का प्रावधान किया गया।
  2. अंग्रेज रेजीडेंट की अध्यक्षता में 8 सिक्ख सरदारों की एक परिषद बनाई गई जो शासन की देखभाल करेगी।
  3. लाहौर में एक अंग्रेजी सेना रखी जायेगी जिसका खर्च दिलीप सिंह देंगे।

द्वितीय आँग्ल सिक्ख युद्ध (1848-49 ई.)

- इसके अन्तर्गत तीन लड़ाईयाँ लड़ी गईं—
  1. रामनगर का युद्ध 1848 ई. अंग्रेज विजयी हुए
  2. चिलियाँवाला का युद्ध 1849 ई. इसमें सिक्ख विजयी हुए
  3. गुजरात नगर का युद्ध 1849 ई. अंग्रेज विजयी हुए
- सिक्ख सेना ने आत्मसमर्पण कर दिया।
- अंग्रेजों का सेनापति ह्यूगौफ था।

- 1849 ई. में सिक्ख राज्य को अंग्रेजी राज्य में मिला लिया गया।
- दिलीप सिंह को पेंशन देकर रानी जिन्दन के साथ इंग्लैंड भेज दिया गया।

कम्पनी शासन के अंतर्गत प्रशासनिक व्यवस्था

भू-राजस्व व्यवस्था

- 1757 के प्लासी के युद्ध के बाद अंग्रेजों द्वारा भू-राजस्व वसूल करना प्रारम्भ किया गया।

Nitin-Gupta.com

GET IT ON Google Play Best Study PDF के लिए हमारी App को Download करें "GK Trick By Nitin Gupta"

- सर्वप्रथम 1772 ई. में वारेन हेस्टिंग्स ने बंगाल में द्वैधशासन समाप्त कर भू-राजस्व वसूल करना शुरु किया।
- 1772 ई. में वारेन हेस्टिंग्स ने 'पंचवर्षीय बंदोबस्त' लागू किया जिसमें प्रत्येक क्षेत्र का राजस्व पाँच वर्ष के लिए निर्धारित किया गया और 1777 ई. में यह व्यवस्था समाप्त हो गयी।
- 1777 ई. में जब यह व्यवस्था समाप्त हुई तो उसकी जगह इसने 'एक वर्षीय बंदोबस्त' लागू किया। इस व्यवस्था में प्रतिवर्ष भू-राजस्व निर्धारित होता था जो 1789-90 ई. तक चलती रही।

ब्रिटिश शासन के अन्तर्गत भूमि बन्दोबस्त

	बन्दोबस्त	प्रारम्भ	क्षेत्र	प्रतिशत
1.	स्थायी बन्दोबस्त	1793 ई.	बंगाल, बिहार, उड़ीसा, उ. कर्नाटक, वाराणसी	19%
2.	रैय्यतवाड़ी बन्दोबस्त	1792 ई.	मद्रास, बम्बई, पूर्वी बंगाल, असम, कुर्ग क्षेत्र	51%
3.	महड़वाड़ी बन्दोबस्त	1822 ई.	संयुक्त प्रांत, मध्य प्रांत एवं पंजाब	30%

स्थाई बंदोबस्त व्यवस्था

- स्थाई बंदोबस्त व्यवस्था का जनक **कार्नवालिस** था।
- लार्ड कार्नवालिस ने 1790 ई. में 10 वर्षीय बंदोबस्त लागू किया। निदेशक मंडल की अनुमति मिलने के बाद **1793 ई.** में स्थाई बंदोबस्त व्यवस्था में परिवर्तित हो गयी, इसी को **जमींदारी व्यवस्था** व **इस्तमरारी व्यवस्था** भी कहा जाता है।
- इस व्यवस्था में जमींदार को भूमि का स्वामी माना गया अतः जमींदार भी कर देने के लिए उत्तरदायी होगा।
- 1790 ई. में जिस क्षेत्र की इकाई से सरकार को कर प्राप्त होता था उस कर का 10/11 भाग जमींदार को देना होता था। जमींदारों को किसानों के साथ संबंध स्थापित करने के लिए स्वतंत्र कर दिया गया।
- यह व्यवस्था बंगाल, बिहार, उड़ीसा तथा बाद में वाराणसी क्षेत्र व उत्तरी कर्नाटक में लागू किया गया। यह पूरे ब्रिटिश भारत के 19% भाग पर लागू थी।
- इस व्यवस्था में जमींदारों ने किसानों का अत्यधिक शोषण किया। स्थाई बंदोबस्त वाले क्षेत्रों को लगभग 4 करोड़ रुपए वार्षिक कर प्राप्त होता था जबकि जमींदार किसानों से 60 करोड़ वसूल करता था। इसी को **दूरवासी व्यवस्था** भी कहा जाता था जो उपजमींदार के द्वारा अतिरिक्त शोषण किया गया।

रैय्यतबाड़ी बंदोबस्त व्यवस्था

- इस व्यवस्था में सरकार ने सीधे किसानों के साथ राजस्व संबंध निर्धारित किया।
- इस व्यवस्था के जनक **कर्नल रीड** एवं **थामस मुनरो** थे।
- इस व्यवस्था का मुख्य उद्देश्य सरकारी आय में वृद्धि करना तथा कृषक हितों में वृद्धि करना था।
- सर्वप्रथम 1792 ई. में कर्नल रीड एवं थामस मुनरो ने इस व्यवस्था को दक्षिण भारत में बारा महल जिले में लागू की।
- 1820 ई. में यह व्यवस्था पूरे मद्रास प्रांत में लागू कर दी गयी और थामस मुनरो को इस व्यवस्था का गवर्नर नियुक्त किया गया।
- 1825 ई. में यह व्यवस्था बम्बई प्रांत में लागू हो गयी।
- यह व्यवस्था मद्रास, बम्बई, पूर्वी बंगाल, असम एवं कुर्ग क्षेत्र में लागू हुयी। यह पूरे ब्रिटिश भारत के 51% भू-भाग पर लागू हुई।

Nitin-Gupta.com

GET IT ON Google Play Best Study PDF के लिए हमारी App को Download करें "GK Trick By Nitin Gupta"

- इस व्यवस्था में सरकार ने उपज के मूल्य का 1/2 भाग कर निर्धारित किया। सरकार व्यवहारिक रूप में आधे से अधिक कर वसूल करते थे।
- इस व्यवस्था में किसान को भूमि का स्वामी माना गया और उसे भूमि को बेचने, गिरवी रखने का अधिकार दिया गया।
- इस व्यवस्था में हर 30 वर्ष बाद भूमि सर्वेक्षण की व्यवस्था या पुनर्मूल्यांकन की व्यवस्था की गई।

महलवाड़ी बंदोबस्त व्यवस्था

- इस समय महल से तात्पर्य गाँव अथवा जागीर से था। इस व्यवस्था में सरकार गाँव एवं जागीर के साथ राजस्व संबंध स्थापित किया।
- इस व्यवस्था के जनक हॉल्ट मैकेंजी थे, 1822 ई. में यह व्यवस्था कानूनी रूप से शुरु हुई।
- इस व्यवस्था में सरकार ने प्रत्येक गाँव के उपज के मूल्य का 50% कर निर्धारित किया।
- इस व्यवस्था में भी किसानों को भूमि का स्वामी माना गया, उसे भूमि को बेचने अथवा गिरवी रखने का अधिकार प्राप्त था।
- इसी व्यवस्था में सर्वप्रथम मानचित्रों तथा रजिस्टरों का प्रयोग किया गया।
- यह व्यवस्था संयुक्त प्रांत, मध्य प्रांत तथा पंजाब में लागू हुई। यह ब्रिटिश भारत के 30% भू-भाग पर लागू हुई।
- इस व्यवस्था में गाँव के मुखिया को राजस्व वसूल करने का अधिकार दिया गया जिससे गाँव का मुखिया किसानों का शोषण किया और किसानों से बेगार भी करवाने लगे।

अंग्रेजों की न्याय व्यवस्था

- भारत में आधुनिक न्याय व्यवस्था के जनक **वारेन हेस्टिंग्स** थे, इसने प्रत्येक जिले में एक दीवानी न्यायालय और एक फौजदारी न्यायालय की स्थापना की।
- दीवानी न्यायालय जिला कलेक्टर के अधीन था लेकिन फौजदारी न्यायालय एक भारतीय न्यायाधीश के अधीन था।
- इन दोनों न्यायालय के ऊपर दो न्यायालय सदर दीवानी न्यायालय और सदर निजामत न्यायालय गवर्नर जनरल के अधीन थे।
- सदर दीवानी न्यायालय की अपील लंदन के प्रिवी कौंसिल में होती थी जबकि फौजदारी न्यायालय की अंतिम न्यायालय सदर निजामत होती थी।
- वारेन हेस्टिंग्स के बाद लार्ड कार्नवालिस ने न्याय-व्यवस्था में व्यापक सुधार किया। इसने **1793 ई.** में **कार्नवालिस कोड (कार्नवालिस संहिता)** का निर्माण किया जिसमें **शक्ति पृथक्करण का सिद्धांत** लागू किया।
- कार्नवालिस ने जिला के कलेक्टर से दीवानी न्यायालय के न्याय अधिकार अलग कर दिया।
- कार्नवालिस ने जिला फौजदारी न्यायालय में एक यूरोपीय न्यायाधीश नियुक्त किया।
- दीवानी न्यायालय के ऊपर कार्नवालिस ने चार प्रांतीय दीवानी न्यायालय की स्थापना की। जो हैं—
  1. कलकत्ता
  2. ढाका
  3. मुर्शिदाबाद
  4. पटना
- कार्नवालिस ने जिला फौजदारी न्यायालय के ऊपर सर्किट कोर्ट (दौरा न्यायालय) की स्थापना की जो अस्थाई न्यायालय था।

लार्ड हेस्टिंग्स

- इसके समय में निचले स्तर के न्यायिक पदों का भारतीयकरण शुरू हुआ।

Nitin-Gupta.com

GET IT ON Google Play Best Study PDF के लिए हमारी App को Download करें "GK Trick By Nitin Gupta"

- इस संदर्भ में यह कहा गया कि यदि क्षेत्रीय स्तर पर न्याय व्यवस्था उपलब्ध कराना है तो क्षेत्रीय स्तर पर भारतीयों को न्यायिक पदों में नियुक्त किया जाय।

लार्ड विलियम बैंटिक

- इसके समय में न्यायिक व्यवस्था में अत्यधिक सुधार किए गए और न्याय व्यवस्था का केन्द्रीकरण किया गया।
- इसी के समय 1833 के अधिनियम द्वारा यह व्यवस्था की गयी कि बंगाल के गवर्नर जनरल को भारत का गवर्नर जनरल बनाया गया और यह भी व्यवस्था की गई कि गवर्नर जनरल एवं उसकी कार्यकारिणी पूरे ब्रिटिश भारत के लिए कानून बनाएंगे।
- इसने कार्नवालिस के सर्किट कोर्ट को समाप्त कर दिया।
- इसके दो कार्य—
  1. आगरा में एक अपीलीय न्यायालय की स्थापना।
  2. इलाहाबाद में सदर दीवानी एवं सदर निजामत की स्थापना।
- इसने भारतीय कानून को संचित करने तथा इसमें सुधार लाने के लिए 1833 ई. में लार्ड मैकाले की अध्यक्षता में प्रथम विधि आयोग की स्थापना की।
- लार्ड डलहौजी के समय में 1853 का अधिनियम आया इसने पुनः विधि आयोग गठित करने की सलाह दी।
- 1854 में मैकाले के नेतृत्व में द्वितीय विधि आयोग का गठन किया गया। इसी आयोग की संस्तुति पर 1858-61 ई. तक भारतीय दण्ड संहिता, भारतीय सिविल संहिता, भारतीय सिविल कार्य संहिता की रचना हुई।
- इसके बाद 1862 ई. में उच्च न्यायालय अधिनियम पारित किया गया जिसके आधार पर प्रमुख प्रांतों में एक-एक उच्च न्यायालय की स्थापना की गयी।
- 1935 के अधिनियम द्वारा दिल्ली में एक संघीय न्यायालय की स्थापना की गयी।

न्यायिक सुधार से सम्बन्धित बातें

प्रथम विधि आयोग	1833 में	मैकाले की अध्यक्षता में
द्वितीय विधि आयोग	1854 में	मैकाले की अध्यक्षता में
भारतीय दण्ड संहिता भारतीय सिविल संहिता भारतीय सिविल कार्य संहिता		1858-61 ई. के बीच में लिखा गया
उच्च न्यायालय अधि.	1862 ई.	उच्च न्यायालयों की स्थापना
संघीय न्यायालय की स्थापना	1935 के अधि. द्वारा	1937 में

शिक्षा व्यवस्था

- कम्पनी के प्रारम्भिक ब्रिटिश शासक जो भारतीय संस्कृति से प्रभावित थे। वे लोग प्राच्यवादी कहलाए। इनका मानना था कि यूरोपीय ज्ञान-विज्ञान को भारतीयों को उन्हीं की भाषा में शिक्षित किया जाय।
- 1780-81 ई. में वारेन हेस्टिंग्स ने कलकत्ता मदरसा की स्थापना की जिसमें फारसी और अरबी का अध्ययन होता था।
- 1784 ई. में सर विलियम जोंस ने कलकत्ता में रायल एशियाटिक सोसाइटी की स्थापना की जिसका उद्देश्य प्राचीन भारतीय इतिहास और संस्कृति को उजागर करना था।
- 1782 ई. में जोनाथन डंकन ने वाराणसी में एक संस्कृत कालेज की स्थापना की।
- 1813 के अधिनियम द्वारा कम्पनी को निर्देश दिया गया कि ये भारत में प्रतिवर्ष कम से कम एक लाख रुपए शिक्षा के क्षेत्र में खर्च करें।

आंग्ल-प्राच्य विवाद

- अन्ततः लार्ड विलियम बैंटिक ने आंग्लवादी नेता मैकाले के विचारों से सहमत हुआ और 1835 में पहली बार सरकारी शिक्षा नीति की घोषणा की जिसमें कहा गया कि शिक्षा का माध्यम अंग्रेजी होगा।

Nitin-Gupta.com

GET IT ON Google Play Best Study PDF के लिए हमारी App को Download करें "GK Trick By Nitin Gupta"

प्रमुख शिक्षा आयोग, गठन वर्ष तथा उनके मुख्य प्रावधान		
आयोग का नाम	**वर्ष**	**मुख्य प्रावधान**
चार्ल्स वुड का डिस्पैच (लार्ड डलहौजी का गवर्नर जनरल के काल में)	1854 ई.	यह भारत की भावी शिक्षा के लिए एक वृहत योजना थी। इसे प्रायः भारतीय शिक्षा का मैग्नाकार्टा कहा जाता है। इसके मुख्य प्रावधानों में पाश्चात्य शिक्षा का प्रसार, उच्च शिक्षा के लिए अंग्रेजी माध्यम तथा प्राथमिक शिक्षा के लिए जनभाषा, शिक्षा के लिए निजी प्रयत्नों को प्रोत्साहन, महिला शिक्षा को प्रोत्साहन तथा कलकत्ता, मद्रास एवं मुम्बई में तीन विश्वविद्यालय की स्थापना शामिल था।
हंटर शिक्षा आयोग (लार्ड रिपन के काल में)	1882-83 ई.	इसके मुख्य प्रावधानों में स्थानीय भाषा में प्राथमिक शिक्षा पर जोर, शिक्षा के लिए उपकर, माध्यमिक स्तर पर साहित्यिक शिक्षा के साथ-साथ व्यवहारिक शिक्षा तथा महिला शिक्षा को प्रोत्साहन करने की बात की गई।
शिक्षा नीति प्रस्ताव	1913 ई.	निरक्षरता समाप्त करने की नीति, निःशुल्क प्राथमिक शिक्षा की व्यवस्था तथा सभी प्रान्तों में कम से कम एक विश्वविद्यालय की स्थापना।
सैडलर विश्वविद्यालय आयोग	1917-19 ई.	बारह वर्षीय स्कूली शिक्षा, माध्यमिक शिक्षा के बाद स्नातक की उपाधि तथा अध्यापकों के प्रशिक्षण की उचित व्यवस्थाएं आदि।
हार्टोग समिति	1929 ई.	प्राथमिक शिक्षा में सुधार, केवल प्रतिभाशाली विद्यार्थियों को उच्च शिक्षा आदि का प्रावधान।
शिक्षा की सार्जेन्ट योजना	1944 ई.	देश में प्रारम्भिक विद्यालय तथा हाईस्कूल की स्थापना का प्रावधान, 6 से 11 वर्ष के बच्चों को निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा की व्यवस्था आदि।

- अंतिम रूप से लार्ड ऑकलैण्ड के समय में आंग्ल-प्राच्य विवाद समाप्त हो गया।
- इसी काल में अधोमुखी निश्यंदन सिद्धांत/विप्रवेशन सिद्धांत प्रकाश में आया। यह सिद्धांत बेंटिक के समय शुरु की गई और इसी के समय इसे सरकारी मान्यता भी दी गयी।
- अधोमुखी निश्यंदन सिद्धांत का उद्देश्य सर्वप्रथम उच्च वर्ग को शिक्षित किया जाय, इस वर्ग के शिक्षित होने पर छन-छन कर शिक्षा का प्रभाव जनसाधारण तक पहुँचेगा।

वुड का घोषणा-पत्र (1854)

- ब्रिटिश संसद में भारत की शिक्षा की प्रगति की जाँच के लिए 1853 ई. में बोर्ड ऑफ कंट्रोल के अध्यक्ष चार्ल्स वुड की अध्यक्षता में 1854 में एक रिपोर्ट प्रस्तुत की गयी जिसे वुड का घोषणा-पत्र कहा जाता है।
- इस घोषणा-पत्र को आधुनिक शिक्षा की आधारशिला माना जाता है जिसमें श्रेणीबद्ध शिक्षण संस्थाओं की स्थापना का प्रावधान किया गया।

भारत में ब्रिटिश राज्य का आर्थिक प्रभाव

उपनिवेशवाद के विभिन्न चरण

- अंग्रेजों ने जब भारत को अपना उपनिवेश बनाया तो इसकी विभिन्न प्रकार से शोषण करने की योजना बनायी।
- आर. पी. दत्त की रचना आज का भारत का औपनिवेशिक अर्थव्यवस्था का सर्वश्रेष्ठ ग्रंथ है। इसमें अंग्रेजों की शोषण प्रवृत्ति के तीन चरणों में विभक्त किया गया है—

1. वाणिज्यिक पूँजीवाद का चरण
2. औद्योगिक पूँजीवाद का चरण

Nitin-Gupta.com

GET IT ON Google Play Best Study PDF के लिए हमारी App को Download करें "GK Trick By Nitin Gupta"

3. वित्तीय पूँजीवाद का चरण

वाणिज्यिक पूँजीवाद का चरण (1757-1813)

- इस चरण में कम्पनी ने अपने तीन लक्ष्य निर्धारित किये—

  1. भारतीय व्यापार पर एकाधिकार

  2. भारतीय सत्ता पर नियंत्रण स्थापित कर सरकारी राजस्व पर कब्जा करना।

  3. भारतीय हस्तशिल्प उद्योग पर नियंत्रण।

  कम्पनी तीनों लक्ष्य प्राप्त करने में सफल रही।

औद्योगिक पूँजीवाद का चरण (1813-58 ई.)

- 18वीं शताब्दी के अन्त में इंग्लैण्ड में औद्योगिक क्रान्ति हुई इस चरण में कम्पनी का उद्देश्य भारत को एक अधीनस्थ बाजार के रूप में विकसित करना था। साथ ही भारत को एक ऐसे उपनिवेश की भूमिका भी अदा करनी थी जो इंग्लैण्ड के कारखानों के लिए कच्चा माल उपलब्ध करता रहे। इस तरह इंग्लैण्ड के कारखानों में निर्मित सस्ती वस्तुएँ भारत के बाजारों में बिखेर दी गयीं जिसकी प्रतियोगिता में भारतीय वस्तुएँ ठहर नहीं सकी। इस तरह भारतीय हस्तशिल्प उद्योगों का विनास हुआ।
- 1813 के अधिनियम द्वारा कम्पनी का व्यापारिक एकाधिकार भारत से समाप्त कर दिया और इंग्लैण्ड के सौदागरों के लिए बाजार खोल दिये गये।

वित्तीय पूँजीवाद का चरण (1858-1947 ई.)

- इंग्लैण्ड में इस समय तक अत्यधिक पूँजी जमा हो चुकी थी। इंग्लैण्ड में और अधिक औद्योगीकरण का तात्पर्य था मजदूरों की सौदेबाजी क्षमता में वृद्धि जिससे उद्योगपतियों के मुनाफे पर प्रभाव पड़ता।
- यह वह समय था जब मार्क्स तथा एंजिल्स का द कम्युनिस्ट मेनीफेस्टो अंग्रेजी भाषा में प्रकाशित हो गया।
- अंग्रेजों ने भारत में पूँजी निवेश करने का निश्चय किया। भारत पर पकड़ मजबूत बनाने के लिए इन्होंने सार्वजनिक ऋण को माध्यम बनाया।
- अंग्रेजों की सबसे ज्यादा पूँजी रेलवे विकास में लगी जिसका उद्देश्य भारत की प्रगति न होकर साम्राज्य की सुरक्षा और आर्थिक लाभ कमाना था।

भारतीय हस्तशिल्प उद्योग का विनाश

- 1600 से 1757 तक कम्पनी की भारतीय वस्तुएँ बाहर ले जाते थे और बदले में सोना-चाँदी लाते थे।
- भारतीय वस्तुओं के आधिक्य से घबरा कर ब्रिटिश सरकार को ऐसे कानून बनाने पड़े जिससे इंग्लैण्ड में भारतीय वस्तुओं की बिक्री कम हो जाये।
- राबिन्सन क्रूसो नामक उपन्यास के लेखक डैफो ने यह शिकायत की थी कि भारतीय कपड़े हमारे घरों में सोने के कमरों में प्रवेश कर गया है।
- कम्पनी के कार्यकर्ता ने भारतीय बुनकरों पर दबाव डालकर कम मूल्य पर कपड़ा तैयार करने के लिए बाध्य किया। दबाव को प्रभावशाली बनाने के लिए कम्पनी के कार्यकर्ता बुनकरों को पेशिगी रूपये देने की प्रथा प्रारम्भ की और उनमें एक शर्त नामा लिखवा लेते थे। इस प्रथा को ददनी प्रथा के नाम से जाना जाता है। इससे अनेकों बुनकर अपना व्यवसाय छोड़कर मजदूरी करने लगे।
- 18वीं शताब्दी के अन्त में इंग्लैण्ड में औद्योगिक क्रान्ति शुरू हुई। अब इंग्लैण्ड के कारखानों में निर्मित सस्ती वस्तुएँ भारतीय बाजारों में भेज दी गयी। भारत की हाथ की बनी वस्तुएँ ठहर न सकी परिणामस्वरूप भारतीय हस्तशिल्प उद्योग का विनाश हुआ, बहुत से लोग मजदूरी करने लगे जिनके पास पैसा था खेत खरीद लिया। जो साधन विहीन थे वह कृषि मजदूर बन गये इस तरह कृषि पर दबाव पड़ा और देश गरीब हो गया।

Nitin-Gupta.com

GET IT ON Google Play Best Study PDF के लिए हमारी App को Download करें "GK Trick By Nitin Gupta"

धन निष्कासन का सिद्धांत

- धन निष्कासन सिद्धांत का सर्वप्रथम दादा भाई नौरोजी ने अपनी पुस्तक 'द पावर्टी एंड अनब्रिटिश रूल इन इण्डिया, में प्रतिपादित किया।
- दादा भाई नौरोजी ने धन निष्कासन की चर्चा सर्वप्रथम 2 मई, 1867 ई. को लंदन में ईस्ट इण्डिया एसोशिएसन की बैठक में पढ़े गए अपने एक लेख 'इंग्लैण्ड डेब्ट टु इण्डिया' में किया।
- धन निष्कासन के सिद्धांत को कांग्रेस ने सर्वप्रथम 1896 ई. में कलकत्ता के कांग्रेस अधिवेशन में स्वीकार किया गया।
- धन निष्कासन का विरोध करने वाले एम. जी. रानाडे और आर.सी. दत्त थे।
- कार्लमार्क्स के अनुसार–''भारत में ब्रिटिश आर्थिक नीति घिनौनी है।''
- अंग्रेज नागरिक **सेलबन** के अनुसार–''हमारी अर्थव्यवस्था एक स्पंज के समान है जो भारतीय अर्थव्यवस्था को सोख लेती है और फिर टेम्स नदी के किनारे निचोड़ देती है।''
- धन निष्कासन का विरोध करने वाले समाचार पत्रों में 'अमृत बाजार पत्रिका' (शिशिर कुमार घोष) महत्वपूर्ण है।
- भारत का सर्वाधिक धन गृह व्यय के रूप में इंग्लैण्ड गया।

1857 का विद्रोह

- सुरेन्द्र नाथ सेन को स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद सरकारी इतिहासकार बनाया गया था।
- 1857 के विद्रोह के समय इंग्लैण्ड की महारानी विक्टोरिया और प्रधानमंत्री पार्मस्टन तथा भारत का गवर्नर लार्ड कैनिंग था।
- 1857 के विद्रोह की योजना भारत के बिठूर (कानपुर) में तैयार की गई जिसमें नाना साहब और अजीमुल्ला खाँ थे। इसके बाद अजीमुल्ला खाँ लंदन गए और वहाँ रह रहे भारतीयों से भी समर्थन प्राप्त किया।
- 1857 के विद्रोह का प्रतीक कमल का फूल और रोटी था। विद्रोही हरे रंग के झण्डे का प्रयोग किए।

1857 के विद्रोह का स्वरूप

- अनेक ब्रिटिश इतिहासकार इस विद्रोह को सैनिक विद्रोह, मुस्लिम षड़यंत्र तथा धर्मांधों का ईसाईयों के विरुद्ध विद्रोह आदि मानते हैं।
- अधिकांश भारतीय इतिहासकार इसे भारत की स्वतंत्रता के लिए लड़ा गया प्रथम स्वतंत्रता संग्राम या राष्ट्रीय आंदोलन मानते हैं।
- यह पूर्णतः राष्ट्रीय आंदोलन नहीं था क्योंकि राष्ट्रीय भावना से सभी लोग प्रेरित भी नहीं थे फिर भी यह राष्ट्रीय आंदोलन का प्रथम चरण था क्योंकि सभी का उद्देश्य भारत से ब्रिटिश शासन को उखाड़ फेंकना था।

कारण

राजनीतिक कारण

- मुगल सम्राटों के अधिकारों का ह्रास
- डलहौजी ने 1856 ई. में अवध के शासक वाजिद अलीशाह पर कुप्रशासन का आरोप लगाकर अवध को अंग्रेजी साम्राज्य में विलय कर लिया और अवध के नवाब वाजिद अलीशाह को कलकत्ता निर्वासित कर दिया।
- लार्ड डलहौजी ने भारतीय नरेशों को पुत्र को गोद लेने का निषेध किया और राज्यों को हड़प लिया।

  जैसे—सतारा; संभलपुर; जैतपुर; बघात; झाँसी; उदयपुर
- नाना साहब की पेंशन बंद करना।

आर्थिक कारण

- यहाँ अंग्रेजों की भू-राजस्व नीति के कारण लोगों का

Nitin-Gupta.com

GET IT ON Google Play Best Study PDF के लिए हमारी App को Download करें "GK Trick By Nitin Gupta"

अत्यधिक शोषण हुआ और इनकी आर्थिक नीतियों के कारण अकाल और महामारी पैदा हुई जिससे सर्वाधिक संख्या में लोगों की मृत्यु हो गयी।

सामाजिक एवं धार्मिक कारण

- अंग्रेज भारतीयों का बहुत अपमान करते थे, ये भारतीयों को नश्ली गाली देते थे।
- एक अंग्रेज अधिकारी **एडवर्ड** के अनुसार–हमारा भारत में अधिकार करने का उद्देश्य लोगों को इसाई बनाना था।
- 1850 ई. में लेक्स लोकी कानून (धार्मिक अयोग्यता संबंधी कानून) पारित किया गया। इसके अनुसार जो हिन्दू ईसाई धर्म स्वीकार करेगा उसे उसके पैतृक उत्तराधिकारों से वंचित नहीं किया जाएगा।

सैनिक कारण

- भारतीय सेना में 2 लाख 38 हजार भारतीय सैनिक व 45 हजार यूरोपीय सैनिक थे जिसमें भारतीय सैनिकों की संख्या अधिक थी। सैनिकों में असंतोष का सबसे बड़ा कारण भेद-भाव की नीति थी।
- 1854 ई. में डाकघर सुधार अधिनियम पारित हुआ। इसके द्वारा सैनिकों की निःशुल्क डाक सेवा समाप्त कर दी गयी।
- कैनिंग सरकार ने सामान्य सेवा भर्ती अधिनियम 1856 ई. में पारित किया जिससे सैनिकों में असंतोष फैल गया।

तात्कालिक कारण

- 1856 ई. में ब्रिटिश सरकार ने सैनिकों को ब्राउन बेस्ड बंदूक की जगह न्यू इनफील्ड राइफल प्रयोग करने के लिया दिया जिसमें चर्बीयुक्त कारतूस लगी होती थी जिसे दाँत से खींचना पड़ता था।
- सर्वप्रथम बंगाल में अफवाह फैली कि इन कारतूसों में गाय एवं सूअर की चर्बी लगाई गयी है बाद में जब सरकार ने कारतूसों को मंगाना शुरू किया तो शक हकीकत में बदल गया।
- सर्वप्रथम बंगाल में स्थित दमदम के सैनिकों ने कारतूसों के प्रयोग करने से इंकार कर दिया।
- 28 मार्च, 1857 ई. को बैरकपुर छावनी के 34वीं रेजीमेंट के एक सिपाही मंगल पांडे ने चर्बी वाले कारतूस के विरोध में आगे आया और इसने एडजुटेंट लेफ्टीनेंट बाग की गोली मारकर हत्या कर दी तथा सर्जेंट ह्यूरसन को गोली मारकर घायल कर दिया।
- मंगल पांडे को 10 अप्रैल, 1857 ई. को फाँसी दे दी गई और यही विरोध विद्रोह में बदल गया।

विद्रोह का प्रारम्भ

- 24 अप्रैल, 1857 ई. को मेरठ छावनी के कुछ भारतीय सैनिक कारतूस लेने से इंकार कर दिया परिणामस्वरूप उन पर मुकदमा चला और 9 मई, 1857 ई. को 85 सैनिकों को नौकरी से बर्खास्त करके सजा सुनाई गई।
- 10 मई, 1857 ई. को मेरठ स्थित सभी सैनिकों ने विद्रोह कर दिया और अपने सैनिकों को रिहा कराकर अस्त्र-शस्त्र की लूटपाट की।

दिल्ली

- मेरठ के सभी विद्रोही सैनिक दिल्ली पहुँचे और यहाँ अंग्रेजी सेना को पराजित कर दिल्ली पर अधिकार कर लिया। विद्रोहियों ने बहादुरशाह जफर को अपना सम्राट घोषित किया।
- 20 सितम्बर 1857 ई. को हड्सन के नेतृत्व में एक अंग्रेजी सेना दिल्ली पहुँची और विद्रोहियों को पराजित कर पुनः दिल्ली पर अधिकार कर लिया।
- बहादुरशाह जफर हुमायूँ के मकबरे में जा छिपा अन्ततः मृत्युदण्ड न देने के शर्त में आत्मसमर्पण कर दिया। इसे रंगून भेज दिया गया जहाँ 1862 ई. में इसकी मृत्यु हो गयी।

Nitin-Gupta.com

GET IT ON Google Play Best Study PDF के लिए हमारी App को Download करें "GK Trick By Nitin Gupta"

लखनऊ

- लखनऊ में विद्रोह का नेतृत्व नवाब वाजिद अली शाह की पत्नी बेगम हजरत महल ने किया। इनकी देखरेख में बिरजिश कादर को अवध का नवाब घोषित किया गया।
- मार्च, 1858 ई. में कैम्पवेल के नेतृत्व में एक सेना लखनऊ पहुँची, इसने विद्रोहियों को पराजित कर लखनऊ पर अधिकार कर लिया।
- बेगम हजरत महल गिरफ्तारी से बचने के लिए नेपाल चली गयी।

कानपुर

- कानपुर में विद्रोह का नेतृत्व नाना साहब (धोंधुपंत) ने किया जिन्हें पेशवा घोषित किया गया।
- नाना साहब की तरफ से लड़ने की जिम्मेदारी तात्या टोपे को दी गयी थी जिनका वास्तविक नाम रामचंद पांडुरंग था।
- दिसम्बर, 1857 ई. में कैम्पवेल के नेतृत्व में अंग्रेजी सेना कानपुर पहुँची और फिर से कानपुर में अधिकार कर लिया।
- नाना साहब नेपाल भाग गए जबकि तात्या टोपे गिरफ्तार कर लिए गए, अन्ततः इनको फांसी हो गयी।

झाँसी

- झाँसी में विद्रोह का नेतृत्व गंगाधर राव की विधवा पत्नी रानी लक्ष्मीबाई ने किया।
- मार्च, 1858 ई. में ह्यूरोज के नेतृत्व में एक अंग्रेजी सेना झाँसी पहुँची। रानी लक्ष्मीबाई ह्यूरोज से युद्ध किया लेकिन कुछ गद्दारों के कारण यह पराजित हुई।
- झाँसी से रानी ग्वालियर पहुँची और ग्वालियर के कुछ विद्रोहियों के सहयोग से इन्होंने ग्वालियर पर अधिकार कर लिया। पीछे से ह्यूरोज अपनी सेना के साथ ग्वालियर पहुँचा और रानी के साथ युद्ध किया। कोटा एवं मोरार के युद्ध में रानी लक्ष्मीबाई वीरगति को प्राप्त हुई।

जगदीशपुर (बिहार)

- यहाँ के विद्रोह का नेतृत्व यहाँ के जमींदार 80 वर्षीय बाबू कुँअर सिंह ने किया था।

इलाहाबाद

- यहाँ के विद्रोह का नेतृत्व मौलवी लियाकत अली ने किया, इन्हें इलाहाबाद का सूबेदार घोषित किया गया।

1857 के विद्रोह के महत्वपूर्ण केन्द्र

केन्द्र	नेतृत्व	विद्रोह का दमन/नेतृत्व
दिल्ली	बहादुरशाह जफर	हडसन
लखनऊ	बेगम हजरत महल	कैम्पवेल
कानपुर	नाना साहब	कैम्पवेल
झाँसी	रानी लक्ष्मीबाई	ह्यूरोज
जगदीशपुर (बिहार)	कुँवर सिंह	विलियम टेलर/ विंसेट आयर
इलाहाबाद	मौलवी लियाकत अली	जनरल नील
फैजाबाद	मौलवी अहमदुल्ला शाह	कैम्पवेल
बरेली	खान बहादुर खान	कैम्पवेल
गोरखपुर	गजाधर सिंह/ निजाम मुहम्मद	स्थानीय सेना
मंदसौर (म.प्र.)	फिरोजशाह	स्थानीय सेना
कोटा (राज.)	जयदयाल एवं हरदयाल	स्थानीय सेना
असम	कन्दर्पेश्वर सिंह/ मनीराम दत्ता	स्थानीय सेना
कुल्लू (हिमांचल प्रदेश)	वीरसिंह/प्रताप सिंह	स्थानीय सेना
मथुरा	देवी सिंह	स्थानीय सेना
मेरठ	कदमसिंह	स्थानीय सेना

Nitin-Gupta.com

GET IT ON Google Play Best Study PDF के लिए हमारी App को Download करें "GK Trick By Nitin Gupta"

फैजाबाद

- यहाँ के विद्रोह का नेतृत्व मौलवी अहमदुल्लाशाह ने किया पूरे विद्रोह में यही एक विद्रोही थे जिन्होंने अंग्रेजों के विरुद्ध **जेहाद** का नारा दिया और गुरिल्ला पद्धति से युद्ध किया।

1857 के विद्रोह से सम्बन्धित विचार

- 'यह एक सैनिक विद्रोह था' —लारेंस एवं शीले
- 'यह धर्मान्धों का ईसाईयों के विरुद्ध युद्ध था' —एल.ई.आर. रीज
- 'यह बर्बरता एवं सभ्यता के बीच युद्ध था' —टी.आर. होम्स
- 'यह अंग्रेजों के विरुद्ध मुस्लिम षडयंत्र था' —आउट्रम एवं टेलर
- 'यह भारत की स्वतंत्रता के लिए लड़ा गया प्रथम स्वतंत्रता संग्राम था' —वी. डी. सावरकर एवं अशोक मेहता
- 'यह आन्दोलन राष्ट्रीय विद्रोह था' —डिजरैली
- 'इन देशी नरेशों एवं सरदारों ने इस तूफान के आगे तरंगरोध का कार्य किया अन्यथा हम एक ही झोंके में उड़ गये होते' —लार्ड कैनिंग
- 'यहाँ पर सोई हुई महिला सभी विद्रोहियों में एक मात्र मर्द है' —ह्यूरोज (रानी लक्ष्मीबाई के बारे में)

विद्रोह के असफलता के कारण

1. विद्रोह का सीमित स्वरूप।
2. देशी नरेशों एवं सरदारों की गद्दारी।
3. कुशल नेतृत्व का अभाव।
4. निश्चित उद्देश्यों का अभाव।
5. विद्रोहियों के पास सीमित साधन।
6. जन समर्थन का अभाव।
7. अंग्रेजी सेना का कुशल नेतृत्व।

1857 के विद्रोह से सम्बन्धित महत्वपूर्ण तथ्य

- विद्रोह से पहले अजीमुल्ला खाँ लंदन एवं तुर्की गये थे। कुस्तुन्तुनिया में उनकी मुलाकात ब्रिटिश पत्रकार डब्लू.एच. रसेल से हुई थी।
- बेगम हजरत महल के साथ सिकंदरबाग में वीरांगना ऊदादेवी ने युद्ध किया था।
- तात्या टोपे को 1859 में फांसी दी गई जो इस विद्रोह की अंतिम घटना थी।
- 1857 के विद्रोह के झंडा गीत की रचना अजीमुल्ला खाँ ने की थी। जो इस प्रकार था—

हम हैं इसके मालिक, हिन्दुस्तान हमारा।
पाक वतन है कौम का, जन्नत से भी प्यारा॥

- 1857 ई. के विद्रोह में राजस्थान में अजमेर, नीमच, आऊवा आदि स्थलों में विद्रोह हुए थे लेकिन जयपुर विद्रोह का केन्द्र नहीं था।
- अंग्रेज राजपूत राज्यों में 1857 के विद्रोह को दबाने में सफल रहे क्योंकि स्थानीय शासकों ने क्रांतिकारियों का साथ नहीं दिया था।

आदिवासी विद्रोह/जनजातीय आन्दोलन

- आदिवासियों का अपना कानून हुआ करता था लेकिन अंग्रेजी राज्य विस्तार के पश्चात उनके व्यक्तिगत कानूनों में पुलिस एवं प्रशासन का हस्तक्षेप होने लगा, जिसके कारण वे दुखी थे।
- आदिवासी बाहरी लोगों को दिकू कहते थे जिसका तात्पर्य उन लोगों से था जो उन्हें परेशान करते थे। जैसे महाजन, ठेकेदार, जमींदार, अधिकारी आदि।
- दस्तकार, ग्वाले और स्थानीय राजाओं को दिकू नहीं माना जाता था।
- आदिवासी विद्रोह प्रमुख कारण आर्थिक था।

Nitin-Gupta.com

GET IT ON Google Play Best Study PDF के लिए हमारी App को Download करें "GK Trick By Nitin Gupta"

प्रमुख आदिवासी विद्रोह					
विद्रोह का नाम	**वर्ष**	**नेतृत्व**	**कारण**	**क्षेत्र**	**परिणाम**
1. महाराष्ट्र का भील विद्रोह	1820 से 1857 तक	दशरथ, हिरिया, सेवरम	आर्थिक कारण	महाराष्ट्र	अंग्रेजों द्वारा दमन
3. संथाल विद्रोह	1855-56	सिद्धू एवं कान्हू	आर्थिक शोषण	दामन-ए-कोह (बिहार में भागलपुर से लेकर राजमहल तक)	अंग्रेजों द्वारा दमन
4. मुंडा विद्रोह	1874 से 1900 ई.	बिरसा मुंडा	आर्थिक एवं धार्मिक	दक्षिणी बिहार का छोटा नागपुर क्षेत्र	अंग्रेजों द्वारा दमन
5. कोल विद्रोह	1831-32 ई.	बुद्धू भगत	आर्थिक शोषण	छोटा नागपुर क्षेत्र	अंग्रेजों द्वारा दमन
7. खौड़ विद्रोह	1846-55 ई.	चक्र विशोई	मोरिया प्रथा को रोकने का प्रयास	उड़ीसा	अंग्रेजों द्वारा दमन

अन्य प्रमुख विद्रोह				
विद्रोह	**वर्ष**	**नेतृत्व**	**कारण/स्थान**	**विशेष**
1. सन्यासी विद्रोह	1763-1800 ई.	शंकराचार्य के अनुयायी (गिरि सम्प्रदाय)	ब्रिटिश शोषण बंगाल में	आनंद मठ का कथानक इसी विद्रोह पर आधारित है।
3. पागलपंथी विद्रोह	1813-31 ई.	टीपू	ब्रिटिश शोषण बंगाल में	टीपू शेरपुर का राजा बन गया।
4. फैराजी आन्दोलन	1820-31 ई.	हाजी शरियत उल्ला एवं टीटू	ब्रिटिश शोषण बंगाल में	—
5. वहाबी आन्दोलन	1820-1880 ई.	सैय्यद अहमद	धार्मिक कारण अनेक क्षेत्रों में	यह आंदोलन मुसलमानों के लिए था।
6. कूका आन्दोलन	1840-1872 ई.	सेन साहब एवं बाबा रामसिंह कूका	धार्मिक एवं राजनीतिक पंजाब में	रामसिंह कूका को रंगून भेज दिया गया।
7. नामधारी आन्दोलन	1863-72 ई.	बाबा रामसिंह कूका	धार्मिक पंजाब में	—

कृषक आन्दोलन

- ब्रिटिश शासन ने भारतीय किसानों पर सर्वाधिक कहर ढाया।
- जमींदारों ने भी किसानों पर अत्यधिक अत्याचार किया, उनसे बेगार लिया जाने लगा और मनमाने ढंग से अवैध लगान वसूली का दुश्चक्र चल पड़ा।
- उपरोक्त कारणों से किसान आन्दोलनों का विस्फोट समय-समय पर अलग-अलग स्थानों पर दीर्घकालिक असंतोष एवं तात्कालिक कारणों से होता रहा।

Nitin-Gupta.com

GET IT ON Google Play Best Study PDF के लिए हमारी App को Download करें "GK Trick By Nitin Gupta"

19वीं शताब्दी के कृषक आन्दोलन				
विद्रोह	**वर्ष**	**नेतृत्व**	**क्षेत्र**	**परिणाम**
1. नील विद्रोह	1859-60 ई.	दिगम्बर विश्वास, विष्णु विश्वास	बंगाल	किसानों का यह आन्दोलन सफल रहा।
2. पावना विद्रोह	1873 ई.	ईशान चन्द्र राय, केशव चन्द्र राय	बंगाल	आंशिक सफलता मिली।
3. दक्कन उपद्रव	1875 ई.	पूना जिले के किसानों द्वारा नेतृत्व	महाराष्ट्र	आंशिक सफलता मिली।

नील आन्दोलन (1859-60 ई.)

- बंगाल के अंग्रेज नील उत्पादक (निलहे) किसानों को जबरन नील की खेती करने को बाध्य किया और उसकी बहुत कम कीमत किसानों को देते थे। इससे किसानों में अत्यधिक असंतोष था।
- बंगाल के नदिया जिले के गोविन्दपुर गाँव के एक नील उत्पादक के दो भूतपूर्व कर्मचारियों दिगम्बर विश्वास एवं विष्णु विश्वास के नेतृत्व किसानों ने नील आन्दोलन प्रारम्भ किया।
- हिन्दू पैट्रियाट के सम्पादक हरिश्चन्द्र मुखर्जी ने इस आन्दोलन के लिए काफी कार्य किया।
- दीनबन्धु के नाटक नील दर्पण में किसानों के शोषण का वर्णन किया गया है।
- सरकार ने 1860 में सी. टोनकार की अध्यक्षता में नील आयोग का गठन किया। इस आयोग में एक भारतीय सदस्य ब्रिटिश इंडिया एसो. के चन्द्रमोहन चटर्जी थे।

20वीं शताब्दी के किसान आन्दोलन				
विद्रोह	**वर्ष**	**नेतृत्व**	**क्षेत्र**	**परिणाम**
2. संयुक्त प्रांत का किसान आन्दोलन	1918 ई.	गौरीशंकर मिश्र, इन्द्र नारायण द्विवेदी मदन मोहन मालवीय	अवध एवं आगरा	आंशिक सफलता
3. अवध किसान सभा का आन्दोलन	1920 ई.	बाबा रामचन्द्र	अवध क्षेत्र में	दमन कर दिया गया।
4. एका आन्दोलन	1921-22 ई.	मदारी पासी एवं सहदेव	हरदोई, बाराबंकी बहराइच, सीतापुर	दमन कर दिया गया।

एका आन्दोलन

- 1921-22 में हरदोई, बाराबंकी, बहराइच एवं सीतापुर के किसानों ने मदारी पासी एवं सहदेव के नेतृत्व में एका आन्दोलन चलाया।
- इस आन्दोलन का कारण अत्यधिक लगान वृद्धि एवं गैर कानूनी रूप से किसानों से खेत छीनना था।
- पुलिस ने जमींदारों के हितों की रक्षा के लिए इस आन्दोलन का दमन कर दिया।

Nitin-Gupta.com

GET IT ON Google Play Best Study PDF के लिए हमारी App को Download करें "GK Trick By Nitin Gupta"

बारदोली सत्याग्रह

- गुजरात के बारदोली ताल्लुका में सरकार ने 27% राजस्व में वृद्धि कर दी थी।
- इस आन्दोलन का नेतृत्व वल्लभ भाई पटेल ने किया।
- इस आन्दोलन में महिलाओं की सक्रिय भूमिका रही। मनीबेन पटेल, शारदा बेन शाह, मीठू बेन पेटिट और शारदा मेहता जैसी महिलाओं ने महत्वपूर्ण भूमिका अदा की।
- बारदोली की महिलाओं एवं गाँधीजी ने वल्लभ भाई पटेल को सरदार की उपाधि दी।

अखिल भारतीय किसान संगठन की स्थापना (1936 ई.)

- अखिल भारतीय किसान संगठन की स्थापना 1936 ई. में लखनऊ में हुई। इसका नाम अखिल भारतीय किसान सभा रखा गया।
- इसका पहला सम्मेलन अप्रैल 1936 में लखनऊ में हुआ।
- अखिल भारतीय किसान सभा के अध्यक्ष स्वामी सहजानंद सरस्वती एवं महासचिव प्रो. एन. जी. रंगा थे।
- अखिल भारतीय किसान सभा ने भारत से ब्रिटिश शासन का उन्मूलन एवं भारत की स्वाधीनता अपना लक्ष्य घोषित किया।
- 1 सितम्बर 1936 ई. को किसान दिवस के रूप में मनाने का निर्णय लिया गया।
- 1938 में आन्ध्र प्रदेश के गुन्टूर जिले में निदुब्रोल नामक स्थान पर प्रथम भारतीय किसन स्कूल खोला गया।
- 1942 ई. तक किसान आन्दोलन एवं राष्ट्रीय आन्दोलन साथ-साथ चलते रहे।

आधुनिक शिक्षा का विकास

- डेक्कन एजुकेशनल सोसाइटी की स्थापना से संबंधित थे बी.जी. तिलक। 1884 ई. में इसकी औपचारिक रूप में स्थापना वी. के. चिपलूंणकर, बी. जी. तिलक, एम. बी. नामजोशी ने मिलकर की थी।
- स्वदेशी एवं बहिष्कार आन्दोलन के समय राष्ट्रीय शिक्षा का भी प्रचार-प्रसार हुआ। इस समय अनेक राष्ट्रीय स्कूलों की स्थापना हुई। इन राष्ट्रीय स्कूलों में किस प्रकार की शिक्षा दी जाये, इसको निर्धारित करने के लिए 15 अगस्त 1906 को 'नेशनल काउंसिल ऑफ एजुकेशन' अर्थात् राष्ट्रीय शिक्षा परिषद की स्थापना की गई।
- सर विलियम जोंस ने 1789 ई. में कालीदास के प्रसिद्ध नाटक 'अभिज्ञान शाकुन्तलम्' का अंग्रेजी भाषा में अनुवाद किया था। सर विलियम जोंस कलकत्ता हाईकोर्ट के जज के रूप में भारत आये थे। 1784 ई. में इन्होंने कलकत्ता में रायल एशियाटिक सोसायटी की स्थापना की थी।
- 1854 के चार्ल्स वुड के डिस्पैच को आधार बनाकर लार्ड कैनिंग के समय में लंदन विश्वविद्यालय के तर्ज पर 1857 में तीन विश्वविद्यालय भारत में स्थापित किये गये। ये थे—कलकत्ता, मद्रास एवं बम्बई।

Nitin-Gupta.com

GET IT ON Google Play Best Study PDF के लिए हमारी App को Download करें "GK Trick By Nitin Gupta"

19वीं शताब्दी पुनर्जागरण

(सामाजिक-धार्मिक सुधार आन्दोलन)

- पुनर्जागरण आधुनिक भारतीय इतिहास की एक महत्वपूर्ण घटना है जिसने भारतीयों को आत्मनिरीक्षण करने के लिए विवश किया।

पुनर्जागरण के कारण

1. भारत की सामाजिक एवं धार्मिक स्थिति

- 18वीं शताब्दी का भारतीय समाज अंधविश्वासों के जाल में जकड़ा हुआ था। समाज कठोर जाति प्रथा पर आधारित था। छूआछूत का परम्परा अपने चर्मोत्कर्ष पर पहुँच चुकी थी जिससे भारतीय समाज उच्च एवं निम्न दो वर्गों में विभक्त हो गया था।
- समाज में सती प्रथा, कन्यावध, विधवा व्यवस्था, पर्दा प्रथा, अशिक्षा जैसी कुरीतियाँ विद्यमान थीं। इन्हीं कारणों से सामाजिक-धार्मिक सुधार आन्दोलन की आवश्यकता पड़ी।

2. ईसाई धर्म का प्रचार-प्रसार

- 1813 के अधिनियम द्वारा ईसाई मिशनरियों का भारत में आने, यहाँ बसने तथा प्रचार-प्रसार करने की अनुमति मिली।
- इसी समय से भारत में ईसाई धर्म के प्रचार-प्रसार में तेजी आई। बड़ी संख्या में निम्न वर्ग के हिन्दुओं को ईसाई बनाया जाने लगा। इससे हिन्दुओं में प्रतिक्रिया हुई और सुधार का कार्य प्रारम्भ हुआ।

3. प्राच्यवादियों पर प्रभाव

- प्राच्यवादी वे अंग्रेज विद्वान थे जो प्राचीन भारतीय संस्कृति से अत्यधिक प्रभावित थे।
- प्राच्यवादियों ने भारतीय इतिहास, धर्म, दर्शन, कला का अध्ययन किया और प्राचीन उपलब्धियों को प्रकाश में लाने में योगदान दिया। इससे भारतीयों में आत्म गौरव व आत्म सम्मान की भावना जागृत हुई।

4. अंग्रेजी शिक्षा एवं पाश्चात्य विचारधारा का प्रभाव

- भारत में अंग्रेजी प्रभुत्व की स्थापना के साथ ही पाश्चात्यीकरण (आधुनिकीकरण) की प्रक्रिया प्रारम्भ हुई।
- इसका प्रभाव कलकत्ता, मद्रास एवं बम्बई में पहले पड़ा। इससे एक नये वर्ग का उदय हुआ, जिसे मध्य वर्ग कहा गया।

प्रमुख सुधारक 'राजा राममोहन राय'

- बंगाल से शुरु हुए सुधार आन्दोलन का नेतृत्व राजा राममोहन राय ने किया।
- इसी कारण इन्हें भारत के नवजागरण का अग्रदूत सुधार आन्दोलनों का प्रवर्तक और आधुनिक भारत का पहला महान नेता कहा जाता है।

राजा राममोहन राय : एक दृष्टि में

- जन्म 1774 ई. में बंगाल में।
- प्रथम ग्रंथ फारसी भाषा में 'तोहफल-उल-मुहीद्दीन'
- 1817 ई. में डच घड़ी साज डेविड हेयर के सहयोग से कलकत्ता में हिन्दू कालेज की स्थापना की।
- 1825 ई. में कलकत्ता में वेदान्त कालेज की स्थापना की।
- 1828 ई. में ब्रह्म समाज की स्थापना की।
- 1829 ई. में इन्हीं के प्रयासों से सरकार ने सती प्रथा निषेध कानून पारित किया।
- 1830 ई. में मुगल सम्राट अकबर II ने इन्हें राजा की उपाधि दी और इंग्लैंड भेजा।
- 1833 ई. में इंग्लैंड में इनकी मृत्यु हुई और वहीं हिन्दू परंपरा के अनुसार इनका दाह संस्कार किया गया।

Nitin-Gupta.com

GET IT ON Google Play Best Study PDF के लिए हमारी App को Download करें "GK Trick By Nitin Gupta"

- इनका पहला ग्रंथ फारसी भाषा में "तोहफत-उल-मुहीद्दीन (एकेश्वरवादियों को उपहार) प्रकाशित हुआ। इसमें मूर्तिपूजा का विरोध किया गया और एकेश्वरवाद को सब धर्मों का मूल बताया।
- 1828 ई. में इन्होंने ब्रह्म समाज की स्थापना की जिसका उद्देश्य राजा राममोहन राय की मान्यताओं के अनुसार हिन्दू धर्म में सुधार करना था।
- इन्होंने समाज-सुधार एवं शिक्षा के विकास पर अत्यधिक बल दिया।

ब्रह्म समाज

- 1828 ई. ब्रह्म समाज की स्थापना राजा राममोहन राय ने किया।
- 1833 ई. में राजा राममोहन राय की मृत्यु के बाद इसका नेतृत्व द्वारिकानाथ टैगोर के हाथों में आया।
- केशवचन्द्र सेन की उदारता के कारण ब्रह्म समाज में फूट पड़ गई। 1865 में देवेन्द्रनाथ टैगोर ने इन्हें आचार्य के पद से हटा दिया।
- केशवचन्द्र सेन ने भारतीय ब्रह्म समाज की स्थापना की।
- केशवचन्द्र सेन के प्रयासों से सरकार 1872 ई. में ब्रह्म विवाह ऐक्ट पारित किया।
- 1878 ई. में भारतीय ब्रह्म समाज में फूट पड़ गई। केशवचन्द्र के अनेक अनुयायी मिलकर साधारण ब्रह्म समाज की स्थापना की जिसके अध्यक्ष बने आनन्द मोहन बसु।

ब्रह्म समाज	संस्थापक	राजा राममोहन राय
आदि ब्रह्म समाज	संस्थापक	देवेन्द्र नाथ टैगोर
भारतीय ब्रह्म समाज	संस्थापक	केशवचन्द्र सेन
साधारण ब्रह्म समाज	संस्थापक	आनन्द मोहन बसु एवं उनके सहयोगी

ईश्वरचन्द्र विद्यासागर

- इनकी विद्वता के कारण इन्हें विद्यासागर की उपाधि मिली।
- समाज सुधार के क्षेत्र में इनका सबसे बड़ा काम विधवा विवाह को कानूनी मान्यता दिलाने में थी।
- इन्हीं के प्रयासों से ब्रिटिश सरकार ने 1856 में 'विधवा पुनर्विवाह अधिनियम' पारित किया।
- स्त्री शिक्षा के विकास में भी इनका योगदान महत्वपूर्ण है। इन्होंने बेथून स्कूल के निरीक्षक की हैसियत से 35 बालिका विद्यालयों की स्थापना की।

यंग बंग आन्दोलन

- यंग बंग आन्दोलन के प्रवर्तक हेनरी विवियन डेरोजियो थे।
- डेरेजियन आधुनिक पाश्चात्य विचारों से प्रभावित थे।
- सुरेन्द्रनाथ बनर्जी ने हेनरी विवियन डेरोजियो को आधुनिक सभ्यता का अग्रदूत और अपनी जाति के पिता के रूप में स्वीकार किया।

प्रार्थना समाज

- 1867 ई. में केशवचन्द्र सेन की प्रेरणा से आत्माराम पाँडुरंगा ने इसकी स्थापना बम्बई में की।
- 1869 ई. में महादेव गोविन्द राना डे एवं आर. जी. भंडारकर जैसे लोग इसके सदस्य बनें।

परम हँस मंडली

- 1849 ई. में आत्माराम पांडुरंग ने बम्बई में परम हँस मंडली की स्थापना की।
- इसके अन्य प्रमुख सदस्यों में दादोबा पांडुरंग एवं बालकृष्ण जयकर थे।
- यह एकेश्वरवाद एवं विश्व बन्धुत्व की अवधारणा पर आधारित थी।
- यह ईसाई धर्म के अनुष्ठानों की नकल करते थे। इससे इन पर जनता को संदेह होने लगा। अतः 1860 ई. में परमहँस मंडली समाप्त हो गई।

Nitin-Gupta.com

GET IT ON Google Play Best Study PDF के लिए हमारी App को Download करें "GK Trick By Nitin Gupta"

- एम. जी. राना डे इसके वास्तविक संस्थापक थे। इन्हें महाराष्ट्र का सुकरात कहा जाता है।

थियोसोफिकल सोसायटी

- इसकी स्थापना 1875 ई. में एक रूसी महिला एच.पी. ब्लावात्सकी एवं एक अमेरिकी सैनिक अधिकारी एच.एस. आल्काट ने मिलकर न्यूयार्क में की थी।
- इसके संस्थापक 1879 में भारत आये एवं मद्रास के निकट अड्यार में 1882 ई. में इसका मुख्यालय स्थापित किया।
- 1893 में एनी बेसेंट शिकागो विश्व धर्म सम्मेलन में भाग लेने अमेरिका गई।
- 1907 में एनी बेसेंट थियोसोफिकल सोसायटी की अध्यक्ष बनीं।
- 1898 में एनी बेसेंट ने बनारस में सेन्ट्रल हिन्दू कालेज की स्थापना की जो 1916 ई. में मदनमोहन मालवीय के प्रयासों से बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय में परिवर्तित हो गया।

आर्य समाज

- आर्य समाज की स्थापना 1875 ई. में स्वामी दयानंद सरस्वती (मूलशंकर) ने बम्बई में की।
- 1877 ई. में इन्होंने अपना मुख्यालय लाहौर में बनाया।
- स्वामी जी ने वेदों की तरफ लौट चलो का नारा दिया।
- इन्होंन छुआछूत जन्म मूलक जाति व्यवस्था, बाल विवाह का विरोध किया।
- स्वामी दयानंद सरस्वती को भारत का मार्टिन लूथर कहा जाता है।
- 1874 ई. में इन्होंने 'सत्यार्थ प्रकाश' नामक ग्रंथ हिन्दी में प्रकाशित की।
- आर्य समाज द्वारा शुद्धि आन्दोलन चलाया गया। इसके माध्यम से जो हिन्दू ईसाई अथवा मुसलमान बन गये थे। उनकी इच्छा से उन्हें पुनः हिन्दू धर्म में लाया गया।
- 1886 ई. में लाला हँसराज ने लाहौर में दयानंद-एंग्लो-वैदिक स्कूल की स्थापना की जो 1889 में कालेज के रूप में परिवर्तित हो गया।
- 1902 ई. में मुंशीराम (स्वामी श्रद्धानंद) ने हरिद्वार के निकट काँगड़ी में गुरुकुल विश्वविद्यालय की स्थापना की।

रामकृष्ण मिशन

- इसके संस्थापक स्वामी विवेकानंद (नरेन्द्रनाथ दत्त) थे।
- यह रामकृष्ण परमहँस के प्रमुख शिष्यों में से एक थे।
- 1893 ई. में स्वामी विवेकानंद अमेरिका गये और शिकागो के प्रथम विश्व धर्म सम्मेलन में भाग लिया।
- इनके प्रभावशाली भाषणों को सुनकर अमेरिकी अखबार न्यूयार्क हेराल्ड ने लिखा था, विवेकानंद निश्चित रूप से विश्व धर्म सम्मेलन में सबसे प्रमुख व्यक्तित्व हैं।
- पश्चिमी देशों के लोग इन्हें ''साइक्लोनिक माँक ऑफ इंडिया'' कहकर पुकारते थे।
- 1897 ई. में इन्होंने बड़ा नगर (बारानगर) में रामकृष्ण मठ नामक एक संस्था की स्थापना की।
- 1899 ई. में बेल्लूर (पं. बंगाल) में एक मठ की स्थापना की।

रामकृष्ण मठ—यह ऐसे योग्य और आदर्श सन्यासी तैयार करते हैं जो धर्म प्रचार के मुख्य आधार है।

रामकृष्ण मिशन—यह समाज सेवा, पुस्तकों आदि द्वारा स्वामी रामकृष्ण परमहँस एवं स्वामी विवेकानंद के विचारों का प्रचार-प्रसार सम्पूर्ण विश्व में करते हैं।

Nitin-Gupta.com

GET IT ON Google Play Best Study PDF के लिए हमारी App को Download करें "GK Trick By Nitin Gupta"

मलाबारी प्रस्ताव

- हिन्दू कन्याओं के विवाह की न्यूनतम आयु निश्चित करवाने के लिए बम्बई के एक पारसी बहरामजी मलाबारी आगे आये।
- 1884 में इन्होंने एक लघु पुस्तिका प्रकाशित की जिसमें हिन्दू कन्या के विवाह की उम्र कम से कम 12 वर्ष करने का प्रस्ताव रखा। इसे ही मलाबारी प्रस्ताव कहते हैं।
- 1891 में वायसराय की परिषद में यह प्रस्ताव रखा गया अन्ततः यह न्यूनतम अवस्था बिल पारित हो गया।
- हिन्दू कन्या के विवाह की न्यूनतम आयु 12 वर्ष कर दी गई।
- बालगंगाधर तिलक ने इस प्रस्ताव का विरोध किया था।

शारदा ऐक्ट (1929 ई.)

- 1929 ई. में अजमेर के निवासी हर विलास शारदा के प्रयत्नों से बाल विवाह निषेध कानून बना जिसे शारदा ऐक्ट के नाम से जाता है। इसके अनुसार विवाह के समय बालक की आयु 18 वर्ष एवं कन्या की आयु 14 वर्ष से कम नहीं होनी चाहिए।

मुस्लिम सुधार आन्दोलन

अलीगढ़ आन्दोलन

- अलीगढ़ आन्दोलन के प्रवर्तक सर सैय्यद अहमद खाँ थे।
- सर सैय्यद अहमद खाँ पाश्चात्य संस्कृति से अत्यधिक प्रभावित थे। इन्होंने बताया कि कुरान में ऐसी कोई बात नहीं है जो मुसलमानों को अंग्रेजी शिक्षा प्राप्त करने या पश्चिमी संस्कृति के सम्पर्क में आने से रोके।

सर सैय्यद अहमद खाँ

- जन्म 1817 ई. में दिल्ली में। 1839 ई. में आगरा कमिश्नरी में नाइब मुंशी के पद पर नियुक्ति।
- 1841 ई. में मुंशिफ की परीक्षा पास की। मुंसिफ के रूप में मैनपुरी में नियुक्ति।
- 1857 के विद्रोह के समय में बिजनौर में सदर अमीन के पद पर नियुक्त थे।
- 1864 ई. में गाजीपुर में एक 'साइन्टिफिक सोसायटी' की स्थापना की। बाद में इसका कार्यालय अलीगढ़ में स्थानांतरित कर दिया गया।
- 'साइन्टिफिक सोसायटी' का कार्य अंग्रेजी पुस्तकों का उर्दू में अनुवाद करना था।
- 1875 ई. में इन्होंने अलीगढ़ में अलीगढ़ मोहम्मडन एंग्लो ओरियंटल स्कूल की स्थापना की जो 1878 में कालेज एवं 1920 में अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय में परिवर्तित हो गया।
- 1886 ई. में मोहम्मडन एजुकेशनल कान्फ्रेंस एवं 1888 में इंडियन पैट्रियाटिक एसोसिएशन की स्थापना की।
- 1898 ई. में अलीगढ़ में इनकी मृत्यु हुई।
- ये अपने विचारों का प्रचार-प्रसार 'तहजीब-उल-अखलाक' नामक पत्रिका में करते थे।

Nitin-Gupta.com

GET IT ON Google Play Best Study PDF के लिए हमारी App को Download करें "GK Trick By Nitin Gupta"

देवबन्द आन्दोलन

- देवबन्द आन्दोलन के प्रवर्तक मुहम्मद कासिम ननौत्वी एवं रशीद अहमद गंगोही थे। इन्होंने देवबन्द में (सहारनपुर) एक स्कूल खोला जिसका उद्देश्य था- मुस्लिमों के लिए धार्मिक नेता प्रशिक्षित किया जाना।
- देवबन्द स्कूल में अंग्रेजी शिक्षा एवं पाश्चात्य संस्कृति पूर्णतः वर्जित थी।
- इस आन्दोलन के दो मुख्य उद्देश्य थे—1. मुसलमानों में कुरान एवं हदीस की शुद्ध शिक्षा का प्रसार करना। 2. ब्रिटिश शासकों के विरुद्ध जेहाद (धर्मयुद्ध) की भावना की जीवित रखना।
- देवबन्द आन्दोलन अलीगढ़ आन्दोलन के विरुद्ध था।
- देवबन्द आन्दोलन ने कांग्रेस की स्थापना का स्वागत किया जबकि अलीगढ़ आन्दोलन कांग्रेस एवं हिन्दुओं का विरोधी था।

अहमदिया आन्दोलन

- अहमदिया आन्दोलन के प्रवर्तक मिर्जा गुलाम अहमद थे।
- इन्होंने पंजाब में कांदियान नामक स्थान से 1889 में यह आन्दोलन प्रारम्भ किया।
- यह आन्दोलन उदारवादी सिद्धान्तों पर आधारित था।
- इन्होंने अपने ग्रंथ बहरीन-ए-अहमदिया में अपने सिद्धान्तों का वर्णन किया है।
- 1891 में मिर्जा गुलाम अहमद ने अपने आपको 'मसीह-उल-मौऊद' अर्थात् मसीहा घोषित किया।
- 1904 में इन्होंने अपने आपको श्रीकृष्ण का अवतार घोषित किया।

महत्वपूर्ण तथ्य

- स्वामी विवेकानंद ने 'ज्ञानयोग' 'कर्मयोग' तथा 'राजयोग' नामक पुस्तकें लिखीं।
- 'बहुजन समाज' का संस्थापक मुकुंदराव पाटिल एवं शंकरराव जाधव ने 1910 के बाद की थी। बहुजन समाज ब्राह्मण विरोधी एवं कांग्रेस विरोधी था।
- 'सत्य शोधक समाज' की स्थापना 1873 ई. में ज्योतिबा फुले ने महाराष्ट्र में की थी। इसमें इन्होंने पाखंडी ब्राह्मणों एवं उनके अवसरवादी धर्म ग्रंथों से निम्न जातियों की रक्षा की आवश्यकता पर बल दिया था। इन्होंने सत्य-शोधक समाज के माध्यम से गैर ब्राह्मण आन्दोलन का प्रचार-प्रसार किया।
- 1843 के एक्ट V ने भारत में गुलामी अर्थात् दास प्रथा को गैर कानूनी बना दिया था।
- ''अच्छा शासन स्वशासन का स्थानापन्न नहीं है।'' यह कथन स्वामी दयानंद सरस्वती का था।
- 'देव समाज' के संस्थापक शिवनारायण अग्निहोत्री थे। इन्होंने 1887 ई. में इसकी स्थापना लाहौर में की थी। ये प्रारम्भ में ब्रह्म समाज के अनुयायी थे।

भारत में समाचार-पत्रों का इतिहास

- भारत में प्रिंटिंग प्रेस लाने का श्रेय पुर्तगालियों को जाता है। 1557 ई. में गोवा के कुछ पादरी लोगों ने भारत की पहली पुस्तक छापी।
- भारत में प्रथम समाचार-पत्र निकालने का श्रेय जेम्स ऑगस्टस हिक्की को मिला। उसने 1780 ई. में बंगाल गजट (Bengal Guzette) का प्रकाशन किया किन्तु कम्पनी सरकार की आलोचना के कारण उसका प्रेस जब्त कर लिया गया।
- 1818 ई. में ब्रिटिश व्यापारी जेम्स सिल्क बर्किंघम ने 'कलकत्ता जनरल' का सम्पादन किया।
- बर्किंघम ही वह पहला प्रकाशक था जिसने प्रेस को जनता के प्रतिबिम्ब के स्वरूप में प्रस्तुत किया। प्रेस का आधुनिक रूप उसी की देन है।
- पहला भारतीय अंग्रेजी समाचार-पत्र 1816 ई. में कलकत्ता में गंगाधर भट्टाचार्य द्वारा बंगाल गजट नाम से निकाला गया।

Nitin-Gupta.com

GET IT ON Google Play Best Study PDF के लिए हमारी App को Download करें "GK Trick By Nitin Gupta"

ब्रिटिश भारत के प्रमुख समाचार पत्र				
प्रकाशन वर्ष	**पत्र/पत्रिका**	**संस्थापक**	**स्थान**	**भाषा**
1780 ई.	बंगाल गजट	जे.के. हिक्की	कलकत्ता	अंग्रेजी
1818 ई.	दिग्दर्शन	मार्शमेन	कलकत्ता	बंगाली
1821 ई.	संवाद कौमुदी	राजा राममोहन राय	कलकत्ता	बंगाली
1822 ई.	मिरातुल अखबार	राजा राममोहन राय	कलकत्ता	फारसी
1853 ई.	हिन्दू पेट्रियाट	गिरीश चन्द्र घोष, हरिशचन्द्र मुखर्जी	कलकत्ता	अंग्रेजी
1859 ई.	सोम प्रकाश	ईश्वरचन्द्र विद्यासागर	कलकत्ता	बंगाली
1861 ई.	इण्डियन मिरर	देवेन्द्रनाथ टैगोर, मनमोहन घोष	कलकत्ता	अंग्रेजी
1861 ई.	टाइम्स ऑफ इण्डिया	अंग्रेजी प्रेस	बम्बई	अंग्रेजा
1868 ई.	अमृत बाजार पत्रिका	मोतीलाल घोष, शिशिर घोष	कलकत्ता	बंगाली
1873 ई.	बंग दर्शन	बंकिम चन्द्र चटर्जी	कलकत्ता	बंगाली
1878 ई.	हिन्दू	वी. राघवाचारी	मद्रास	अंग्रेजी
1879 ई.	बंगाली	एस.एन. बनर्जी	कलकत्ता	अंग्रेजी
1881 ई.	केसरी	केलकर	बम्बई	मराठी
1903 ई.	इण्डियन ओपिनियन	महात्मा गाँधी	द. अफ्रीका	अंग्रेजी
1905 ई.	इण्डियन सोशियोलॉजिस्ट	श्यामजी कृष्ण वर्मा	लंदन	अंग्रेजी
1906 ई.	युगान्तर	बारीन्द्र घोष, भूपेन्द्र पन्त (संपादक)	कलकत्ता	बंगाली
1910 ई.	प्रताप	गणेश शंकर विद्यार्थी	कानपुर	हिन्दी
1913 ई.	गदर	लाला हरदयाल	सेनफ्रांसिस्को	अंग्रेजी एवं अन्य भाषा में
1914 ई.	कामनव्हील	ऐनी बेसेंट	बम्बई	अंग्रेजी
1914 ई.	न्यू इण्डिया	ऐनी बेसेंट	बम्बई	अंग्रेजी
1919 ई.	इंडिपेन्डेंट	मोतीलाल नेहरू	इलाहाबाद	अंग्रेजी
1919 ई.	नवजीवन	महात्मा गाँधी	अहमदाबाद	गुजराती
1919 ई.	यंग इंडिया	महात्मा गाँधी	अहमदाबाद	अंग्रेजी
1933 ई.	हरिजन	महात्मा गाँधी	पुणे	हिन्दी

Nitin-Gupta.com

GET IT ON Google Play Best Study PDF के लिए हमारी App को Download करें "GK Trick By Nitin Gupta"

महत्वपूर्ण तथ्य

- गाँधीजी द्वारा शुरू किया गया एक साप्ताहिक पत्र 'हरिजन' का प्रथम अंक 11 फरवरी 1933 को पूना के यरवदा सेन्ट्रल जेल से प्रकाशित किया गया था।
- वर्ष 1920 में लाहौर से लाला लाजपतराय द्वारा उर्दू में वंदे मातरम् नामक समाचार पत्र प्रारम्भ किया गया था। यह दैनिक पत्र था। इसके अतिरिक्त ये अंग्रेजी में 'दि पीपुल' नामक साप्ताहिक पत्र भी निकालते थे।
- 1 नवंबर 1913 ई. को अमेरिका के सैन्फ्रैंसिस्को नगर से गदर पत्र का प्रथम अंक उर्दू में प्रकाशित हुआ। यह पत्र अंग्रेजी, हिन्दी एवं गुरूमुखी भाषा में भी प्रकाशित होता था। इसका उद्देश्य भारतीय सेना में विशेषकर सिक्खों में ब्रिटिश सत्ता के विरुद्ध बगावत की भावना पैदा करना था।
- लार्ड वेलेजली ने सर्वप्रथम 1799 ई. में प्रेस सेंसरशिप लागू की थी। इसने समाचार पत्रों के पत्रेक्षण अधिनियम 1799 पारित कर समाचार पत्रों पर युद्धकालीन सेंसर लागू कर दिया था। 1818 ई. में लार्ड हेस्टिंग्स ने इस अधिनियम को समाप्त कर दिया था।

गवर्नर एवं गवर्नर जनरल/वायसराय

राबर्ट क्लाइव

1757-60 (प्रथम कार्यकाल)

1765-67 (द्वितीय कार्यकाल)

- राबर्ट क्लाइव बंगाल का पहला गवर्नर बना।
- 1765 में अवध के नवाब शुजाउद्दौला एवं शाह आलम के साथ इलाहाबाद की संधि की। मुगल बादशाह शाह आलम ने बंगाल, बिहार और उड़ीसा की दीवानी का अधिकार 1765 में कम्पनी को दे दिया।
- 1765 में बंगाल में द्वैध शासन प्रारम्भ हुआ।
- 1766 में इसने घोषणा की कि दोहरा भत्ता उन सेना अधिकारियों को दिया जायेगा जो बंगाल एवं बिहार सीमा क्षेत्र के बाहर सेवा दे रहे हैं।

वारेन हेस्टिंग्स (1772-85)

- वारेन हेस्टिंग्ज ने 1772 में क्लाइव के द्वैध शासन को समाप्त किया और बंगाल में ईस्ट इण्डिया कम्पनी की सत्ता स्थापित की।
- 1773 के रेग्यूलेटिंग ऐक्ट द्वारा इसे बंगाल का पहला गवर्नर जनरल बनाया गया।
- वारेन हेस्टिंग्ज ने मुगल सम्राट को मिलने वाली 26 लाख रुपये की वार्षिक पेंशन बंद करवा दी, साथ ही इलाहाबाद तथा कड़ा जिले को मुगल बादशाह से लेकर 50 लाख रुपये में अवध के नवाब शुजाउद्दौला को बेच दिया। ये सब अवध के नवाब के साथ 1773 की बनारस की संधि के बाद हुआ।
- 1773 के रेग्यूलेटिंग ऐक्ट द्वारा कलकत्ता में सुप्रीम कोर्ट की स्थापना की गई, जिसके अधिकार क्षेत्र के दायरे में कलकत्ता के सभी लोग आते थे।
- कलकत्ता के बाहर के विवादों का निपटारा यह अदालत तभी करती थी, जब इसके लिए दोनों पक्ष सहमत थे।
- कलकत्ता में एक सदर दीवानी और एक सदर निजामत अदालत की स्थापना की गई।
- प्रथम मराठा-आंग्ल युद्ध तथा सालबाई की संधि (1782) इसी के शासनकाल में सम्पन्न हुई।
- 1781 में हेस्टिंग्ज ने कलकत्ता में मुस्लिम शिक्षा के लिए एक मदरसे की स्थापना की।
- इसके ही समय में 1782 में जोनाथन डंकन ने बनारस में संस्कृत विद्यालय की स्थापना करवायी।
- इसी के समय 1784 में "द एशियाटिक सोसाइटी ऑफ बंगाल" की स्थापना सर विलियम जोंस ने की।

Nitin-Gupta.com

GET IT ON Google Play Best Study PDF के लिए हमारी App को Download करें "GK Trick By Nitin Gupta"

लार्ड कार्नवालिस (1786-93 ई.)

- कार्नवालिस ने 'कानून की विशिष्टता' का नियम जो इससे पूर्व नहीं था, भारत में लागू किया।
- कार्नवालिस ने 1793 में प्रसिद्ध 'कार्नवालिस कोड' कार्नवालिस संहिता का निर्माण करवाया जो 'शक्तियों के पृथकीकरण' सिद्धांत पर आधारित थी।
- कार्नवालिस संहिता को प्रस्तुत कर कार्नवालिस ने जिला कलेक्टरों से न्यायिक एवं फौजदारी शक्तियों को वापस ले लिया। अब उनके पास राजस्व संबंधी अधिकार ही शेष रह गया था।
- कार्नवालिस ने जिला दीवानी न्यायालयों के लिए एक नये पद जिला न्यायाधीश का सृजन किया जो सभी दीवानी मामले देखता था।
- इसने भारतीय न्यायाधीशों की अध्यक्षता वाली जिला फौजदारी अदालतों को समाप्त कर दिया और यूरोपीय अदालतों की स्थापना की।
- कार्नवालिस को भारत में नागरिक सेवा का जनक माना जाता है।
- इसने उच्च प्रशासनिक पदों पर भारतीयों की नियुक्ति बन्द कर दिया।
- तृतीय मैसूर युद्ध (1790-92) तथा श्रीरंगपट्टनम की संधि (1792) इसी के शासनकाल में हुआ।
- 1793 में कार्नवालिस ने 'स्थायी बंदोबस्त' प्रणाली बंगाल तथा बिहार में लागू की जिससे अब जमींदारों को भू-राजस्व का 10/11 भाग कम्पनी को तथा 1/11 भाग अपनी सेवाओं के लिए अपने पास रखना था।

सर जॉनशोर (1793-98)

- सर जॉनशोर के समय में ब्रिटिश संसद ने 1793 का चार्टर एक्ट पास किया।
- ये तटस्थ नीति का पोशक था।
- यह अपनी अहस्तक्षेप नीति के लिए प्रसिद्ध था। इसने केवल अवध के मामले में हस्तक्षेप किया।

लॉर्ड वेलेजली (1798-1805 ई.)

- लॉर्ड वेलेजली अपनी 'सहायक संधि' प्रणाली के कारण प्रसिद्ध हुआ।
- इसकी नीतियों का लक्ष्य भारत में ब्रिटिश प्रभुसत्ता की स्थापना करना था। इसने भारत में अंग्रेजी साम्राज्य के विस्तार को अपना लक्ष्य बनाया।
- सहायक संधि में शामिल होने वाले राज्यों में कम्पनी एक सहायक सेना रखती थी एवं संबंधित राज्य में एक ब्रिटिश रेजीमेंट को नियुक्त किया जाता था।
- हालांकि वेलेजली से पूर्व भारत में सहायक संधि का प्रयोग डुप्ले (फ्रांसीसी) ने किया था।
- सहायक संधि करने वाला पहला राज्य हैदराबाद के निजाम थे।
- वेलेजली के समय चौथा आंग्ल मैसूर युद्ध लड़ा गया और 1799 में टीपू सुल्तान को हराने के पश्चात् इसने मैसूर पर कब्जा कर लिया।
- 1799 में इसने मेंहदी अली नामक दूत को फारस के शाह के दरबार में भेजा।
- लार्ड वेलेजली ने कलकत्ता में नागरिक सेवा में भर्ती किए गए युवकों को प्रशिक्षित करने के लिए 'फोर्ट विलियम कालेज' की स्थापना की।
- वेलेजली 'बंगाल के टाइगर' नाम से प्रसिद्ध था।

लार्ड कार्नवालिस (1805)

- यह इसका दूसरा कार्यकाल था परंतु तीन माह बाद गाजीपुर में इसकी मृत्यु हो गई। यहीं इसकी कब्र बनी हुई है।

सर जार्ज बार्लो (1805)

- इसने अहस्तक्षेप की नीति का कड़ाई से पालन किया।

Nitin-Gupta.com

GET IT ON Google Play Best Study PDF के लिए हमारी App को Download करें "GK Trick By Nitin Gupta"

- इसी के समय में होल्कर के साथ संधि (राजपुराघाट की संधि, 1805) में हुई।
- द्वितीय आंग्ल-मराठा युद्ध समाप्त हुआ।

लार्ड मिन्टो प्रथम (1807-13)

- 1809 में मिन्टो ने चार्ल्स मेटकाफ को महाराजा रणजीत सिंह के दरबार में भेजा जहां अमृतसर की संधि हुई।
- इसके समय में चार्टर ऐक्ट 1813 पारित हुआ।
- इसी ने बुन्देलखण्ड और नागपुर के विद्रोहों को समाप्त किया।

लॉर्ड हेस्टिंग्ज (1813-23)

- इसने अहस्तक्षेप नीति का अंत करके भारत में राजनीतिक एकता स्थापित करने का प्रयास किया।
- इसके समय में आंग्ल-नेपाल युद्ध (1814-16) गोरखा युद्ध लड़ा गया।
- इसके समय में पिंडारियों का दमन हुआ।
- जान मेल्कॉम ने पिंडारियों को मराठा शिकारियों के साथ शिकारी कुत्तों की उपमा दी है।
- इसके समय में पेशवा की संधि, 1817 में सिंधिया के साथ संधि तथा 1818 में होल्कर के साथ मंदसौर की संधि हुई।
- इसके शासनकाल में मद्रास में रैय्यतवाड़ी व्यवस्था (1820) का प्रारम्भ गवर्नर थामस मुनरो के द्वारा हुआ।

लॉर्ड एमहर्स्ट (1823-28)

- इसके समय में प्रथम आंग्ल-बर्मा युद्ध (1824-26) लड़ा गया जिसमें बर्मी सेनायें पराजित हुईं।
- 1826 में दोनों के मध्य यान्डबू की संधि हुई, इससे कम्पनी के नियंत्रण वाले क्षेत्रों का विस्तार हुआ।
- इसके समय में 1824 में बैरकपुर की सैनिक छावनी में विद्रोह हुआ जिसका कारण था भारतीय सैनिकों द्वारा बर्मा जाकर युद्ध करने से इन्कार, क्योंकि समुद्र पार जाना इनके धर्म के विरुद्ध था।

लार्ड विलियम बैंटिक (1828-35)

- विलियम कैवेंडिश बैंटिक भारत के प्रथम गवर्नर जनरल बने।
- कार्नवालिस द्वारा स्थापित प्रान्तीय न्यायालयों तथा दौरा न्यायालयों को इसने समाप्त कर दिया और इनके स्थान पर संभागीय आयुक्त नियुक्त किए गए।
- इलाहाबाद में सदर दीवानी और सदर निजामत अदालतें स्थापित की गईं।
- बैंटिक ने तत्कालीन भारत में व्याप्त सामाजिक कुरीतियों को समाप्त करने का प्रयास किया।
- सामाजिक सुधार के क्षेत्र में सती प्रथा की समाप्ति इसका प्रशंसनीय कार्य था।
- बैंटिक ने सती प्रथा की समाप्ति हेतु बनाये गए कानून की धारा 17 को दिसम्बर 1829 में लागू कर विधवाओं के जलने पर पूर्ण प्रतिबंध लगा दिया।
- इसके समय में ठगी प्रथा देश के विभिन्न क्षेत्रों में फैली थी। इसकी समाप्ति के लिए बैंटिक ने कर्नल स्लीमन तथा स्थानीय रियासतों की मदद से 1830 तक ठगी प्रथा का अंत कर दिया।
- 1833 के चार्टर ऐक्ट के बाद बैंटिक को बंगाल के गवर्नर जनरल के स्थान पर भारत का गवर्नर जनरल कहा जाने लगा।
- 1835 में मैकाले के प्रस्ताव का अनुमोदन कर दिया गया और शिक्षा का माध्यम तथा उच्च स्तरीय प्रशासन की भाषा अंग्रेजी निश्चित हुई।

सर चार्ल्स मेटकॉफ (1835-36)

- इसे समाचार पत्रों के मुक्तिदाता के रूप में जाना गया।

Nitin-Gupta.com

GET IT ON Google Play Best Study PDF के लिए हमारी App को Download करें "GK Trick By Nitin Gupta"

लार्ड ऑकलैण्ड (1836-42)

- इसके काल की प्रमुख घटना थी प्रथम आंग्ल-अफगान युद्ध (1838-42)।
- ऑकलैण्ड ने भारत के विभिन्न स्कूलों में अनेक छात्रवृत्तियां प्रदान कीं।
- इसने सभी प्रारंभिक स्कूलों में शिक्षा का माध्यम उस क्षेत्र की प्रादेशिक भाषा रखी।
- 1839 में इसने मांडवी राज्य को अंग्रेजी राज्य में मिला लिया।
- 1839 में ऑकलैण्ड ने कलकत्ता से दिल्ली तक ग्रांड ट्रक रोड का निर्माण शुरु करवाया।

लार्ड एलनबरो (1842-44)

- इसके काल में 1842 में प्रथम आंग्ल-अफगान युद्ध समाप्त हुआ।
- इसके समय की महत्वपूर्ण उपलब्धि सिंध का अंग्रेजी राज्य में विलय (1843) था।

लार्ड हार्डिंग (1844-48)

- भारत में इसका कार्यकाल मुख्यतः प्रथम आंग्ल-सिख युद्ध (1845-46) के लिए स्मरणीय हैं, जिसमें अंग्रेजों ने विजय प्राप्त की और लाहौर पर अधिकार कर लिया।
- हार्डिंग द्वारा खोंड जनजाति द्वारा नरबलि देने की कुप्रथा का दमन किया गया, जो एक महान उपलब्धि थी।
- इसने सती प्रथा के प्रचलन पर प्रतिबंध लगाया।

लार्ड डलहौजी (1848-56)

- इसके समय में ब्रिटिश साम्राज्य का अत्यधिक विस्तार हुआ।
- द्वितीय आंग्ल-सिख युद्ध (1848-49) तथा 1849 में पंजाब का ब्रिटिश राज्य में विलय डलहौजी की प्रथम सफलता थी। इस युद्ध के विषय में डलहौजी ने कहा था कि 'सिखों ने युद्ध मांगा है, यह युद्ध प्रतिशोध सहित लड़ा जायेगा।'
- इसके समय में द्वितीय आंग्ल-बर्मा युद्ध (1852) लड़ा गया जिसमें अंग्रेजों ने बर्मियों को पराजित कर लोअर बर्मा और पेंगू पर अधिकार कर लिया।
- डलहौजी के शासनकाल को उसके व्यपगत सिद्धांत (Doctrine of lapse) अर्थात् राज्य हड़प नीति के कारण अधिक याद किया जाता है। इसने तत्कालीन भारतीय रजवाड़ों को तीन भागों में बाँटा—
  (i) वे रजवाड़े जो किसी के नियंत्रण में नहीं थे, न ही किसी को कर देते थे, वे बिना अंग्रेजी हस्तक्षेप के गोद ले सकते थे।
  (ii) वे रजवाड़े जो मुगल सम्राट अथवा पेशवा के नियंत्रण में थे, परंतु डलहौजी के समय में अंग्रेजों के अधीन थे, उन्हें गोद लेने से पहले अंग्रेजों से अनुमति लेना आवश्यक था।
  (iii) वे भारतीय रियासतें जो अंग्रेजों की बदौलत ही जीवित थी, इनको गोद लेने का अधिकार ही नहीं था।
- इस सिद्धांत द्वारा सर्वप्रथम 1848 में सतारा का विलय किया गया। 1849 में जैतपुर एवं संभलपुर, 1850 में बघात, 1852 में उदयपुर, 1853 में झांसी एवं 1854 में नागपुर का विलय किया गया।
- 1853 में इसने हैदराबाद के निजाम पर धनराशि बकाया होने का आरोप लगाकर उससे बरार छीन लिया।
- 1856 में अवध को कुप्रशासन का आरोप लगाकर अंग्रेजी साम्राज्य में मिला लिया गया तथा यहां के नवाब वाजिद अली शाह को 12 लाख रुपये वार्षिक पेंशन देकर कलकत्ता निर्वासित कर दिया गया।

Nitin-Gupta.com
GET IT ON Google Play Best Study PDF के लिए हमारी App को Download करें "GK Trick By Nitin Gupta"

डलहौजी द्वारा विलय किए गए राज्य	
राज्य	**वर्ष**
सतारा	1848
जैतपुर, संभलपुर	1849
बघात	1850
उदयपुर	1852
झांसी	1853
नागपुर	1854
करौली	1855
अवध (कुशासन के आरोप में)	1856

- इसी के समय में शिमला को भारत की ग्रीष्मकालीन राजधानी बनायी जानी प्रारम्भ की गई।
- रेलवे का विकास इसके प्रयासों का प्रतिफल था। डलहौजी को भारत में रेलवे का जनक माना जाता है क्योंकि इसी के प्रयत्नों के फलस्वरूप महाराष्ट्र में 1853 में बम्बई से थाणे का प्रथम रेलगाड़ी चलाई गई।
- डाक सुधार के क्षेत्र में इसने पहली बार भारत में डाक टिकटों का प्रचलन करवाया। 1854 में पारित 'पोस्ट आफिस ऐक्ट' द्वारा तीनों प्रेसीडेन्सियों में डाकघरों की अच्छी देख-रेख के लिए एक-एक महानिदेशकों की नियुक्ति की गई।
- डलहौजी ने पृथक रूप से भारत में पहली बार 'सार्वजनिक निर्माण विभाग' की स्थापना की।
- 1854 में इसने लोकसेवा विभाग की स्थापना की।
- इसी के समय में भारतीय प्रशासनिक सेवा (I.C.S.) की प्रतियोगी परीक्षाएं शुरू हुई।
- इसके समय में 1855 में संथाल विद्रोह हुआ।

लार्ड कैनिंग (1856-62)

- लार्ड कैनिंग भारत में कम्पनी द्वारा नियुक्त अंतिम गवर्नर जनरल तथा ब्रिटिश सम्राट के अधीन नियुक्त भारत का पहला वायसराय था।
- 1857 का महत्वपूर्ण ऐतिहासिक विद्रोह इसी के शासनकाल में हुआ।
- भारत का पहला विश्वविद्यालय (कलकत्ता विश्वविद्यालय) 1857 में तथा बाद में बम्बई में तथा मद्रास में स्थापित हुए।
- लार्ड मैकाले द्वारा प्रस्तावित भारतीय दण्ड संहिता 1858 में आवश्यक परिवर्तनों के साथ 1861 में लागू कर दिया गया।
- 1861 का भारतीय परिषद अधिनियम कैनिंग के समय में आया, जिसमें गवर्नर जनरल के काउंसिल के सदस्यों की संख्या 4 से बढ़ाकर 5 कर दी गई।
- इसी के समय 1858 में भारतीय दण्ड संहिता तथा 1859 में सिविल दण्ड प्रक्रिया संहिता पारित हुआ।
- कैनिंग ने सैनिक तथा असैनिक व्यय में कमी कर दी तथा नोट (रुपये) का प्रचलन किया।
- सामाजिक सुधारों के अंतर्गत विधवा पुनर्विवाह अधिनियम, 1856 कैनिंग के समय ही पास हुआ।
- सार्वजनिक सुधारों के तहत रेल लाइनों, सड़कों तथा नहरों का निर्माण कराया।
- न्यायिक सुधारों के अंतर्गत कैनिंग ने 1861 में हाईकोर्ट ऐक्ट पारित किया जिसके अंतर्गत बम्बई, कलकत्ता तथा मद्रास में एक-एक उच्च न्यायालय की स्थापना की गई।
- इसने भारत में दास प्रथा को गैर कानूनी बनाया।

लार्ड एल्गिन (1862-63)

- इसकी सबसे महत्वपूर्ण सफलता थी वहाबियों के आन्दोलन का दमन।
- इसके समय में विधवा पुनर्विवाह को प्रोत्साहन प्राप्त हुआ।

Nitin-Gupta.com

GET IT ON Google Play Best Study PDF के लिए हमारी App को Download करें "GK Trick By Nitin Gupta"

- 1863 में पंजाब में इसकी मृत्यु हो गई।

सर जॉन लारेंस (1864-69)

- इसके समय में भूटान का महत्वपूर्ण युद्ध (1864) हुआ जिसमें भूटान पराजित हुआ। अंततः दोनों पक्षों के बीच संधि हो गई।
- 1865 में इसके द्वारा यूरोप के साथ दूर संचार व्यवस्था के लिए भारत व यूरोप बीच प्रथम समुद्री टेलीग्राफ सेवा शुरू की गई।

लार्ड मेयो (1869-72)

- मेयो ने 1870 में भारत में वित्तीय विकेन्द्रीकरण की शुरुआत की।
- इसने बजट घाटे को कम किया तथा आयकर की दर को 1% से बढ़ाकर 2.5% कर दिया।
- 1871 में भारत में पहली बार जनगणना मेयो के ही समय में शुरु हुआ। यह प्रायोगिक जनगणना थी जो रिपन के काल 1881 से नियमित रूप से शुरू हुई।
- इसने बम्बई एवं मद्रास में नमक कर में वृद्धि कर दी।
- इसी के समय भारतीय सांख्यिकी सर्वेक्षण विभाग की स्थापना हुई।
- 1872 में मेयो की अण्डमान में एक अफगान द्वारा चाकू मारकर हत्या कर दी गई। मेयो पहला भारतीय वायसराय था जिसकी हत्या कार्यकाल के दौरान उसके ऑफिस में की गई।

लार्ड नार्थब्रुक (1872-76)

- इसके समय में 1872 का प्रसिद्ध कूका विद्रोह हुआ।
- बंगाल एवं बिहार में भयानक अकाल पड़ा।
- 1873 में इसने घोषणा की कि 'मेरा उद्देश्य करों को हटाना तथा अनावश्यक वैधानिक कार्यवाहियों को बंद करना है।'
- इसने अफगानिस्तान के संदर्भ में अहस्तक्षेप नीति का पालन किया।
- इसके समय में स्वेज नहर खुल जाने के कारण भारत और ब्रिटेन के मध्य व्यापार में वृद्धि हुई।
- इसी के समय 1875 में प्रिंस ऑफ वेल्स (किंग एडवर्ड सप्तम्) भारत यात्रा पर आये।

लार्ड लिटन (1876-80)

- इसी के समय 1876-78 तक भारत में भीषण अकाल पड़ा। सबसे अधिक प्रभाव मद्रास, बम्बई, मैसूर, हैदराबाद, पंजाब तथा मध्य भारत में पड़ा।
- इसी के समय में 1878 में वर्नाक्यूलर प्रेस ऐक्ट पारित कर भारतीय भाषा में समाचार-पत्रों को प्रतिबंधित कर दिया।
- वर्नाक्यूलर प्रेस ऐक्ट को एस.एन. बनर्जी ने 'आकाश से होने वाला वज्रपात कहा है।'
- इसी के समय में सिविल सेवा परीक्षा की उम्र 21 वर्ष से घटाकर 19 वर्ष कर दी गई जिसका उद्देश्य भारतीयों को प्रतियोगिता में प्रवेश से रोकना था।
- इसने कपास पर लगे आयात शुल्क को कम कर दिया।

लार्ड रिपन (1880-84

- इसे ग्लैडस्टोन के नेतृत्व वाली लिबरल पार्टी द्वारा नियुक्त किया गया।
- 1881 का प्रथम फैक्टरी ऐक्ट इसी के समय पारित हुआ।
- रिपन के सुधार कार्यों में सर्वाधिक महत्वपूर्ण कार्य था— 'स्थानीय स्वशासन' की शुरुआत।
- यह भारतीयों को स्वायत्त शासन की शिक्षा देना चाहता था, जिससे आगे चलकर वे स्वयं अपने शासन का भार संभाल सकें।

Nitin-Gupta.com

GET IT ON Google Play Best Study PDF के लिए हमारी App को Download करें "GK Trick By Nitin Gupta"

- चर्चित इल्बर्ट-विधेयक 1883 में रिपन के समय प्रस्तुत किया गया।
- इल्बर्ट-बिल पर हुए विवाद के कारण रिपन ने कार्यकाल समाप्त होने से पूर्व त्याग-पत्र दे दिया।
- इसने नगरों में नगरपालिका का गठन किया।
- रिपन अपने बारे में प्रायः कहता था, "मेरा मूल्यांकन मेरे कार्यों से करना न कि मेरे शब्दों से।"

लार्ड डफरिन (1884-88)

- डफरिन ने किसानों के हितों की रक्षा की ओर विशेष ध्यान दिया।
- इसके शासनकाल की महत्वपूर्ण घटना थी—तृतीय आंग्ल-बर्मा युद्ध (1885-88) जिसमें बर्मा पराजित हुआ तथा डफरिन ने बर्मा को जीतकर अंग्रेजी राज्य में मिला लिया।
- 1886 में अवध और 1887 में पंजाब में टेनेंसी ऐक्ट पारित किया गया।
- 1885 में भारतीय स्त्रियों की रक्षा के लिए लेडी डफरिन फण्ड स्थापित किया गया।
- इसी के समय में 1885 में ए.ओ. ह्यूम ने 'भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस' की स्थापना की।

लार्ड लैन्सडाउन (1888-94)

- लैन्सडाउन ब्रिटिश साम्राज्य की सीमा को बढ़ाना चाहता था।
- इसने मार्टिमर डूरंड की अध्यक्षता में एक विशिष्ट मण्डल अफगानिस्तान भेजा, जिनके प्रयास से 1893 में भारत व अफगानिस्तान के बीच एक रेखा निश्चित की गई जो 'डूरंड रेखा' के नाम से जानी जाती है।
- इसी के समय दूसरा फैक्ट्री ऐक्ट (1891) लाया गया जिसके तहत स्त्रियों को 11 घण्टे प्रतिदिन से अधिक काम करने पर प्रतिबंध लगाया गया।

लार्ड एल्गिन द्वितीय (1894-99)

- इसी के समय में 1895 से 98 तक मध्य प्रदेश, बिहार, उत्तर प्रदेश तथा पंजाब में भीषण अकाल पड़ा।
- इसी के समय 1895 में तिलक द्वारा शिवाजी उत्सव की घोषणा की गई।
- 1896 में इसी के समय बम्बई में प्लेग फैला।
- 1897 में चापेकर बन्धुओं द्वारा पूना में दो अंग्रेज अधिकारियों की हत्या कर दी गई।
- इसी के समय 1899 में मुंडा विद्रोह हुआ।

लार्ड कर्जन (1899-1905)

- 1899-1900 में जो अकाल पड़ा, इसके लिए कर्जन ने सर एन्टोनी मैकडोनल्ड की अध्यक्षता में अकाल आयोग स्थापित किया।
- 1901 में सर कॉलिन स्कॉट मानक्रीफ की अध्यक्षता में एक सिंचाई आयोग की स्थापना की गई।
- 1902 में सर एण्ड्रयू फ्रेजर की अध्यक्षता में एक पुलिस आयोग गठित किया गया, ताकि प्रत्येक प्रान्त के पुलिस प्रशासन की जाँच पड़ताल की जा सके।
- पुलिस विभाग में 'क्रिमिनल इन्वेस्टीगेशन डिपार्टमेन्ट' (C.I.D.) की स्थापना कर्जन के समय में हुई।
- 1902 में सर टॉमस रैले की अध्यक्षता में विश्वविद्यालय आयोग गठित किया गया और 1904 में इसके आधार पर भारतीय विश्वविद्यालय अधिनियम पारित किया गया।
- 1904 में 'सहकारी उधार समिति' अधिनियम पारित किया गया, जिसके अंतर्गत कृषकों को थोड़ी ब्याज दर पर उधार मिल सकता था।
- 1899 में 'भारतीय टंकण तथा पत्र-मुद्रण' अधिनियम के अनुसार अंग्रेजी पौंड भारत में विधिग्राह्य बन गया और इसका मूल्य 15 रुपये निश्चित हुआ।

Nitin-Gupta.com

GET IT ON Google Play Best Study PDF के लिए हमारी App को Download करें "GK Trick By Nitin Gupta"

- कर्जन ने किचनर से विवाद होने के कारण ही 1905 में त्याग-पत्र दे दिया।
- कर्जन के भारत विरोधी कार्यों में सर्वाधिक महत्वपूर्ण कार्य था–1905 में बंगाल का विभाजन।
- इसने 1905 में भारत लोक सेवा मण्डल तथा रेलवे बोर्ड का गठन किया।

लार्ड मिन्टो द्वितीय (1905-10)

- इसी के समय 1906 में मुस्लिम लीग की स्थापना हुई।
- 1907 में सूरत अधिवेशन में कांग्रेस का विभाजन हुआ।
- 30 अप्रैल, 1908 को खुदीराम बोस को फांसी की सजा दी गई।
- 1909 में एस.पी. सिन्हा वायसराय कार्यकारिणी में नियुक्त हुए।

लार्ड हार्डिंग द्वितीय (1910-16)

- इनके समय में 1911 में बंगाल विभाजन निरस्त कर दिया गया।
- 1911 में दिल्ली में बंगाल विभाजन रद्द तथा भारत की राजधानी दिल्ली से हस्तांतरित करने की घोषणा।
- इसी के समय 1912 में दिल्ली राजधानी बनी।
- 1915 में इसी के समय गदर आंदोलन का प्रारंभ तथा डिफेंस ऑफ इण्डिया अधिनियम पारित हुआ।
- 1915 में ही गोपाल कृष्ण गोखले तथा फिरोज शाह मेहता का देहान्त हो गया।
- 4 अगस्त, 1914 को इसी के समय प्रथम विश्व युद्ध की शुरुआत हुई।
- 1916 में हार्डिंग को बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय का कुलाधिपति नियुक्त किया गया।

लार्ड चेम्सफोर्ड (1916-21)

- 1916 में इसके समय तिलक और एनी बेसेन्ट द्वारा क्रमशः अप्रैल एवं सितंबर में होमरूल लीग की स्थापना।
- 1916 में कांग्रेस और मुस्लिम लीग के बीच लखनऊ पैक्ट हुआ।
- इसी के समय 1917 में गांधी जी का चंपारण सत्याग्रह शुरू हुआ।
- 1917 में ही शिक्षा पर सैडलर आयोग की नियुक्ति की गई।
- इसी के समय 13 अप्रैल 1919 को जलियाँवाला बाग हत्याकाण्ड हुआ।
- 1919 का रौलेट ऐक्ट इसी के समय पारित हुआ।
- 1919 को ही मॉण्टेग्यू–चेम्सफोर्ड सुधार अधिनियम लाया गया।
- अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय की स्थापना (1920) इसी के समय की गई।
- 1920 में इसी के समय भारतीय ट्रेड यूनियन कांग्रेस का प्रथम अधिवेशन हुआ।

लार्ड रीडिंग (1921-26)

- इसके समय में नवम्बर 1921 में प्रिंस ऑफ वेल्स भारत आये।
- 1921 में भारत के दक्षिणी-पश्चिमी समुद्र तट पर मोपला विद्रोह इसी के समय हुआ।
- 5 फरवरी, 1922 को चौरी-चौरा काण्ड हुआ।
- रीडिंग के समय में 1922 में 'विश्व भारती विश्वविद्यालय' ने कार्य करना आरम्भ किया।
- 1924 में कानपुर में अखिल भारतीय साम्यवादी दल का गठन हुआ।
- 9 अगस्त, 1925 का काकोरी डकैती काण्ड रीडिंग के समय ही हुआ।

लार्ड इरविन (1926-31)

- इसके समय 1928 में साइमन कमीशन भारत आया।

Nitin-Gupta.com

GET IT ON Google Play Best Study PDF के लिए हमारी App को Download करें "GK Trick By Nitin Gupta"

- 1928 में बम्बई में सर्वदलीय सम्मेलन का आयोजन हुआ।
- 1928 में ही मोतीलाल नेहरू की अध्यक्षता में एक समिति का गठन हुआ, जिसे नेहरू रिपोर्ट कहा गया।
- 12 मार्च, 1930 को गाँधी जी द्वारा ऐतिहासिक 'डाण्डी यात्रा' प्रारंभ की गई।
- 5 मार्च, 1931 को गाँधी-इरविन समझौते पर हस्ताक्षर हुए।

लार्ड विलिंगटन (1931-36)

- 1 सितम्बर से 1 दिसंबर, 1931 तक द्वितीय गोलमेज सम्मेलन का आयोजन लन्दन में विलिंगटन के समय में हुआ। इस सम्मेलन में गाँधीजी ने कांग्रेस का प्रतिनिधित्व किया।
- 25 सितम्बर, 1932 को गाँधीजी और अम्बेडकर के बीच पूना समझौता हुआ।
- विलिंगटन के समय में ही दिसम्बर, 1932 में तृतीय गोलमेज सम्मेलन का आयोजन हुआ।
- 1 अगस्त, 1933 में गाँधीजी ने दोबारा सविनय अवज्ञा आन्दोलन शुरू किया।
- भारत सरकार अधिनियम (4 अगस्त, 1935) इसी के समय पास किया गया।

लार्ड लिनलिथगो (1936-44)

- भारत में नियुक्त अंग्रेज गवर्नर जनरलों में इनका कार्यकाल सबसे लम्बा था।
- पहला आम चुनाव (1936-37) में हुआ। पांच प्रांतों में कांग्रेस को पूर्ण बहुमत प्राप्त हुआ। दो प्रांतों में समर्थन से बनायी। कुल 8 प्रांतों में कांग्रेस की सरकार बनी।
- 8 अगस्त, 1940 को वायसराय द्वारा अगस्त प्रस्ताव लाया गया।
- 1941 में रवीन्द्रनाथ टैगोर की मृत्यु हो गई।
- लिनलिथगो के समय 1942 में क्रिप्स मिशन भारत आया।
- 9 अगस्त, 1942 में गाँधी जी, अबुल कलाम आजाद जैसे नेताओं को गिरफ्तार कर लिया गया।

लार्ड वेवेल (1944-47)

- 1945 में शिमला समझौता हुआ।
- मुस्लिम लीग ने कैबिनेट मिशन योजना को अस्वीकार किया तथा 16 अगस्त, 1946 को 'प्रत्यक्ष कार्यवाही दिवस' मनाया।
- 2 सितम्बर, 1946 को जवाहर लाल के नेतृत्व में अंतरिम सरकार का गठन हुआ।
- 9 दिसंबर, 1946 को संविधान सभा की प्रथम बैठक हुई।

लार्ड माउन्टबेटन (मार्च 1947–जून 1948 तक)

- वायसराय माउन्टबेटन ने 'जून थर्ड प्लान' के अनुसार 3 जून, 1947 को भारत के विभाजन की घोषणा की।
- 7 अगस्त, 1947 को संविधान सभा (पाकिस्तान) ने जिन्ना को अध्यक्ष चुना।
- 15 अगस्त, 1947 को भारत स्वतंत्र हुआ।

राष्ट्रीय आन्दोलन (1885-1947 ई.)

राष्ट्रवाद का उदय

- धार्मिक तथा विचारधारा की एकता की चेतना तो प्राचीन तथा मध्ययुगीन भारत में थी, परन्तु यह राजनीतिक तथा आर्थिक चेतना की एकता थी जिसने 19वीं शताब्दी में राष्ट्रवाद को जन्म दिया।

Nitin-Gupta.com

GET IT ON Google Play Best Study PDF के लिए हमारी App को Download करें "GK Trick By Nitin Gupta"

राष्ट्रवाद के उदय के कारण

1. भारत का राजनीतिक एवं प्रशासनिक एकीकरण।
2. अंग्रेजों द्वारा भारत का आर्थिक शोषण।
3. अंग्रेजी शिक्षा एवं पाश्चात्य विचारधारा।
4. 19वीं शताब्दी का पुनर्जागरण।
5. यातायात एवं संचार माध्यमों का विकास।
6. प्रेस एवं समाचार पत्रों की भूमिका।
7. अन्तर्राष्ट्रीय घटनायें।
8. ब्रिटिश सरकार के प्रतिक्रियावादी कार्य।
9. विदेशी दासता का प्रभाव।
10. समकालीन साहित्य की भूमिका।

कांग्रेस के उदय से पहले की राजनीतिक संस्थायें

संगठन का नाम	स्थापना वर्ष/स्थान	संस्थापक/पदाधिकारी	उद्देश्य	महत्वपूर्ण कार्य
1. लैंड होल्डर्स सोसायटी भारत की प्रथम राजनीतिक संस्था थी।	1838 ई. में कलकत्ता में	भारतीय नेता एवं गैर सरकारी अंग्रेज भारतीय सचिव–प्रसन्न कुमार ठाकुर अंग्रेज सचिव–विलियम काब्री थे।	जमींदारों के हितों को आगे बढ़ाना	यह संस्था जमींदारों के हितों के साथ-साथ अन्य वर्गों के प्रतिनिधित्व करने का प्रयत्न
2. ब्रिटिश इंडिया सोसायटी	1839 ई. में लंदन में	विलियम एडम एवं अन्य अंग्रेज अध्यक्ष लार्ड ब्राम	भारत में ईस्ट इंडिया कम्पनी की नीतियों का विरोध करना	इस संस्था ने ''ब्रिटिश इंडियन एडवोकेट'' नामक अखबार निकालना प्रारम्भ किया।
3. ब्रिटिश इंडिया एसोसिएशन मुखपत्र (हिन्दू पैट्रियाट)	1851 ई. में कलकत्ता में	देवेन्द्र नाथ टैगोर व अन्य मिलकर अध्यक्ष-राजा राधाकान्त देव	ब्रिटिश भारत के सामान्य हितों को आगे बढ़ाना तथा यहाँ के लोगों की स्थिति में सुधार करना था।	नील विद्रोह के लिए कमीशन नियुक्त करने की माँग—1860 में अकाल पीड़ितों के लिए धन एकत्र किया। —1860 में आय कर लगाने का विरोध किया।
4. बाम्बे एसोसिएशन	1852 में बम्बई में	जगन्नाथ शंकर	भारतीय हितों की सुरक्षा	
5. ईस्ट इंडिया एसोसिएशन	1866 में लंदन में	दादाभाई नौरोजी	ब्रिटिश जनता एवं संसद को भारतीय विषयों से अवगत कराना।	1869 में इसकी शाखा बम्बई में स्थापित हुई।

Nitin-Gupta.com

Best Study PDF के लिए हमारी App को Download करें "GK Trick By Nitin Gupta"

संगठन का नाम	स्थापना वर्ष/स्थान	संस्थापक/पदाधिकारी	उद्देश्य	महत्वपूर्ण कार्य
6. पूना सार्वजनिक सभा इसका मुख पत्र 'क्वार्टली जनरल' था (त्रैमासिक था)	1870 में पूना में	गणेश वासुदेव जोशी	जनता को यह बताना कि सरकार के वास्तविक उद्देश्य क्या हैं और अपने अधिकार कैसे प्राप्त कर सकते हैं।	अनेक आन्दोलनों में भाग लिया।
7.इंडियन एसोसिएशन	1876 ई. में कलकत्ता में	सुरेन्द्रनाथ बनर्जी अध्यक्ष-मनमोहन घोष सचिव-आनंद मोहन बसु	देश में जनमत की एक शक्तिशाली संस्था का निर्माण करना, हिन्दू एवं मुसलमानों के बीच मैत्री भावस्थापित करना।	सिविल सर्विस आन्दोलन -1877 —वर्नाक्यूलर प्रेस ऐक्ट के विरोध में आन्दोलन
8.मद्रास महाजन सभा	1884 में मद्रास में	अध्यक्ष-पी.रंगिया नायडू सचिव-बी. राघवाचारी एवं आनंद चार्लू।	प्रशासनिक सुधार भारतीय हितों की सुरक्षा	—
9. बाम्बे प्रेसीडेन्सी एसोसिएशन	1885 में बम्बई में	काशीनाथ त्रयंबक बदरुद्दीन तैय्यबजी फिरोजशाह मेहता	भारतीय हितों की सुरक्षा हेतु	—

कांग्रेस के उदय में सहायक कारक

लिटन के कारनामे

लिटन की घोर प्रतिक्रियावादी नीति ने भारत को 1857 के विद्रोह से भी भयंकर विद्रोह के कगार पर लाकर खड़ा कर दिया। इस सन्दर्भ में लिटन के प्रमुख कारनामे थे—

1. दिल्ली दरबार

- ब्रिटेन की डिजरैली सरकार ने 1876 में रानी विक्टोरिया को हिन्दुस्तान का कैसर-ए-हिन्द घोषित किया।
- 1877 में बड़ी ठाठ से दिल्ली दरबार लगाया गया जबकि यहां पर लोग दुर्भिक्ष एवं महामारी से पीड़ित थे।

2. वर्नाक्यूलर प्रेस एक्ट

- 14 मार्च 1878 को लिटन ने देशी भाषाओं के समाचार पत्रों का गला घोंटने के लिए एक कानून पारित किया। सारे देश में इसका जोरदार विरोध हुआ।

3. सिविल सर्विसेज में उम्र घटाना

- 1877 में ब्रिटिश सरकार सिविल सर्विसेज में उम्र 21 वर्ष से घटाकर अधिकतम 19 वर्ष कर दिया। इससे भारतीयों में व्यापक आक्रोश पैदा हुआ। इण्डियन एसोसिएशन ने इसके विरोध में सिविल सर्विस आन्दोलन चलाया।

Nitin-Gupta.com

GET IT ON Google Play Best Study PDF के लिए हमारी App को Download करें "GK Trick By Nitin Gupta"

4. आर्म्स एक्ट (1879 ई.)

- इस एक्ट के जरिए लिटन सरकार ने भारतवासियों से अपने घर में साधारण हथियार रखने का अधिकार छीन लिया।

इल्बर्ट बिल (1883)

- रिपन के कानूनी सलाहकार सी.पी. इल्बर्ट द्वारा सर्वोच्च विधान परिषद में यह विधेयक पेश किया गया। विधेयक भारतीय जिला मजिस्ट्रेटों या सेशन जजों को यूरोपीय अभियुक्तों के मामले पर विचार का अधिकार दिया जाना था। यही गोरों के विद्रोह का कारण बना। इसके खिलाफ गोरों ने "यूरोपियन एण्ड एंग्लो इण्डियन डिफेंस एसोसिएशन" बनाया। इसके सामने ब्रिटेन की सरकार और रिपन दोनों झुके और समझौता कर लिया गया।
- विधेयक का सार पूर्ववत बनाये रखा गया लेकिन यूरोपियों को सुविधा दी गई कि वे ज्यूरी की मांग कर सकते हैं जिसके कम से कम आधे सदस्य यूरोपियन होंगे।
- अब भारतवासियों ने समझ लिया कि वे अंग्रेजों के समान अधिकार आसानी से नहीं पा सकते थे। इसके लिए लड़ना होगा और आन्दोलन करना होगा, जिसके लिए शक्तिशाली संगठन की आवश्यकता है।

कांग्रेस की स्थापना

- भारत के राष्ट्रीय आन्दोलन में कांग्रेस की स्थापना देश में एक बड़े आन्दोलन का नेतृत्व करने तथा ब्रिटिश सरकार के लिए सुरक्षा कपाट के रूप में हुआ।
- भारतीय सिविल सेवा से 1882 में सेवानिवृत्ति के बाद ए.ओ. ह्यूम ने भारतीयों की राजनीतिक समस्याओं के निराकरण हेतु कांग्रेस की स्थापना की।
- 1884 ई. में ए. ओ. ह्यूम ने भारतीय राष्ट्रीय संघ (इंडियन नेशनल यूनियन) की स्थापना की।
- 28-31 दिसम्बर 1885 ई. को बम्बई के ग्वारिया टैंक स्थित गोकुलदास तेजपाल संस्कृत महाविद्यालय में यह सम्मेलन प्रारम्भ हुआ।
- यहाँ पर दादाभाई नौरोजी के प्रस्ताव पर इंडियन नेशनल यूनियन का नाम बदलकर इंडियन नेशनल कांग्रेस कर दिया गया। इस प्रकार कांग्रेस का जन्म हुआ।
- कांग्रेस की स्थापना की पहली सार्वजनिक घोषणा 5 दिसम्बर, 1885 को मद्रास से प्रकाशित होने वाले 'द हिन्दू' नामक अखबार में की गई।

कांग्रेस की स्थापना के समय

ब्रिटेन के प्रधानमंत्री	ग्लैडस्टन
भारत के वायसराय	लार्ड डफरिन
बम्बई के गवर्नर	लार्ड रे

कांग्रेस के प्रारम्भिक उद्देश्य

1. भारत के सभी वर्गों और समुदायों को संगठित कर एक राष्ट्र की भावना पैदा करना।
2. राष्ट्रीय जीवन के बौद्धिक, नैतिक, सामाजिक और राजनीतिक क्षेत्रों में कृत्रिम उन्नति का प्रयत्न करना।
3. भारत के प्रति अन्यायपूर्ण परिस्थितियों को समाप्त करके भारत एवं ब्रिटेन के सम्बन्धों को मजबूत बनाना।
4. जनता की माँगों का सूत्रीकरण करना एवं उसका प्रस्तुतीकरण करना।

Nitin-Gupta.com

Best Study PDF के लिए हमारी App को Download करें "GK Trick By Nitin Gupta"

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के महत्वपूर्ण अधिवेशन

वर्ष	स्थान	अध्यक्ष	कार्य/प्रमुख उपलब्धि
1885	बम्बई	व्योमेश चन्द्र बनर्जी	कांग्रेस की स्थापना ए.ओ. ह्यूम द्वारा की गई। इस बैठक में 72 प्रतिनिधियों ने भाग लिया था।
1886	कलकत्ता	दादाभाई नौरोजी	इस बैठक के बाद वायसराय डफरिन ने कांग्रेस के सदस्यों को उद्यान भोज दिया।
1887	मद्रास	बदरुद्दीन तैय्यबजी	इस अधिवेशन में 11 प्रस्ताव स्वीकृत किए गये। इस अधिवेशन में सब्जेक्ट्स कमेटी का गठन किया गया।
1888	इलाहाबाद	जार्ज यूले	यह पहला अवसर था जब किसी यूरोपियन ने कांग्रेस की अध्यक्षता की। इस अधिवेशन में ''मुसलमान कांग्रेस के साथ रहे'' का फरमान शेज रजा हुसैन ने जारी किया। इसी अधिवेशन के विरोध में सर सैय्यद अहमद खां ने 1888 ई. में ही यूनाइटेड इण्डिया पेट्रियाटिक एसोसिएशन की स्थापना की।
1898	मद्रास	आनंद मोहन बोस	इसी अधिवेशन के दौरान कर्जन वायसराय बनकर आया।
1906	कलकत्ता	दादाभाई नौरोजी	कांग्रेस के मंच से 'स्वराज' शब्द का प्रयोग दादाभाई नौरोजी ने इसी अधिवेशन में किया।
1907	सूरत	रासबिहारी घोष	इसी अधिवेशन में अध्यक्ष पद को लेकर नरम दल व गरम दल में विवाद उत्पन्न हो गया। यह अधिवेशन निरस्त कर दिया गया।
1911	कलकत्ता	पं. बिशन नारायण दर	इसी अधिवेशन में रविन्द्र नाथ टैगोर की रचना (भारत का राष्ट्रगान) जन-गण-मन पहली बार गाया गया।
1916	लखनऊ	अम्बिका चरण मजुमदार	इसी अधिवेशन में नरमपंथी व गरमपंथी कांग्रेस एक हो गए।
1917	कलकत्ता	श्रीमती ऐनी बेसेन्ट	कांग्रेस की पहली महिला अध्यक्ष।
1922	गया	सी.आर. दास	इसी अधिवेशन के बाद 1923 में स्वराज्य पार्टी का गठन हुआ। इस अधिवेशन के पश्चात् 1923 में कांग्रेस का विशेष अधिवेशन अबुल कलाम आजाद की अध्यक्षता में दिल्ली में बुलाया गया।
1924	बेलगाँव	महात्मा गांधी	इसी अधिवेशन में गांधी-दास पैक्ट के अनुसार, स्वराज पार्टी को यह अधिकार दिया गया कि वह कांग्रेस के अविभाज्य अंग के रूप में रहकर विधान मण्डलों में प्रवेश ले तथा सरकार की नीतियों का विरोध करे। गांधी जी केवल एकमात्र इसी अधिवेशन के अध्यक्ष रहे।

Nitin-Gupta.com

GET IT ON Google Play Best Study PDF के लिए हमारी App को Download करें "GK Trick By Nitin Gupta"

वर्ष	स्थान	अध्यक्ष	कार्य/प्रमुख उपलब्धि
1925	कानपुर	सरोजनी नायडू	यह पहला अधिवेशन था जब किसी भारतीय महिला ने अध्यक्षता की।
1928	कलकत्ता	पं. मोतीलाल नेहरू	इस अधिवेशन में नेहरू रिपोर्ट पर मुख्य प्रस्ताव पारित किया गया। इसी अधिवेशन में रियासतों में उत्तरदायी सरकार की मांग की गई।
1929	लाहौर	पं. जवाहर लाल नेहरू	इस अधिवेशन में कांग्रेस ने पूर्ण स्वाधीनता का प्रस्ताव पारित किया, जिसमें कहा गया था, कि कांग्रेस विधान की धारा 1 में 'स्वराज' शब्द का अर्थ पूर्ण स्वाधीनता होगा।
1930 ई. में कांग्रेस का कोई अधिवेशन नहीं हुआ।			
1934	बम्बई	डा. राजेन्द्र प्रसाद	इसी अधिवेशन में गांधी जी ने अपना इस्तीफा देकर कांग्रेस से सन्यास ले लिया।
1939	त्रिपुरी (मध्य प्रदेश)	पहले सुभाष चन्द्र बोस बाद में राजेन्द्र प्रसाद	इसी अधिवेशन में कांग्रेस अध्यक्ष के लिए सुभाष चन्द्र बोस व महात्मा गांधी के उम्मीदवार पट्टाभि सीतारमैय्या के बीच मतदान हुआ, जिसमें सुभाष चन्द्र जीत गये लेकिन उन्होंने त्यागपत्र दे दिया, तब राजेन्द्र प्रसाद अध्यक्ष बने।
1948	जयपुर	पट्टाभि सीतारमैय्या	इस अधिवेशन का अभिभाषण गोकुल भट्ट द्वारा पढ़ा गया। इस अधिवेशन का आरंभ वंदे मातरम् व राष्ट्रगान से शुरू हुआ।

कांग्रेस में प्रथम

- कांग्रेस के प्रथम अधिवेशन के अध्यक्ष—डब्ल्यू.सी. बनर्जी थे।
- कांग्रेस के प्रथम मुसलमान अध्यक्ष—बदरुद्दीन तैय्यबजी।
- प्रथम यूरोपियन जिसने कांग्रेस के अधिवेशन की अध्यक्षता की—जार्ज यूले।
- प्रथम महिला जिसने कांग्रेस के अधिवेशन को सम्बोधित किया—कादम्बिनी गांगुली।
- प्रथम यूरोपियन महिला तथा प्रथम महिला अध्यक्ष जिसने कांग्रेस के अधिवेशन की अध्यक्षता की—ऐनी बेसेन्ट।
- जिस अधिवेशन में पहली बार भारत का राष्ट्रीय गीत 'वंदे मातरम्' गाया गया—1896 के कलकत्ता कांग्रेस अधिवेशन में (इस अधिवेशन के अध्यक्ष रहमतुल्ला सयानी ने स्वयं इसे गाया था), वंदे मातरम् बंकिम चंद्र चटर्जी के उपन्यास आनंदमठ से उद्धृत है।
- भारत की आजादी के समय जे.बी. कृपलानी कांग्रेस के अध्यक्ष थे।
- स्वतंत्रता के बाद 1947 में कांग्रेस का विशेष अधिवेशन नई दिल्ली में डॉ. राजेन्द्र प्रसाद की अध्यक्षता में संपन्न हुआ।
- कांग्रेस के सबसे ज्यादा समय तक तथा सबसे कम उम्र के अध्यक्ष थे—अबुल कलाम आजाद (1940-45 ई.)।

Nitin-Gupta.com

GET IT ON Google Play Best Study PDF के लिए हमारी App को Download करें "GK Trick By Nitin Gupta"

प्रमुख यूरोपियन जिन्होंने कांग्रेस की अध्यक्षता की

- जार्ज यूले—1888 में इलाहाबाद में कांग्रेस अधिवेशन के अध्यक्ष।
- अल्फ्रेड वेब—1894 में मद्रास अधिवेशन की अध्यक्षता की।
- हेनरी कार्टन—1904 में बम्बई अधिवेशन की अध्यक्षता की।
- ऐनी बेसेन्ट—1917 में कलकत्ता अधिवेशन की अध्यक्ष रहीं।

कांग्रेस के संबंध में महत्वपूर्ण वक्तव्य

- कांग्रेस लड़खड़ाकर गिर रही है, भारत में रहते हुए मेरी इच्छा है कि मैं इसके शांतिपूर्ण अवसान में अपना सहयोग दे सकूं—वायसराय कर्जन
- कांग्रेस लार्ड डफरिन के दिमाग की उपज है—लाला लाजपत राय
- कांग्रेस एक प्रकार की याचना करने वाली संस्था है—बिपिन चन्द्र पाल
- यदि वर्ष में एक बार मेंढक की तरह टर्रायेंगे, तो कुछ नहीं मिलेगा—बाल गंगाधर तिलक

कांग्रेस का प्रथम चरण का आन्दोलन

(1885-1905 ई.)

उदारवादी चरण (1885-1905 ई.)

- कांग्रेस के राष्ट्रीय आन्दोलन के प्रथम चरण को (1885-1905) उदारवादी राष्ट्रीयता का काल माना जाता है।
- कांग्रेस की स्थापना के साथ ही उदारवादी नेताओं ने ब्रिटिश सरकार से अनेक प्रशासनिक, संवैधानिक तथा आर्थिक सुधारों की माँग की।
- उदारवादियों ने अनेक प्रशासनिक सुधारों का लक्ष्य रखा। भारतीय शासन की जाँच के लिए रॉयल कमीशन की नियुक्ति का प्रस्ताव रखा। सिविल सेवा के भारतीयकरण, उसकी परीक्षा भारत व इंग्लैंड में एक साथ कराये जाने तथा उम्मीदवारों की आयु सीमा में वृद्धि की माँग की गई।
- उदारवादियों ने प्राथमिक एवं तकनीकी शिक्षा के प्रसार पर अधिक व्यय करने की माँग की तथा आयकर एवं नमक कर में कमी तथा आबकारी कर में वृद्धि की माँग की।
- उदारवादी कांग्रेसी नेताओं ने वायसराय एवं भारत सचिव की कार्यकारिणी तथा प्रान्तीय विधान परिषदों के विस्तार तथा उसमें भारतीयों को प्रतिनिधित्व देने की माँग की। अन्य प्रान्तों के लिए विधान परिषदों के गठन की माँग की।
- उदारवादी नेताओं ने कृषि बैंकों की स्थापना करने, मुक्त व्यापार की नीति को समाप्त करने की माँग की।
- सैनिक एवं असैनिक व्यय में कमी करने तथा भारत से धन निष्कासन रोकने की माँग की।
- इस चरण में कांग्रेस प्रतिवर्ष अधिवेशन करती थी जहाँ प्रस्ताव पारित किये जाते थे। इन प्रस्तावों को भारत सरकार भारत सचिव, ब्रिटिश सरकार तथा क्राउन के पास प्रार्थना-पत्र के रूप में भेजा जाता था।
- प्रारम्भिक कांग्रेसी नेता अपने विचारों तथा कार्यक्रमों को इंग्लैंड में प्रचार को बहुत महत्व देते थे।
- इनका मानना था कि इंग्लैंड में रहने वाले अंग्रेज भारतीय अंग्रेजों की तुलना में अधिक उदार एवं न्यायप्रिय हैं। अतः वे भारत के हित में अवश्य कदम उठायेंगे।
- उदारवादियों का सबसे बड़ा योगदान आर्थिक क्षेत्र में रहा। इन्होंने भारत में ब्रिटिश साम्राज्य की एक सशक्त आर्थिक समीक्षा प्रस्तुत की।
- दादाभाई नौरोजी एवं रमेशचन्द्र दत्त तथा डी.ई. वाचा ने धन निष्कासन सिद्धान्त को लोकप्रिय बनाया।

उदारवादी अथवा नरमपंथी नेता

दादाभाई नौरोजी	—	दीनशा-इ-वाचा
फिरोजशाह मेहता	—	सुरेन्द्र नाथ बनर्जी
बदरुद्दीन तैय्यब जी	—	रमेश चन्द्र दत्त
गोपालकृष्ण गोखले	—	डा. रासबिहारी घोष
आदंनमोहन बसु	—	मनमोहन घोष

Nitin-Gupta.com

GET IT ON Google Play Best Study PDF के लिए हमारी App को Download करें "GK Trick By Nitin Gupta"

कांग्रेस के प्रथम चरण से सम्बन्धित महत्वपूर्ण तथ्य

- कांग्रेस के प्रथम अधिवेशन की अध्यक्षता के लिए ए.ओ. ह्यूम ने व्योमेश चन्द्र बनर्जी का नाम प्रस्तावित किया और के.टी. तैलंग ने अनुमोदन किया।
- कांग्रेस का द्वितीय अधिवेशन कलकत्ता में दादाभाई नौरोजी की अध्यक्षता में हुआ। इसी अधिवेशन में इंडियन एसोसिएशन का कांग्रेस में विलय हो गया।
- द्वितीय अधिवेशन में ही 'स्टैंडिंग कमेटी'' गठित करने का प्रस्ताव लाया गया।
- कांग्रेस का तृतीय अधिवेशन मद्रास में सैय्यद बदरुद्दीन तैय्यबजी की अध्यक्षता में हुआ। यह कांग्रेस के प्रथम मुस्लिम अध्यक्ष थे।
- इस अधिवेशन में पहली बार स्थानीय भाषाओं में (हिन्दी, तमिल आदि) भाषण हुआ।
- कांग्रेस का चौथा अधिवेशन इलाहाबाद में जार्ज यूल की अध्यक्षता में हुआ। यह कांग्रेस के प्रथम अंग्रेज अध्यक्ष थे।
- इलाहाबाद अधिवेशन 1888 में पहली बार कांग्रेस के संविधान का निर्माण हुआ।
- बम्बई अधिवेशन में ब्रिटेन के हाउस ऑफ कामन्स के सदस्य चार्ल्स ब्रैडला भी सम्मिलित हुए।
- बम्बई अधिवेशन में कादाम्बिनी गाँगुली सम्मेलन को सम्बोधित करने वाली प्रथम महिला थी। ये प्रथम भारतीय स्नातक महिला थीं।
- जुलाई 1889 में इंडियन नेशनल कांग्रेस की ब्रिटिश इकाई की स्थापना लंदन में हुई। इसने 'इंडिया' नामक पत्र निकालना प्रारम्भ किया।
- 1900 ई. में लार्ड कर्जन ने भारत सचिव को लिखा कि ''भारत में कांग्रेस लड़खड़ाकर धराशायी हो रही है, भारत में रहते हुए मेरी महान महत्वाकांक्षा है कि मैं इसके शांतिपूर्ण मृत्यु में सहयोग कर सकूँ।''

कांग्रेस आन्दोलन का द्वितीय चरण (1905-1919 ई.)

उग्रवादी/गरमपंथी चरण (1905-1919 ई.)

- 19वीं सदी के अंत में उदारवादी राजनीति की आलोचना होने लगी थी। इसी के साथ भारतीय राजनीति में उग्रवादी चरण का उद्भव हुआ।
- उग्रवादी आन्दोलन के उदय में समकालीन अनेक राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय कारक सक्रिय रहे।
- उदारवादियों ने अपने लेखों के माध्यम से ब्रिटिशराज के वास्तविक चेहरे का बेनकाब कर दिया।
- उन्होंने यह सिद्ध किया कि भारत की गरीबी, बेरोजगारी, आर्थिक पिछड़ेपन, अकाल, ऋणग्रस्तता आदि सभी का मूल कारण ब्रिटिश औपनिवेशिक नीतियाँ हैं।
- कांग्रेस की नीतियों तथा उसकी उपलब्धियों के प्रति जन-असंतोष से भी उग्रवाद के उदय में सहायता मिली।
- उग्र नेताओं का मानना था कि कांग्रेस की आवेदन-निवेदन की नीति से कुछ भी हासिल होने वाला नहीं है।
- अमेरिका, फ्रांस, जर्मन एवं इटली के राष्ट्रीय आन्दोलनों की सफलता ने यह स्पष्ट कर दिया कि संवैधानिक तरीकों से स्वराज की प्राप्ति नहीं हो सकती।
- इथोपिया द्वारा 1896 में इटली की पराजय तथा 1904-05 में जापान द्वारा रूस की पराजय ने यूरोपीय अजेयता के सिद्धान्त को ध्वस्त कर दिया।
- इन घटनाओं ने राष्ट्रवादियों में आत्मविश्वास जगा दिया तथा औपनिवेशिक सरकार से संघर्ष को प्रेरित किया।
- महात्मा गाँधी ने 'हिन्द स्वराज' नामक अपनी पुस्तक में लिखा कि बंगाल विभाजन के बाद ही भारतीयों में वास्तविक जागृति आयी, जिसके लिए हमें लार्ड कर्जन को धन्यवाद देना चाहिए।

Nitin-Gupta.com

GET IT ON Google Play Best Study PDF के लिए हमारी App को Download करें "GK Trick By Nitin Gupta"

उग्र राष्ट्रवाद के उदय के कारक

1. ब्रिटिश शासन की शोषणकारी नीतियाँ।
2. कांग्रेस की आवेदन-निवेदन नीति की असफलता।
3. पश्चिमीकरण के विरुद्ध प्रतिक्रिया
4. अन्तर्राष्ट्रीय घटनायें
5. लार्ड कर्जन के कारनामे

गरम दल के नेता

1. बाल गंगाधर तिलक
2. लाला लाजपतराय
3. विपिन चन्द्र पाल

इन तीनों को सम्मिलित रूप से लाल-बाल-पाल कहा जाता था

4. अरविन्द घोष

उदारवादी एवं गरमपंथियों में अन्तर

नरमपंथी (उदारवादी)	गरमपंथी (उग्रवादी)
• नरमपंथी भारत के लिए औपनिवेशिक प्रशासन में सुधार चाहते थे।	• गरमपंथी स्वराज्य चाहते थे। ये अंग्रेजों पर विश्वास नहीं करते थे।
• नरमपंथी संवैधानिक तरीके जैसे—प्रार्थना, आवेदन, अपील के द्वारा ब्रिटिश सरकार से रियायत प्राप्त करना चाहते थे।	• उग्रवादी जन आंदोलन, बहिष्कार स्वेदेशी व राष्ट्रीय शिक्षा के द्वारा स्वराज्य प्राप्त करना चाहते थे।
• उदारवादी पश्चिमी शिक्षा संस्कृति के प्रशंसक थे तथा उसी के आधार पर भारत का निर्माण करना चाहते थे।	• उग्रवादी प्राचीन भारतीय संस्कृति को श्रेष्ठ मानते तथा पश्चिमी संस्कृति को हेय समझते थे।
• उदारवादी राष्ट्रीय आंदोलन शिक्षित व उच्च शहरी वर्ग का प्रतिनिधित्व करता था।	• उग्रवादी आंदोलन को मध्य व निम्न मध्यम वर्ग तथा सामान्य जनता तक ले जाना चाहते थे।
• उदारवादी धर्मनिरपेक्षता के समर्थक थे।	• सम्भवतः उग्रवादी धर्म के साथ राजनीति को जोड़कर जनाधार तैयार करना चाहते थे।

बंगाल विभाजन के संबंध में विभिन्न विचार

- ब्रिटिश समाचार पत्र स्टैंडर्ड ने बंग भंग को प्रतिवाद का ठोस मामला कहा।
- **मानचेस्टर गार्जियन ने लिखा**—बंगाल के टुकड़े-टुकड़े करने की योजना के लिए उनके समर्थन का औचित्य स्पष्ट करना कठिन है और इसके लिए उन्हें क्षमा करना तो और भी मुश्किल है।
- **'हितवादी'** ने लिखा—कर्जन ने भारतीयों को अग्नि-परीक्षा में डालकर उनमें नया जीवन फूँका है।
- **अमृत बाजार पत्रिका** ने लिखा—"बंग भंग द्वारा हजारों या लाखों ही नहीं करोड़ों लोगों की राष्ट्रीय भावना को मनमाने ढंग से जैसी ठेस पहुँचायी गयी है उसकी और कोई मिसाल नहीं मिलेगी।"
- **सोनार बाँग्ला** ने लिखा—बंगाल के लोग एक होकर उड़ जायें और फिरंगी बुलबुल का घोंसला नोचकर उसे गंगा में प्रवाहित कर दें।
- **सुरेन्द्रनाथ बनर्जी** ने कहा कि यह घोषणा हमारे ऊपर बम के गोले की भाँति गिरी।

Nitin-Gupta.com

GET IT ON Google Play Best Study PDF के लिए हमारी App को Download करें "GK Trick By Nitin Gupta"

बंगाल विभाजन एवं स्वदेशी तथा बहिष्कार आन्दोलन

- उस समय बंगाल की आबादी 7 करोड़ 85 लाख थी जो गुलाम भारत की आबादी का 1/4 थी। उस समय बंगाल में आजकल के पश्चिम बंगाल, बांग्लादेश, बिहार और उड़ीसा शामिल थे।
- भारत सरकार ने बंगाल का विभाजन करके एक नवीन प्रान्त बनाया जिसमें बंगाल के चटगांव, ढाका और राजशाही जिला के पूरे क्षेत्र, माल्दा जिला, त्रिपुरा का पहाड़ी राज्य और असम सम्मिलित किए गए। इस प्रांत को पूर्वी बंगाल और असम नाम से पुकारा गया।
- भारत सरकार का कहना था कि बंगाल सूबा बहुत बड़ा है। इस कारण प्रशासकीय सुविधा के लिए विभाजन आवश्यक है।
- लार्ड कर्जन के अनुसार अंग्रेजी हुकूमत का यह प्रयास कलकत्ता को सिंहासनच्युत करना था। बंगाली आबादी का बँटवारा करना था। एक ऐसे केन्द्र को समाप्त करना था जहाँ से बंगाल व पूरे देश में कांग्रेस पार्टी का संचालन होता था व साजिशें रची जाती थीं।
- भारत सरकार के तत्कालीन गृह-सचिव **रिसले** का कथन था ''अविभाजित बंगाल एक बड़ी ताकत है तथा विभाजन होने से यह कमजोर हो जायेगा। हमारा उद्देश्य बंगाल का बँटवारा करना है जिससे हमारे दुश्मन बँट जायें व कमजोर पड़ जायें।''
- सुरेन्द्रनाथ बनर्जी, कृष्ण कुमार मित्र, पृथ्वीशचन्द्र राय व अन्य नेताओं ने विभाजन प्रस्ताव के खिलाफ बंगाली, हितवादी, संजीवनी जेसे अखबारों व पत्रिकाओं के माध्यम से आन्दोलन छेड़ा।
- 19 जुलाई, 1905 को बंगाल विभाजन की घोषणा कर दी गई। घोषणा के तुरन्त बाद बंगाल के लगभग सभी कस्बों में विरोध सभायें आयोजित की गईं।
- 7 अगस्त, 1905 को कलकत्ता के टाउन हाल में एक ऐतिहासिक बैठक में स्वदेशी आन्दोलन की विधिवत घोषणा की गई। इस बैठक में बहिष्कार प्रस्ताव पारित हुआ। इससे पहले 13 जुलाई, 1905 को सर्वप्रथम संजीवनी नामक साप्ताहिक पत्रिका में बहिष्कार को अपनाने का सुझाव दिया गया।
- 1 सितम्बर को सरकार ने यह घोषणा की कि विभाजन 16 अक्टूबर में लागू होगा।
- 28 सितम्बर, 1905 को कलकत्ता के निकट कालीघाट के मंदिर में 50,000 लोगों ने शपथ ली कि वे विदेशी वस्तुओं का प्रयोग नहीं करेंगे।
- 16 अक्टूबर, 1905 का दिन पूरे बंगाल में शोक दिवस के रूप में मनाया गया। रवीन्द्रनाथ टैगोर के सुझाव पर सम्पूर्ण बंगाल में यह दिन रक्षाबन्धन दिवस के रूप में मनाया गया। लोगों ने गंगा स्नान किया और सड़कों पर वंदे मातरम् गाते हुए प्रदर्शन किया।
- महाराष्ट्र मे तिलक व उनकी पुत्री केतकर ने इस आन्दोलन में महत्वपूर्ण योगदान दिया।
- इस आन्दोलन की एक विशेषता यह भी थी कि महिलाओं ने इसमें सक्रिय रूप से भाग लिया था।
- परन्तु यह आन्दोलन बंगाल के किसानों को प्रभावित नहीं कर सका। वस्तुतः यह आन्दोलन शहरों के उच्च व मध्यम वर्ग तक ही सीमित रहा।
- स्वदेशी माल की सप्लाई के लिए अनेक स्थानों पर स्वदेशी स्टोर खोले गए। सर्वप्रथम आचार्य प्रफुल्लचन्द राय ने बंगाल केमिकल स्वदेशी स्टोर खोला।
- बंगाल विभाजन विरोधी आन्दोलन ने राष्ट्रीय शिक्षा को बढ़ावा दिया।

Nitin-Gupta.com

GET IT ON Google Play Best Study PDF के लिए हमारी App को Download करें "GK Trick By Nitin Gupta"

- 8 नवंबर 1905 को रंगपुर नेशनल स्कूल की स्थापना हुई।
- बंगाल में राष्ट्रीय शिक्षा को फैलाने में सबसे बड़ा कार्य डॉन सोसायटी ने किया। यह विद्यार्थियों का संगठन था। इसके सचिव सतीश चन्द्र मुखर्जी थे।
- रवीन्द्र नाथ टैगोर, द्विजेन्द्र लाल राय, मुकुन्द दास के लिखे गए गीत आन्दोलनकारियों के लिए प्रेरणा स्रोत बने। टैगोर ने उस समय बांग्लादेश के स्वाधीनता संघर्ष को तेज करने के लिए प्रेरणा स्रोत का जो गीत लिखा था **'आमार सोनार बांग्ला'** वह 1971 में बांग्लादेश का राष्ट्रगान बना।
- कला के क्षेत्र में अवनीन्द्रनाथ टैगोर ने भारतीय कला पर पाश्चात्य आधिपत्य को तोड़ा तथा स्वदेशी पारम्परिक कलाओं व अजन्ता की चित्रकला से प्रेरणा लेनी शुरू की।
- 1906 में स्थापित इण्डियन सोसायटी ऑफ ओरिएण्टल आर्ट्स की पहली छात्रवृत्ति भारतीय कला के मर्मज्ञ नन्दलाल बोस को मिली।

दिल्ली दरबार (1911)

- दिसम्बर 1911 में ब्रिटिश सम्राट जार्ज पंचम का दिल्ली आगमन हुआ।
- 12 दिसम्बर को दिल्ली में एक दरबार आयोजित हुआ। यहाँ तत्कालीन वायसराय लार्ड हार्डिंग ने सम्राट की ओर से घोषणा की—"बंग विभाजन रद्द कर दिया जायेगा।"
- भारत की राजधानी कलकत्ता से हटाकर दिल्ली बनाई गई जो 1912 में क्रियान्वित हुई।

कांग्रेस विभाजन

- बंगाल विभाजन के बाद उत्पन्न परिस्थितियों का एक प्रत्यक्ष परिणाम कांग्रेस के अन्दर नरमपंथियों और राष्ट्रवादियों के मध्य विरोध था।
- 1905 में बनारस अधिवेशन में गोखले ने बंग भंग की आलोचना की थी और स्वदेशी आन्दोलन का समर्थन किया। यहां पर पहला झगड़ा प्रिंस ऑफ वेल्स के प्रस्ताव पर हुआ। लाला लाजपतराय और तिलक ने इसका विरोध किया फिर भी नरमपंथी इस प्रस्ताव को पास कराने में सफल रहे।
- नरमपंथियों व राष्ट्रवादियों के बीच दरार 1906 के अधिवेशन में और बढ़ गई। तिलक का सुझाव था कि लाला लाजपतराय को अध्यक्ष बनाया जाये। नरमपंथियों ने दादा भाई नौरोजी का अध्यक्ष बना दिया। अंततः मामला शांत हो गया।
- सूरत अधिवेशन में राष्ट्रवादी लाला लाजपतराय को अध्यक्ष बनाना चाहते थे परन्तु नरम दल वालों ने रासबिहारी घोष को प्रत्याशी बनाया। तिलक घोष के अध्यक्ष पद के चुनाव के लिए राजी हो गये जिसके लिए इन्होंने दो शर्तें रखीं—
  1. कांग्रेस के कलकत्ता अधिवेशन में जो प्रस्ताव स्वराज्य स्वदेशी बहिष्कार के बारे में पास किया गया था, उन्हें फिर से पास किया जाए।
  2. घोष के भाषण के जिस अंश में राष्ट्रवादियों की आलोचना है उसे हटा दिया जाए।
- नरमपंथी किसी भी प्रकार के समझौते के लिए तैयार नहीं हुए तथा रासबिहारी घोष अध्यक्ष बने।
- तिलक ने सारा दोष अपने ऊपर ले लिया फिर भी नरमपंथी न माने। नरमपंथी राष्ट्रवादियों की आपत्ति के बावजूद अपने को 'इण्डियन नेशनल कांग्रेस' कहते रहे जबकि राष्ट्रवादी अपने आपको 'नेशनलिस्ट पार्टी' कहने लगे।

Nitin-Gupta.com

GET IT ON Google Play Best Study PDF के लिए हमारी App को Download करें "GK Trick By Nitin Gupta"

नरमदल एवं गरमदल के बीच दूरी बढ़ाने वाले कारक

- 1893 में तिलक ने गणपति समारोह (गणेश उत्सव) का प्रयोग राष्ट्रवादी विचारों के प्रचार-प्रसार के लिए किया।
- 1895 शिवाजी समारोह को राष्ट्रीय त्योहार के रूप में तिलक ने स्थापित किया।
- 1895 के पूना अधिवेशन में तिलक ने तत्कालीन कांग्रेस नेतृत्व पर साफ आरोप लगाया कि वह कांग्रेस को आम जनता तक नहीं ले जाना चाहते हैं।
- 1896-97 में महाराष्ट्र में अकाल पड़ा। अकालग्रस्त किसानों को तिलक ने भू-राजस्व देने से मना कर दिया सरकार ने किसानों को भड़काने के आरोप में तिलक को डेढ़ वर्ष की सजा सुनाई।
- राजनीतिक कारणों से देश के लिए जेल जाने वाले पहले व्यक्ति बाल गंगाधर तिलक थे जो 1883 में जेल गये थे।
- तिलक ने अपने पत्र केसरी में 4 जुलाई 1904 के अंक में लिखा कि ''हमारा श्रम किसी भी तरह सफल नहीं होगा, यदि हम साल में एक बार मेढकों की तरह टर्र-टर्र करते रहेंगे।''

प्रथम विश्व युद्ध के दौरान राष्ट्रीय आन्दोलन

- प्रथम विश्व युद्ध के दौरान हिन्दुस्तान के राजनीतिक मंच पर कई महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए। इनमें कांग्रेस में गरम दल का विलय, कांग्रेस-मुस्लिम लीग पैक्ट तथा होमरूल आन्दोलन महत्वपूर्ण है।

युद्ध काल में कांग्रेस के अधिवेशन

वर्ष	स्थान	अध्यक्ष
1914	मद्रास	भूपेन्द्रनाथ बसु
1915	बम्बई	एस. पी. सिन्हा
1916	लखनऊ	अम्बिका चरण मजूमदार
1917	कलकत्ता	एनी बेसेंट

कांग्रेस में गरमदल का विलय

- 1908 से 1915 तक कांग्रेस नरमदल की पार्टी बनी रही, इस बीच में कांग्रेस की लोकप्रियता में भारी कमी आई।
- 1914 में तिलक माण्डले जेल से रिहा होकर पूना आये। गोखले गरम दल वालों को कांग्रेस में शामिल करने के उद्देश्य से तिलक से मिले, तिलक ने गोखले से कहा कि ''कांग्रेस सबकी है, वह किसी पार्टी को दिया गया उपहार नहीं है। मैं पहले देश को तैयार करुँगा फिर कांग्रेस में प्रवेश करुँगा और उस पर कब्जा कर लूँगा'', इस उत्तर से गोखले संशय में पड़ गए।
- 1915 में गोखले व मेहता की मृत्यु हो गई जिससे कांग्रेस में गरम दल का विरोध ठंडा पड़ गया।
- 27-30 दिसंबर, 1915 के कांग्रेस अधिवेशन बम्बई में कांग्रेस के संविधान में ऐसा परिवर्तन किया गया जिससे गरम दल वालों को शामिल किया जा सके, इसमें महत्वपूर्ण योगदान एनी बेसेंट का था।
- गरम दल वाले 1907 के बाद पहली बार कांग्रेस में शामिल हुए जिसमें तिलक को पूना सार्वजनिक सभा ने अपना प्रतिनिधि बनाकर भेजा था।

कांग्रेस-मुस्लिम लीग पैक्ट

- युद्ध के समय की सबसे महत्वपूर्ण घटना कांग्रेस-मुस्लिम लीग पैक्ट थी जिसमें जिन्ना व तिलक का सबसे महत्वपूर्ण योगदान था।

Nitin-Gupta.com

GET IT ON Google Play Best Study PDF के लिए हमारी App को Download करें "GK Trick By Nitin Gupta"

- इस पैक्ट के निम्न कारण थे :—
  1. ब्रिटेन द्वारा तुर्की से युद्ध किये जाने के कारण भारतीय मुसलमान असंतुष्ट थे।
  2. मुस्लिम लीग का पुराना नेतृत्व समाप्त हो गया, अब नेतृत्व मुसलमानों के अंग्रेजी शिक्षित मध्यम वर्ग के हाथ में था।
- मुस्लिम लीग तथा कांग्रेस का साथ-साथ कार्य करने तथा स्वराज्य लाने की विचारधारा 1914 से आरम्भ हो गई थी तथा इसी के परिणामस्वरूप दिसम्बर 1915 में कांग्रेस व मुस्लिम लीग का अधिवेशन एक साथ बम्बई में हुआ। यहां मुस्लिम लीग के अध्यक्ष मजहरूल हक् थे तथा कांग्रेस के अध्यक्ष एस.पी. सिन्हा थे।
- 1916 में कांग्रेस व मुस्लिम लीग का अधिवेशन लखनऊ में साथ-साथ हुआ। इसमें लीग के अध्यक्ष मु. अली जिन्ना व कांग्रेस के ए.सी. मजूमदार थे। दोनों ने मिलकर एक योजना बनाई जिसे लखनऊ समझौता या कांग्रेस-लीग पैक्ट कहते हैं। इसमें 19 सूत्रीय ज्ञापन तैयार किया गया और ब्रिटिश सरकार से स्वराज्य की मांग की गई।
- कांग्रेस ने मुस्लिम लीग की शर्तों को स्वीकार किया, अल्पसंख्यकों को उनकी जनसंख्या से अधिक अनुपात में उन्हें विधान परिषद में स्थान देने, साम्प्रदायिक प्रतिनिधित्व प्रणाली अपनाने और यदि कोई प्रस्ताव किसी सम्प्रदाय विशेष पर प्रभाव डालता है व उसका विरोध उस सम्प्रदाय के तीन चौथाई सदस्य करेंगे तो इस प्रस्ताव पर विचार नहीं होगा।
- समझौते में यह निहित था कि भारत विभिन्न समुदायों का देश है और उनके हित अलग-अलग हैं।
- आर0सी0 मजूमदार के अनुसार, "1916 में कांग्रेस ने सचमुच 30 वर्ष के बाद पाकिस्तान की नींव डाली।"

होमरूल आन्दोलन

1. तिलक की होमरूल लीग

- तिलक ने होमरूल लीग की स्थापना 28 अप्रैल 1916 को बेलगाँव में की। इसके अध्यक्ष जोसेफ बैपटिस्टा और सचिव एन.सी. केलकर हुए। इसके कमेटी के सदस्यों में जी.एस. खापर्डे, बी.एस. मुंजे और आर.पी. करण्डीकर थे।
- तिलक की होमरूल लीग का क्षेत्र बम्बई को छोड़कर, महाराष्ट्र, कर्नाटक, बरार व मध्य प्रांत था।
- इनका नारा 'स्वराज्य हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है हम इसे लेकर रहेंगे' लोगों के बीच अत्यधिक प्रसिद्ध हुआ।

2. एनी बेसेंट की होमरूल लीग

- सितम्बर 1916 में एनी बेसेंट ने एक होमरूल लीग बनाई।
- मोतीलाल नेहरू तथा तेजबहादुर सप्रू जैसे नेता इनके होमरूल लीग में शामिल थे।

बाल गंगाधर तिलक

- 1897 ई. में अपने समाचार-पत्र केसरी में प्लेग कमिश्नर की हत्या को उचित ठहराने के कारण उन पर राजनीतिक कारणों से 18 माह की सजा दी गई।
- 1908 ई. में पुनः 6 वर्ष के लिए माण्डले जेल (बर्मा) भेजा गया। जेल में रहकर उन्होंने गीता रहस्य (जिसका दूसरा नाम कर्मठ) की रचना की। इसके अतिरिक्त उन्होंने 'ओरायन' तथा Arctic Home in the Vedas की रचना की थी।
- तिलक ने कलकत्ता अधिवेशन (1906 ई.) में कहा : "हम हथियार द्वारा नहीं बल्कि बहिष्कार द्वारा अपना लक्ष्य प्राप्त करेंगे। उन्होंने टैक्स (कर) न देने की भी बात कही।
- 31 जुलाई-1अगस्त, 1920 को तिलक की मृत्यु हो गई।

Nitin-Gupta.com
GET IT ON Google Play Best Study PDF के लिए हमारी App को Download करें "GK Trick By Nitin Gupta"

- एनी बेसेंट ने अपने होमरूल का प्रचार अपने दैनिक पत्र न्यू इण्डिया और कॉमन विल के माध्यम से किया जिसमें न्यू इण्डिया का प्रमुख योगदान रहा।
- एनी बेसेंट भी भारत की पूर्ण स्वतंत्रता नहीं चाहती थीं। इनकी होमरूल लीग अखिल भारतीय थी। एनी बेसेंट स्वयं इसकी अध्यक्ष थीं तथा रामा स्वामी अय्यर इसके सचिव थे।

माँटेंग्यू घोषणा

- तिलक के भीषण आन्दोलन से जनता पूरे जोश से भरी थीं तभी 20 अगस्त, 1917 को भारत सचिव माँटेंग्यू के प्रस्ताव की घोषणा की गई जिसमें ब्रिटिश शासन का लक्ष्य स्वशासित संस्थाओं का क्रमिक विकास था।
- जुलाई 1918 में माँटेंग्यू चेम्सफोर्ड रिपोर्ट प्रकाशित हुई।
- माँटेंग्यू घोषणा को कांग्रेस ने असंतोषजनक व निराशाजनक माना परन्तु नरमवादी नेताओं ने सुरेन्द्रनाथ बनर्जी के नेतृत्व में 17 अगस्त 1918 को एक सभा करके इस रिपोर्ट का स्वागत किया।
- नरमवादी नेताओं ने कांग्रेस से अलग होकर अखिल भारतीय उदारवादी संघ की स्थापना की। माँटेंग्यू ने इसकी स्थापना के लिए खुद ही इनको प्रोत्साहित किया था। इस प्रकार कांग्रेस का दूसरा विभाजन 1918 को हो गया।

कांग्रेस के द्वितीय चरण से सम्बन्धित महत्वपूर्ण तथ्य

- बंगाल विभाजन कर बनाये गये नये प्रांत पूर्वी बंगाल एवं असम का लेफ्टीनेंट गवर्नर बैमफील्ड फुलर को बनाया गया था।
- बंगाल विभाजन के समय सर्वाधिक स्पष्ट वक्ता पत्र 'संध्या' था।
- 1904 में विश्वविद्यालय अधिनियम के विरोध में 'डॉन सोसायटी' की स्थापना हुई थी।
- 1906 का कांग्रेस अधिवेशन कलकत्ता में दादाभाई नौरोजी की अध्यक्षता में हुआ। यही पर पहली बार कांग्रेस स्वराज्य की माँग की।
- कलकत्ता अधिवेशन में दादाभाई नौरोजी के सचिव मुहम्मद अली जिन्ना ने अध्यक्षीय भाषण पढ़ा था।
- 1908 में तिलक को 'रिम्स हार्डिंग' नामक जहाज से मांडले जेल भेजा गया।
- 1906 में गठित अरुण्डेल कमेटी की सिफारिश पर बंगाल विभाजन रद्द कर दिया गया था।
- 1907 का सूरत अधिवेशन कांग्रेस का 23वाँ अधिवेशन था जिसे रद्द कर दिया गया था।
- प्रथम विश्वयुद्ध के दौरान जिन्ना के पत्र 'कामरेड' को बंदकर उन्हें छिंदवाड़ा जेल भेज दिया गया।
- 1908 में तिलक को गिरफ्तार किये जाने पर जिन्ना उनके वकील के रूप में जोरदार वकालत की थी।
- 1914 में एनी बेसेंट कांग्रेस में शामिल हुईं।
- सर सुब्रमण्यम अय्यर ने एनी बेसेंट की गिरफ्तारी के विरोध में सर की उपाधि त्याग दी। ऐसा करने वाले यह प्रथम भारतीय थे।
- लाला लाजपतराय ने अमेरिका में होमरूल लीग की स्थापना की और वहाँ से 'यंग इंडिया' नामक पत्र निकाला।
- उदारवादियों ने माँटेंग्यू घोषणा को **भारत का मैग्नाकार्टा** कहा है।

क्रान्तिकारी आन्दोलन

- देश की स्वतंत्रता के लिए भारत में दो समानांतर आन्दोलन चले।
- पहला संवैधानिक आन्दोलन था जिसका नेतृत्व भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस कर रही थी, और दूसरा हिंसात्मक एवं क्रांतिकारी संघर्ष था जिसका नेतृत्व क्रांतिकारी कर रहे थे।
- दोनों आन्दोलन अलग थे लेकिन दोनों का उद्देश्य एक

Nitin-Gupta.com

GET IT ON Google Play Best Study PDF के लिए हमारी App को Download करें "GK Trick By Nitin Gupta"

ही था भारत की स्वतंत्रता।

क्रांतिकारी आन्दोलन के उदय के कारण

1. ब्रिटिश सरकार की शोषणकारी नीतियाँ।
2. कांग्रेस की आवेदन-निवेदन नीति की असफलता।
3. अन्तर्राष्ट्रीय घटनायें।
4. बंगाल विभाजन
5. स्वदेशी-बहिष्कार आन्दोलन का क्रूरतापूर्ण दमन।

- 19वीं शताब्दी के अंत एवं 20वीं शताब्दी के प्रारम्भ में क्रान्तिकारी आन्दोलन की शुरुआत हुई।

प्रथम चरण का क्रान्तिकारी आन्दोलन (1897 ई.)

महाराष्ट्र

व्यायाम मंडल

- इसकी स्थापना 1897 में दामोदर हरि चापेकर एवं बालकृष्ण हरि चापेकर (चापेकर बंधु) ने पूना में की थी। इसका उद्देश्य विशुद्ध राजनीतिक था।
- दामोदर हरि चापेकर एवं कुछ अन्य साथियों ने पूना में 22 जून 1897 को रैंड एवं आर्यस्ट नामक दो अंग्रेज अधिकारियों की गोली मारकर हत्या कर दी।

अभिनव भारत

- 1899 में नासिक में गणपति उत्सव मनाने के सिलसिले में मित्रमेला की स्थापना हुई।
- सावरकर बन्धु (गणेश दामोदर सावरकर एवं विनायक दामोदर सावरकर) इसके प्रमुख सदस्य बने।
- 1904 में नासिक में वी.डी. सावरकर ने '**अभिनव भारत**' की स्थापना की।
- अभिनव भारत की शाखायें महाराष्ट्र के अतिरिक्त कर्नाटक एवं मध्य प्रांत में भी फैली थीं।
- 1909 में गणेश दामोदर सावरकर को मित्रमेला के लिए कविताओं की दो पुस्तकें लिखने के कारण आजीवन निर्वासन की सजा सुनाई गई।
- वी.डी. सावरकर को लंदन से गिरफ्तार करके नासिक लाया गया और अनेक लोगों के साथ इन पर मुकदमा चला जिसे नासिक षडयंत्र केस के नाम से जाना जाता है।
- वी.डी. सावरकर को आजीवन निर्वासन की सजा सुनाई गई।
- नासिक षडयंत्र केस ने महाराष्ट्र के क्रान्तिकारियों की कमर तोड़ दी।

बंगाल

अनुशीलन समिति

- बंगाल में क्रान्तिकारियों का पहला महत्वपूर्ण संगठन अनुशीलन समिति बना।
- 1903 ई. में इसकी स्थापना कलकत्ता में प्रमथनाथ मित्र एवं सतीश चन्द्र बोस ने मिलकर की थी।
- इसके अध्यक्ष प्रमथनाथ मित्र एवं उपाध्यक्ष अरविन्द घोष एवं चितरंजन दास थे।
- बारीन्द्र घोष ने 1905 में भवानी मंदिर एवं 1907 में वर्तमान रणनीति नामक पुस्तक प्रकाशित की।
- अनुशीलन समिति के बारीन्द्र गुट ने क्रान्ति का खुलकर प्रचार-प्रसार करने के लिए 1906 में युगान्तर नामक पत्र निकालना प्रारम्भ किया।
- 1908 में युगान्तर के प्रकाशन पर रोक लगा दी गई।
- 30 अप्रैल 1908 को मुजफ्फरपुर में खुदीराम बोस एवं प्रफुल्ल चाकी ने यहाँ के जिला जज डी.एच. किंग्सफोर्ड को मारने के लिए बम फेंका दुर्भाग्य से जिस गाड़ी पर बम गिरा उस पर कैनेडी की पत्नी एवं पुत्री बैठी थीं, दोनों की मृत्यु हो गई।
- खुदीराम बोस गिरफ्तार कर लिये गये और इन्हें फांसी की सजा दी गई। ये सबसे कम उम्र में फांसी पर चढ़ने वाले क्रांतिकारी थे प्रफुल्ल चाकी स्वयं को गोली मार ली।

Nitin-Gupta.com

GET IT ON Google Play Best Study PDF के लिए हमारी App को Download करें "GK Trick By Nitin Gupta"

उ. प्र., पंजाब एवं दिल्ली

भारत माता समिति

उ. प्र., पंजाब एवं दिल्ली में क्रान्तिकारी आन्दोलन के प्रणेता जतीन्द्र मोहन चटर्जी थे। इन्होंने 1904 में सहारनपुर में भारत माता समिति की स्थापना की।

- इनके साथ अजीत सिंह, लाला हरदयाल, सूफी अंबाप्रसाद और मास्टर अमीर चन्द्र जैसे क्रान्तिकारी जुड़ गये।
- अजीत सिंह ने मुहिब्बाने-वतन नामक अपनी भी एक क्रान्तिकारी संस्था स्थापित की थी।
- जतीन्द्र मोहन चटर्जी के बाद इस क्षेत्र के क्रान्तिकारी आन्दोलन का नेतृत्व मास्टर अमीर चन्द्र के हाथों में आया।
- मास्टर अमीरचन्द्र के साथ बंगाल के क्रान्तिकारी रासबिहारी बोस, बसंत विश्वास मन्मथ विश्वास आदि जुड़ गये।
- 23 दिसम्बर, 1912 को दिल्ली में वायसराय हार्डिंग पर बम फेंका गया। दुर्भाग्य से बम दूर गिरा और हार्डिंग बच गया।

विदेशों में क्रान्तिकारी आन्दोलन

इंग्लैंड में

- लंदन में जनवरी 1905 में श्याम जी कृष्ण वर्मा ने इंडिया होमरूल लीग की स्थापना की। और उसका मुख्य पत्र इंडियन सोशियोलाजिस्ट निकालना प्रारम्भ किया। इसमें उन्होंने स्पष्ट कहा कि इसका उद्देश्य भारत के लिए स्वराज्य प्राप्त करना है।
- इस होमरूल लीग के अध्यक्ष श्यामजी कृष्ण वर्मा तथा उपाध्यक्ष अब्दुल्ला सुहरावर्दी थे।
- लंदन में श्यामजी कृष्ण वर्मा भारतीयों के लिए इंडिया हाउस नामक हास्टल की स्थापना की, जो क्रान्तिकारियों का अड्डा बन गया।
- लंदन में 1 जुलाई, 1909 को मदनलाल ढींगरा ने कर्जन वायली की गोली मारकर हत्या कर दी। ढींगरा को फांसी दे दी गई।

पेरिस

- ब्रिटेन के हाउस ऑफ कामन्स में इंडिया हाउस के बारे में प्रश्न उठे। इस स्थिति को समझते हुए श्यामजी कृष्ण वर्मा ब्रिटेन छोड़कर पेरिस आ गये।
- पेरिस में श्यामजी कृष्ण वर्मा की सहयोगी मैडम भीकाजी कामा थीं। इन्होंने यूरोप एवं अमेरिका में ब्रिटिश साम्राज्यवादियों के विरुद्ध प्रचार-प्रसार किया।
- 1907 में स्टुटगार्ड में अन्तर्राष्ट्रीय समाजवादी कांग्रेस में भाग लिया। यहाँ पर इन्होंने भारत में ब्रिटिश शोषण पर भाषण दिया। यहाँ पर इन्होंने भारत का राष्ट्रीय तिरंगा फहराया जिसका रंग हरा पीला और लाल था।

अमेरिका

गदर आन्दोलन

- गदर दल के संस्थापक लाला हरदयाल थे। इन्होंने 1 नवंबर 1913 को अमेरिका के सैनफ्रैंसिस्को नगर में गदर दल की स्थापना की।
- इस दल ने गदर नामक पत्र भी प्रकाशित किया। प्रारम्भ में यह उर्दू एवं गुरुमुखी में प्रकाशित होता था। बाद में यह हिन्दी एवं अंग्रेजी में भी प्रकाशित होने लगा।

तोषामारु कांड

- गदर दल के कुछ सदस्य तोषामारु नामक जहाज से भारत लौट रहे थे। जब जहाज सिंगापुर में रुका तो यहाँ एक क्रान्तिकारी परमानंद के भाषण से अनेक भारतीय सैनिकों में राष्ट्रीय भावना जागृत हुई।
- सिंगापुर लाइट इन्फेन्ट्री के जवानों ने चिश्ती खाँ एवं उण्डे खाँ के नेतृत्व में विद्रोह कर दिया और अंग्रेजी सैनिक अड्डों पर कब्जा कर लिया और तिरंगा झंडा लहराया।
- इसे सिंगापुर क्रान्ति के नाम से जाना जाता है।

Nitin-Gupta.com

GET IT ON Google Play Best Study PDF के लिए हमारी App को Download करें "GK Trick By Nitin Gupta"

कामागाटामारु कांड

- इस कांड के नेता पंजाब के गुरुदित्त सिंह थे।
- इन्होंने मार्च 1914 में एक जापानी जहाज कामागाटामारु को किराये पर लिया और हांगकांग से इसमें 376 यात्रियों को लेकर कनाडा स्थित बैकुंवार को रवाना हुआ।
- 23 मई 1914 को यह जहाज बैंकुवार पहुँचा लेकिन कनाडा के अधिकारियों ने यात्रियों को उतरने की अनुमति नहीं दी।
- 23 जुलाई 1914 को यह जहाज बैकुंवार से भारत के लिए रवाना हुआ। रास्ते में दो भारतीय क्रान्तिकारी भगवान सिंह एवं बरकतुल्ला ने जोशीला भाषण देकर यात्रियों को भारत में ब्रिटिश सरकार के खिलाफ बगावत करने को कहा।
- 29 सितम्बर, 1914 को यह जहाज कलकत्ता पहुँचा। यहाँ यात्रियों ने हंगामा मचा दिया जिसमें पुलिस कार्यवाही हुई।
- सरकारी रिपोर्ट के अनुसार 20 यात्री मारे गये। 202 यात्रियों को जेल भेज दिया गया। गुरिदित्त सिंह सहित शेष भागने में सफल रहे।

अंतरिम सरकार–दिसम्बर 1915

- अलीगढ़ में जन्में राजा महेन्द्र प्रताप का वास्तविक नाम खड्गसिंह था।
- भारतीय क्रान्तिकारियों में देश को स्वतंत्र कराने के उद्देश्य से सर्वाधिक विदेश यात्रा इन्होंने ही की थी।
- ये जर्मन सम्राट विलियम कैशर से सहायता के लिए मिले।
- दिसम्बर 1915 में काबुल में भारत की अंतरिम सरकार की स्थापना राजा महेन्द्र प्रताप ने की।
- ये स्वयं अंतरिम सरकार के अध्यक्ष (राष्ट्रपति) तथा बरकतुल्ला प्रधानमंत्री बने।
- जर्मनी ने इस सरकार को मान्यता दी थी। यह सरकार 1919 तक चली।

द्वितीय चरण का क्रान्तिकारी आन्दोलन

- द्वितीय चरण का क्रान्तिकारी आन्दोलन गाँधीजी के असहयोग आन्दोलन की असफलता एवं 1917 की रूसी क्रान्ति के कारण प्रारम्भ हुआ।

हिन्दुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन

- 1924 में कानपुर में शचीन्द्रनाथ सान्याल के नेतृत्व में हिन्दुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन की स्थापना हुई।
- इसका उद्देश्य सशस्त्र क्रान्ति के माध्यम से औपनिवेशिक सत्ता को उखाड़ फेंकना था।
- 8 सितम्बर, 1928 को दिल्ली के फिरोजशाह कोटला मैदान में इसके सदस्यों ने एक सभा करके समाजवाद को अपना लक्ष्य घोषित किया और संगठन का नाम बदलकर हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन कर दिया।

काकोरी षडयंत्र केस

- 9 अगस्त, 1925 को सहारनपुर से आने वाली 8 डाडन ट्रेन को काकोरी रेलवे स्टेशन के पास रोककर क्रान्तिकारियों ने ट्रेन में रखे सरकारी खजाने को लूट लिया।
- इसके कुछ अभियुक्त गिरफ्तार कर लिए गये और उन पर काकोरी षडयंत्र केस के नाम पर मुकदमा चला।
- क्रान्तिकारियों की तरफ से चन्द्रभान गुप्त ने पैरवी की जो उ. प्र. के मुख्यमंत्री बने थे।
- 4 क्रान्तिकारियों को फांसी दी गई वे थे—

1. रामप्रसाद बिस्मिल	गोरखपुर में
2. अशफाक उल्ला	फैजाबाद में
3. रोशनसिंह	इलाहाबाद (नैनी) में
4. राजेन्द्र लाहिड़ी	गोंडा में

Nitin-Gupta.com

GET IT ON Google Play Best Study PDF के लिए हमारी App को Download करें "GK Trick By Nitin Gupta"

नवजवान भारत सभा

- 1926 ई. में भगतसिंह, छबीलदास और यशपाल आदि नवयुवकों ने नवजवान भारत सभा की स्थापना लाहौर में किया।
- इसके अध्यक्ष रामकिशन, महामंत्री भगतसिंह तथा प्रचारमंत्री भगवती चरण बोहरा थे।
- भगवतीचरण बोहरा ने **'बम का दर्शन'** नामक पुस्तिका लिखी। बाद में एक बम दुर्घटना में ही इनकी मृत्यु हो गई।

साण्डर्स हत्याकांड (1928 ई.)

- साइमन कमीशन के विरोध में लाला लाजपतराय पुलिस के लाठीचार्ज से घायल हुए और अन्ततः इनकी मृत्यु हो गई।
- इनकी मृत्यु का बदला लेने के लिए भगतसिंह, चन्द्रशेखर आजाद, राजगुरु, सुखदेव और जयगोपाल ने एस्कार्ट को मारने का निश्चय किया। परन्तु गलती से गोली साण्डर्स और उसके रीडर चन्दन सिंह को लगी और दोनों की मृत्यु हो गई।
- बाद में जयगोपाल ने गद्दारी की और क्रान्तिकारियों के सारे राज पुलिस को बता दिया। पुलिस ने इसे सरकारी गवाह बना लिया।

केन्द्रीय विधान सभा में बम फेंकना

- 8 अप्रैल, 1929 को भगतसिंह एवं बटुकेश्वरदत्त ने लोक सुरक्षा विधेयक के विरोध में केन्द्रीय विधानसभा में बम फेंका क्योंकि गवर्नर जनरल ने केन्द्रीय विधानसभा की नामंजूरी के बाद भी इस विधेयक को पासकर दिया था जबकि इससे नागरिक स्वतंत्रताओं का घोर हनन हो रहा था।
- क्रान्तिकारी अपना उद्देश्य इसके द्वारा बहरों को सुनाना बताया। यह बम नुकसान पहुँचाने वाला नहीं था।
- भगतसिंह एवं बटुकेश्वर दत्त दोनों ने अपनी गिरफ्तारी दी।
- इस कांड के लिए इन्हें आजीवन कारावास की सजा सुनाई गई।
- 23 मार्च, 1931 को भगतसिंह, राजगुरु एवं सुखदेव को लाहौर में फांसी दे दी गई।

चटगाँव रिपब्लिकन आर्मी

- इसके संस्थापक सूर्यसेन थे। जो 'मास्टर दा' के नाम से प्रसिद्ध थे।
- इस संगठन के अन्य महत्वपूर्ण सदस्य थे गणेश घोष, लोकनाथ बाउल, अनंत सिंह, कल्पना दत्ता, प्रीतिलता वाडेकर आदि।
- अप्रैल 1930 में गणेश घोष के नेतृत्व में चटगाँव शस्त्रागार पर हमला किया और अस्त्र-शस्त्र लूट लिया।
- पहाड़तल्ला स्थित यूरोपीय क्लब में प्रीतिलता ने हमला किया। लेकिन गिरफ्तारी के भय से इन्होंने पोटैशियम सायनाइड खाकर आत्महत्या कर ली।
- 1933 में सूर्यसेन को गिरफ्तार कर लिया गया और 1934 में इन्हें फांसी दे दी गई।

- 27 फरवरी, 1931 को चन्द्रशेखर आजाद इलाहाबाद के अल्फ्रेड पार्क में पुलिस से घिर जाने के कारण स्वयं गोली मारकर शहीद हो गये।

माइकल ओ डायर हत्याकांड (1940 ई.)

- लंदन के कैक्सटन हाल में ईस्ट इंडिया एसो. तथा रवायल सेन्ट्रल एशियन सोसायटी के संयुक्त तत्वावधान में 13 मार्च, 1940 को एक सभा हो रही थी।
- ऊधम सिंह जिन्होंने जलियाँवाला बाग हत्याकांड को अपनी आँखों से देखा था। माइकल ओ डायर को गोली मारकर हत्या कर दी। इन्हें फांसी दे दी गई।

Nitin-Gupta.com

GET IT ON Google Play Best Study PDF के लिए हमारी App को Download करें "GK Trick By Nitin Gupta"

मुस्लिम लीग की स्थापना

- दिसम्बर 1906 में मुस्लिम एजुकेशन कान्फ्रेन्स के सिलसिले में विभिन्न प्रान्तों के प्रतिनिधि ढाका में एकत्र हुए।
- ढाका के नवाब सलीमुल्ला मुस्लिम समुदाय के हितों की देखभाल के लिए एक केन्द्रीय संगठन गठित किये जाने का प्रस्ताव दिया।
- 30 दिसम्बर 1906 को ढाका में मुस्लिम लीग की स्थापना हुई। इस सभा की अध्यक्षता नवाब बकर-उल-मुल्क ने की।
- मुस्लिम लीग का संविधान करांची में दिसम्बर 1907 में बनाया गया। इसके निम्न उद्देश्य थे—
  1. भारत के मुसलमानों में ब्रिटिश सरकार के प्रति वफादारी को बढ़ाना तथा सरकार के प्रति गलतफहमी को दूर करना।
  2. भारत के मुसलमानों के राजनीतिक एवं अन्य अधिकारों की रक्षा करना, तथा उनकी मांगों को सरकार के समक्ष विनम्रतापूर्वक रखना।
- सर आगा खाँ को मुस्लिम लीग का स्थायी अध्यक्ष चुना गया जो 1913 तक इसके अध्यक्ष रहे।

दो राष्ट्र का सिद्धान्त

- मुसलमान एवं हिन्दू एक राष्ट्र नहीं है बल्कि दो राष्ट्र है। (जिन्ना)
- 1930 में मुस्लिम लीग का अधिवेशन इलाहाबाद में हुआ यहाँ पर मुहम्मद इकबाल ने मुसलमानों के लिए पृथक राज्य की माँग की। इन्हें दो राष्ट्र सिद्धान्त (Two Nation Theory) का जनक माना जाता है।

पाकिस्तान

- मुसलमानों के पृथक देश जिसे **पाकिस्तान** कहा जाये इस प्रकार का निश्चित विचार कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय के एक विद्यार्थी चौधरी रहमत अली के मन में उत्पन्न हुआ।
- इसके अनुसार पंजाब, उ. प. सीमा प्रान्त, कश्मीर, सिन्ध तथा बलूचिस्तान को भारतीय मुसलमानों का राष्ट्रीय देश होना चाहिए। और इसे पाकिस्तान कहा जाये।
- पाकिस्तान शब्द इनमें से प्रथम चार प्रान्तों के प्रथम तथा पाँचवे प्रांत के अन्तिम अक्षरों को लेकर बनाया गया है।
- 1933 में चौधरी रहमत अली ने 4 पेज का एक पम्पलेट प्रकाशित किया जिसमें प्रथम बार पाकिस्तान शब्द का प्रयोग किया गया।
- 1940 के मुस्लिम लीग के लाहौर अधिवेशन में जिसकी अध्यक्षता मु. अली जिन्ना ने की, पाकिस्तान प्रस्ताव प्रस्तुत किया। इस प्रस्ताव को फजलुल हक ने प्रस्तुत किया।

कांग्रेस आन्दोलन का तीसरा चरण (1919-1947 ई.)

गाँधी युग (1919-47 ई.)

- भारतीय राजनीति के क्षितिज पर महात्मा गाँधी का उदय इतिहास की एक महत्वपूर्ण घटना है।
- गाँधी जी का भारतीय राजनीति में प्रवेश रोलेट ऐक्ट के विरोध में 1919 ई. में हुआ।
- 1915 में भारत आगमन के समय यहाँ कि परिस्थितियाँ इनके अनुकूल थीं।

महात्मा गाँधी

- महात्मा गाँधी का जन्म 2 अक्टूबर 1869 ई. को गुजरात प्रांत के पोरबंदर नामक स्थान पर हुआ था।
- इनका वास्तविक नाम मोहनदास था। इनके पिता का नाम करमचन्द्र गाँधी था तथा माता का नाम पुतलीबाई था।
- 13 वर्ष की आयु में इनका विवाह कस्तूरबा के साथ हुआ था।

Nitin-Gupta.com

GET IT ON Google Play Best Study PDF के लिए हमारी App को Download करें "GK Trick By Nitin Gupta"

- 1888 ई. में कानून की शिक्षा प्राप्त करने के लिए ये इंग्लैंड गये।
- 1891 में इन्हें बैरिस्टर की डिग्री प्राप्त हुई और इसी वर्ष ये भारत आ गये।
- इसके बाद इन्होंने राजकोट में वकालत प्रारम्भ की।
- 1893 में एक गुजराती व्यापारी दादा अब्दुल्ला के मुकदमे के पैरवी के लिए दक्षिण अफ्रीका गये।
- महात्मा गाँधी के जीवन में ''मोरित्सबर्ग कांड' से महत्वपूर्ण परिवर्तन आया।
- जब वे डरबन से प्रिटोरिया रेलवे कोच के प्रथम श्रेणी के डिब्बे में यात्रा कर रहे थे तो मोरित्सबर्ग नामक स्थल में एक अंग्रेज ने उन्हें जबरदस्ती प्रथम श्रेणी के डिब्बे से उतार दिया।
- 1894 में इन्होंने नटाल इंडियन कांग्रेस की स्थापना की।
- 1901 में गाँधी भारत आये एवं कलकत्ता कांग्रेस में सम्मिलित हुए, 1902 में पुनः दक्षिण अफ्रीका चले गये।
- 1903 में गाँधी जी दक्षिण अफ्रीका से **'इंडियन ओपीनियन'** नामक पत्र निकालना प्रारम्भ किया।
- 1904 में डरबन से 84 मील दूर फीनिक्स में आश्रम की स्थापना की।
- 1906 में गाँधी जी पहली बार दक्षिण अफ्रीका में सत्याग्रह दर्शन का विकास किया। परवाना कानून के विरुद्ध इन्होंने सत्याग्रह आन्दोलन किया।
- इन्होंने अपने सत्याग्रह दर्शन में सत्य के साथ अहिंसा को भी स्थान दिया अर्थात् अहिंसा पर आधारित सत्य के लिए संघर्ष करना ही सत्याग्रह है।
- 1908 में गाँधीजी दक्षिण अफ्रीका में ही पहली बार जेल गये।
- 1909 में इंग्लैंड से द० अफ्रीका आते समय जल जहाज में ही इन्होंने 'हिन्द स्वराज' नामक पुस्तक गुजराती भाषा में लिखा। इस पुस्तक में इन्होंने स्वराज की व्याख्या की है।
- 1910 में इन्होंने जोहाँसबर्ग में 'टालस्टाय फार्म' की स्थापना की। जर्मनी के केलनबेक इन्हें जमीन प्रदान की थी।
- 1914 में प्रथम विश्व युद्ध के समय में इंग्लैंड गये और लंदन में रहने वाले भारतीयों को सम्मिलित कर एक 'एम्बुलेंस कोर' का गठन किया। जिसका कार्य था युद्ध भूमि में घायल ब्रिटिश सैनिकों को ढोकर अस्पताल तक पहुँचाना।
- ब्रिटिश सरकार ने गाँधीजी के इस सेवा के बदले में 1915 में कैशर-ए-हिन्द की उपाधि दी।
- जनवरी 1915 में गाँधी जी भारत आये और अपने राजनीतिक गुरु गोपालकृष्ण गोखले के सुझाव पर अहमदाबाद में साबरमती आश्रम की स्थापना की। जिसका उद्देश्य था भारतवासियों को सत्याग्रह दर्शन से परिचित कराना।

महात्मा गाँधी — पुस्तकें व पत्र

1909 में	हिन्द स्वराज	गुजराती भाषा में लिखा
1919 में	नवजीवन (पत्र दैनिक)	गुजराती एवं हिन्दी में प्रकाशित किया
1919 में	यंग इंडिया (पत्र साप्ताहिक)	अंग्रेजी में प्रकाशित किया
1925 में प्रारम्भ किया	द स्टोरी ऑफ माई एक्सपेरीमेंट विद ट्रुथ	अंग्रेजी में आत्मकथा
1933 में	हरिजन (साप्ताहिक पत्र)	अंग्रेजी एवं हिन्दी में

महात्मा गाँधी से सम्बन्धित विशिष्ट तथ्य

- गाँधी जी अपना पहला सार्वजनिक भाषण 1889 में लंदन में निरामिषहारियों की एक सभा में दिया।
- 1899 में गाँधी जी बोअर के युद्ध में अंग्रेजों की सहायता की।
- गाँधीजी ने रवीन्द्रनाथ टैगोर को 'गुरुदेव' की उपाधि दी।

Nitin-Gupta.com

GET IT ON Google Play Best Study PDF के लिए हमारी App को Download करें "GK Trick By Nitin Gupta"

- गाँधीजी ने 1920 में अहमदाबाद में गुजरात विद्यापीठ की स्थापना की।
- गाँधी जी ने 1920 में कैशर-ए-हिन्द उपाधि का त्याग किया।
- इन्होंने 1925 में **'अखिल भारतीय चरखा बुनकर संघ'** की स्थापना की।
- 1934 में इन्होंने **'अखिल भारतीय ग्रामोद्योग संघ'** की स्थापना की।
- 1932 में इन्होंने हरिजन संघ की स्थापना की एवं 1933 में साबरमती आश्रम को **हरिजन संघ** को दान में दे दिया।
- हरिजन संघ के अध्यक्ष **घनश्याम दास बिड़ला** थे।
- महात्मा गाँधी को पहली बार **राष्ट्रपिता** सुभाषचन्द्र बोस ने एवं **बापू** जवाहर लाल नेहरू ने कहा था।
- महात्मा गाँधी का सबसे प्रिय भजन ''वैष्णव जन को तैनू कहिए'' इसकी रचना गुजराती कवि नरसी मेहता ने किया था।
- महात्मा गाँधी के चार पुत्र थे, उनके पाँचवे पुत्र के नाम से गुजराती व्यवसायी **जमनालाल बजाज** प्रसिद्ध थे।
- गाँधी जी की हत्या 30 जनवरी, 1948 को दिल्ली के बिरला भवन में प्रार्थना सभा में जाते हुए शाम को नाथूराम गोडसे ने कर दी। गाँधी जी का अंतिम संस्कार **राजघाट** में किया गया।

गांधीजी के भारत में सत्याग्रह सम्बन्धी प्रयोग

चम्पारन आन्दोलन (अप्रैल 1917)

- 19वीं शताब्दी के प्रारम्भ में अंग्रेज बागान मालिकों ने किसान से यह करार करा लिया था कि वे अपनी भूमि के 3/20 हिस्से पर नील की खेती अवश्य करेंगे, इसी को तिनकठिया पद्धति भी कहा जाता है।
- 19वीं शताब्दी के अंत तक जर्मनी के रासायनिक रंगों ने नील बाजार को खत्म कर दिया था।
- चम्पारन के यूरोपीय बागान मालिक अपने कारखाने बन्द करने के लिए बाध्य हुए और किसान भी नील की खेती से मुक्ति चाहते थे।
- 1917 में चम्पारन के राजकुमार शुक्ल ने अपने प्रयासों द्वारा गांधीजी को चम्पारन बुलाया।
- गांधीजी के चम्पारन पहुँचने पर कमिश्नर ने तुरंत चले जाने को कहा परन्तु गांधीजी नहीं माने। अंततः उन्हें चम्पारन के गाँव में जाने की छूट दे दी गई। यहां पर गांधीजी के सहयोगी महादेव देसाई, जे.बी. कृपलानी, डॉ. राजेन्द्र प्रसाद, बृज किशोर, मजहरुल हक और नरहरि पारिख थे।
- गांधीजी आयोग को ये समझाने में पूर्णतः सफल रहे कि तिनकठिया प्रणाली समाप्त होनी चाहिए और जो धन अवैध रूप से वसूला गया है उसके लिए हर्जाना दिया जाना चाहिए।
- अंग्रेज निलहों ने 25% वापस करने के लिए राजी हो गए और गांधीजी ने इसे स्वीकार कर लिया।

अहमदाबाद का मिल मजदूर आन्दोलन (1918 ई.)

- चम्पारन के बाद गांधीजी ने अहमदाबाद के मिल मजदूर आन्दोलन के समर्थन में आन्दोलन किया। यहां का विवाद प्लेग बोनस को लेकर था।
- जब प्लेग की समाप्ति हुई तो मिल मालिक बोनस को समाप्त करना चाहते थे। मजदूरों ने इसका विरोध किया तथा गांधीजी ने मजदूरों को हड़ताल पर जाने को कहा और ये घोषणा की कि उन्हें 35% बोनस मिलना चाहिए क्योंकि प्रथम विश्व युद्ध के कारण महंगाई काफी बढ़ चुकी थी।
- गांधी जी अनशन पर बैठ गए तब मिल मालिकों ने यह मामला न्यायाधिकरण को सौंपने का फैसला किया।

Nitin-Gupta.com

GET IT ON Google Play Best Study PDF के लिए हमारी App को Download करें "GK Trick By Nitin Gupta"

न्यायाधिकरण ने 35% बोनस देने का फैसला सुनाया और इस तरह गांधीजी का यह सत्याग्रह भी सफल रहा।

खेड़ा आन्दोलन (गुजरात) 1918 ई.

- खेड़ा जिले में फसल नष्ट हो जाने के बाद भी सरकार किसानों से लगान वसूल रही थी। यह खबर गांधी जी को प्राप्त हुई, तब वह सर्वेंट ऑफ इण्डिया सोसायटी के सदस्य बिट्ठल भाई पटेल के साथ यहां पहुँचे।
- इस मामले की जांच के बाद यह निष्कर्ष निकाला कि लगान माफ कर देना चाहिए, गांधीजी ने किसानों से लगान न देने के लिए कहा।

महत्वपूर्ण तथ्य

- महात्मा गांधी ने भारत में अपना पहला जनभाषण 1917 में चम्पारण में दिया।
- दक्षिण अफ्रीका में जब गांधीजी डरबन से प्रिटोरिया जा रहे थे तो 'पीटरमारित्सबर्ग' रेलवे स्टेशन पर एक अंग्रेज ने इन्हें प्रथम श्रेणी के डिब्बे से फेंक दिया था। इससे गांधीजी को यह व्यक्तिगत अनुभव मिला कि दक्षिण अफ्रीका में भारतीयों के साथ कितना दुर्व्यवहार होता है।
- महात्मा गांधी के राजनीतिक गुरु गोपाल कृष्ण गोखले ने इन्हें आदेशित किया था कि वह भारत में प्रथम वर्ष ''खुले कान पर मुँह बंद कर'' व्यतीत करें।
- गांधीजी दक्षिण अफ्रीका में 1903 में ट्रस्टीशिप के सिद्धान्त को प्रतिपादित किया। गांधीजी ने 1903 में जोहांसबर्ग में लॉ फर्म स्थापित किया था, यहीं पर इन्होंने ट्रस्टीशिप का सिद्धांत प्रतिपादित किया था।
- गांधीजी रस्किन की पुस्तक 'अन टू दिस लास्ट' से सर्वाधिक प्रभावित हुए थे।

रौलेट एक्ट (1919 ई.)

- 1917 में सर सिडनी रौलेट की अध्यक्षता में एक कमेटी यह जाँच करने के लिए नियुक्त की गई कि भारत में किस स्तर तक क्रांतिकारी आन्दोलन सम्बन्धी षड़यंत्र फैले हुए हैं और इनका मुकाबला करने के लिए कैसे कानूनों की आवश्यकता है।
- 18 मार्च, 1919 को रौलेट एक्ट स्वीकृत हुआ जिसकी अवधि 3 वर्ष रखी गई।
- इसका अधिकृत नाम 'क्रांतिकारी एवं अराजकतावादी अपराध अधिनियम, 1919' था।
- इस एक्ट से गांधी जी को अत्यन्त आघात पहुँचा जिसके कारण वे अंग्रेजी सरकार के विरोधी हो गए। इसके विरोध में गाँधी जी देशव्यापी सत्याग्रह करने का निर्णय लिया।
- सत्याग्रह आन्दोलन की तिथि 6 अप्रैल, 1919 निर्धारित की गई।
- अमृतसर में 10 अप्रैल को पंजाब कांग्रेस के दो प्रमुख नेता डॉ. सत्यपाल और डॉ. सैफुद्दीन किचलू की गिरफ्तारी के खिलाफ टाउन हॉल और पोस्ट ऑफिस पर हमले किये गए। प्रशासन ने सेना बुलाई और नगर प्रशासन का दायित्व जनरल डायर को सौंप दिया। डायर ने जनसभायें आयोजित करने पर प्रतिबन्ध लगा दिया।

Nitin-Gupta.com

GET IT ON Google Play Best Study PDF के लिए हमारी App को Download करें "GK Trick By Nitin Gupta"

जलियांवाला बाग नरसंहार (1919 ई.)

- पंजाब के दो लोकप्रिय नेता डॉ. सत्यपाल और डॉ. सैफुद्दीन किचलू की गिरफ्तारी के बाद जनता का आक्रोश तेज हो गया। कई जगह हिंसाएं हुई।
- अमृतसर शहर में 13 अप्रैल, 1919 ई. को संध्या पांच बजे जलियांवाला बाग में विशाल सभा में रौलेट एक्ट, डॉ. सत्यपाल आदि के बारे में भाषण चल रहा था तभी सैन्य अधिकारी ब्रिगेडियर जनरल 'रोगिनाल्ड डायर' ने फौज द्वारा भीड़ पर गोली चलाने का आदेश दे दिया। इस घटनाकाण्ड में लगभग 1500 लोग मारे गये, वैसे सरकारी आंकड़ों के अनुसार मारे गए लोगों की संख्या 379 और घायलों की संख्या 1200 बताई गई थी।
- जलियांवाला बाग नरसंहार के विरोध में रवीन्द्र नाथ टैगोर ने ब्रिटिश सरकार द्वारा प्रदत्त सर या 'नाइटहुड' की उपाधि वापस कर दी। शंकरन नायर ने वायसराय की परिषद से इस्तीफा दे दिया।
- जलियांवाला बाग हत्याकाण्ड के समय पंजाब प्रान्त का लेफ्टिनेंट गवर्नर माइकल ओ डायर था, जिसकी हत्या 1940 ई. में ऊधम सिंह ने लंदन में कर दी। ऊधम सिंह को पकड़कर मृत्युदण्ड दे दिया गया।
- हंसराज नामक व्यक्ति ने सभा बुलाई थी। यह सरकारी गवाह बन गया था।
- जलियांवाला बाग नरसंहार के समय भारत का वायसराय लार्ड चेम्सफोर्ड (1916-21 ई.) था।
- ब्रिटिश सरकार ने जलियांवाला बाग हत्याकाण्ड की जांच हेतु हण्टर कमेटी 1919 ई. (अध्यक्ष जी.सी. हण्टर) की स्थापना की।
- इसी आधार पर जनरल डायर को सेना की नौकरी से बर्खास्त कर दिया गया।

खिलाफत एवं असहयोग आन्दोलन (1920-22 ई.)

- प्रथम विश्व युद्ध के बाद मुसलमानों एवं हिन्दुओं में एक आश्चर्यजनक एकता आई। प्रथम विश्व युद्ध में तुर्की मित्र राज्यों द्वारा पराजित हुआ और उसके साम्राज्य के अधिकांश भाग को ब्रिटेन और फ्रांस ने आपस में बांट लिया।
- भारतीय मुसलमान तुर्की के सुल्तान जो खलीफा भी था, इस दृष्टि से वह संसार के मुसलमानों का धार्मिक प्रधान भी था उसकी स्थिति के प्रति सशंकित हो गये।
- भारतीय मुसलमानों ने मौलाना मुहम्मद अली और शौकत अली मौलाना आजाद, हकीम अजमल खाँ और हसरत मोहानी के नेतृत्व में एक खिलाफत समिति की स्थापना की। इसका उद्देश्य तुर्की साम्राज्य के बँटवारे के खिलाफ खलीफा के पक्ष में आन्दोलन करना था।
- खिलाफत समिति के अध्यक्ष बम्बई के सेठ छोटानी थे।
- 1919 में दिल्ली तथा 1920 में केन्द्रीय खिलाफत समिति ने कलकत्ता अधिवेशन में सरकार के साथ सहयोग न करने का प्रस्ताव स्वीकार किया।
- गांधीजी ने खिलाफत के प्रश्न को हिन्दुओं और मुसलमानों को एक राष्ट्रीय मंच पर लाने के अवसर के रूप में देखा।
- 1 अगस्त, 1920 को खिलाफत समिति ने असहयोग आन्दोलन शुरू कर दिया, गांधीजी प्रथम व्यक्ति थे जो 'कैसर-ए-हिन्द' को त्यागकर उसमें सम्मिलित हुए।
- असहयोग आन्दोलन का विरोध कुछ कांग्रेसी सदस्यों ने किया। वे साम्राज्यवादियों के विरुद्ध संघर्ष को अनावश्यक मानते थे।

Nitin-Gupta.com

GET IT ON Google Play Best Study PDF के लिए हमारी App को Download करें "GK Trick By Nitin Gupta"

- एनी बेसेंट, बिपिन चन्द्र पाल, जी. एस. खरपड़े ने इसी समय कांग्रेस छोड़ दिया।
- चितरंजन दास, मोतीलाल नेहरू, जवाहरलाल नेहरू और राजेन्द्र प्रसाद ने अपनी वकालत छोड़ दी। विधर्मियों के स्कूल छोड़ने के कारण अनेक राष्ट्रीय विद्यालय स्थापित किए गए। इनमें गुजरात, बिहार, काशी विद्यापीठ, तिलक महाराष्ट्र विद्यापीठ और जामिया मिलिया स्थापित हुए।
- असहयोग आन्दोलन को चलाने के लिए तिलक स्वराज्य फंड स्थापित किया गया और 6 माह के अन्दर ही इसमें 1 करोड़ रुपये एकत्र हुए।
- इसी समय ब्रिटेन के राजकुमार (प्रिंस ऑफ वेल्स) ने 17 नवम्बर, 1921 को बम्बई में प्रवेश किया, उस दिन पूरे बम्बई में हड़ताल हुई।
- 1921 में अहमदाबाद में कांग्रेस अधिवेशन अजमल खां की अध्यक्षता में हुआ। इस अधिवेशन में कांग्रेस की सदस्यता की उम्र घटाकर 18 वर्ष कर दी गई।
- 1921 तक गांधी जी के अतिरिक्त सभी मुख्य कांग्रेसी नेता जेल में थे।
- 1 फरवरी, 1922 को गांधी जी ने वायसराय लार्ड रीडिंग के पास अल्टीमेटम भेजा कि अगर एक सप्ताह के अन्दर दमन बन्द न किया गया और आन्दोलनकारियों को रिहा न किया गया तो वे सामूहिक रूप से बारदोली में सविनय अवज्ञा आन्दोलन प्रारंभ करेंगे। इससे पहले कि कोई जन आन्दोलन होता एक घटना घट गई।

चौरी-चौरा काण्ड

- 5 फरवरी, 1922 को गोरखपुर जिले में चौरी-चौरा में किसानों के जुलूस पर पुलिस द्वारा गोली चलाने पर भीड़ ने थाने को जला दिया जिसमें 22 पुलिसकर्मी मारे गए।
- गुजरात के बारदोली में 12 फरवरी, 1922 को कांग्रेस कार्यकारिणी की बैठक में सभी कार्यप्रणाली रोकने का निर्णय लिया गया और जनता को रचनात्मक कार्य करने का निर्देश दिया गया।
- इस प्रकार यह आन्दोलन समाप्त हो गया और गांधी जी को गिरफ्तार कर लोगों को भड़काकर बगावत करने के आरोप में मुकदमा चलाकर उन्हें 6 वर्ष की सजा दी गई। यहीं गांधी जी ने कहा था कि बुराई के साथ असहयोग उतना ही अच्छा है जितना अच्छाई के साथ सहयोग।
- असहयोग आन्दोलन का तुरन्त कोई परिणाम न निकला परन्तु इस आन्दोलन ने पहली बार भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन को जन आन्दोलन बनाया।
- गांधी जी द्वारा आन्दोलन एकाएक रोक देने से लोग चकित रह गए। गांधी जी की आलोचना की गई।

स्वराज दल

- असहयोग आन्दोलन के समाप्त होने के बाद कांग्रेस के सामने यह प्रश्न था कि 1919 के ऐक्ट द्वारा घोषित विधान परिषदों के चुनावों में भाग लिया जाये या नहीं।
- चितरंजन दास और मोतीलाल नेहरू ने इन सभाओं में प्रवेश कर असहयोग करने की बात रखी। ये लोग परिवर्तनवादी कहलाए।
- राजेन्द्र प्रसाद, सी. राजागोपालाचारी, बल्लभ भाई पटेल जैसे नेताओं ने परिषदों में प्रवेश करने की नीति का विरोध किया। ये लोग अपरिवर्तनवादी कहलाए।
- दिसम्बर 1922 में सी.आर. दास की अध्यक्षता में गया (बिहार) में कांग्रेस अधिवेशन हुआ। इसमें कौंसिल में प्रवेश न लेने का निर्णय हुआ परिणामस्वरूप चितरंजन दास ने त्यागपत्र दे दिया।
- किन्तु परिवर्तनवादियों ने हार नहीं मानी तथा मार्च 1923 में इलाहाबाद में अपने समर्थकों का अखिल भारतीय सम्मेलन बुलाया और एक नवीन राजनीतिक दल 'कांग्रेस खिलाफत स्वराज दल' की स्थापना की। फैसला हुआ कि नई पार्टी कांग्रेस के अन्दर रहेगी लेकिन चुनाव लड़ेगी, इसके अध्यक्ष सी.आर. दास तथा महासचिव मोतीलाल नेहरू थे।

Nitin-Gupta.com

GET IT ON Google Play Best Study PDF के लिए हमारी App को Download करें "GK Trick By Nitin Gupta"

गांधी दास पैक्ट

- फरवरी 1924 में गांधी जी जेल से रिहा कर दिये गए। ये मई में चितरंजन दास व मोतीलाल नेहरू से बम्बई में मिले।
- नवम्बर 1924 में गांधी जी, सी.आर. दास और मोतीलाल नेहरू ने एक संयुक्त वक्तव्य दिया जो गांधी दास पैक्ट के नाम से जाना जाता है। इसमें कहा गया कि असहयोग अब राष्ट्रीय कार्यक्रम न रहेगा।
- स्वराज पार्टी को अधिकार दे दिया गया कि वह कांग्रेस के नाम पर और कांग्रेस के अभिन्न अंग के रूप में विधान सभाओं के अन्दर काम करें।
- गांधी जी के जिम्मे आल इण्डिया स्पिनर्स एसोसिएशन को संगठित करने और सारे देश में चरखे और करघे का प्रचार करने का काम दिया गया।
- इस पैक्ट की मुख्य बातों की पुष्टि बेलगांव अधिवेशन (1924) में की गई, इसके अध्यक्ष गांधी जी थे।

साइमन कमीशन

- 1919 के एक्ट में 10 वर्ष पर इसकी समीक्षा का प्रावधान था किन्तु 1929 में ब्रिटेन में आम चुनाव होने के कारण सरकार ने नवम्बर 1927 में ही इसकी स्थापना की घोषणा कर दी।
- कमीशन में ब्रिटिश संसद के 7 सदस्य सम्मिलित थे तथा साइमन इसके अध्यक्ष थे।
- ये सदस्य कंजर्वेटिव लिबरल एवं लेबर पार्टी के प्रतिनिधि थे। कमीशन के सभी सदस्य यूरोपीय थे और भारत में इसके विरोध का यही सबसे बड़ा कारण था।
- साइमन कमीशन 3 फरवरी, 1928 को विलायत से बम्बई पहुँचा, यहाँ इसका स्वागत देशव्यापी आम हड़ताल से हुआ, जब कमीशन दिल्ली पहुँचा तो वहाँ काले झण्डों और 'गो बैक साइमन' के नारों के साथ स्वागत किया गया और केन्द्रीय विधानसभा ने साइमन का स्वागत करने से मना कर दिया।
- साइमन जब लाहौर पहुँचा तो लाला लाजपत राय के नेतृत्व में इसके खिलाफ प्रदर्शन किया गया। पुलिस के लाठी चार्ज के कारण ही कुछ दिनों बाद लाला जी की मृत्यु हो गई।
- लखनऊ में कमीशन विरोधी प्रदर्शन में जवाहर लाल नेहरू और गोविंद बल्लभ पंत की भी पिटाई की गई।
- साइमन कमीशन दो बार भारत आया पहली बार फरवरी 1928 में आया लेकिन 31 मार्च, 1928 को वापस चला गया। दूसरी बार अक्टूबर 1928 में आया और 13 अप्रैल 1929 को वापस इंग्लैंड चला गया।
- साइमन कमीशन का अधिकृत नाम भारतीय वैधानिक आयोग था।
- साइमन कमीशन के सहयोग को लेकर मुस्लिम लीग में फूट पड़ गई। और मुहम्मद शफी के नेतृत्व में मुस्लिम लीग का एक गुट सहयोग के पक्ष में मुस्लिम लीग से अलग हो गया।

साइमन कमीशन के सदस्य

अध्यक्ष	जॉन साइमन	लिबरल पार्टी
सदस्य	बर्नहम	कंजरवेटिव पार्टी
सदस्य	स्ट्रेथकोना	कंजरवेटिव पार्टी
सदस्य	लेन फोक्स	कंजरवेटिव पार्टी
सदस्य	कैडेगन	कंजरवेटिव पार्टी
सदस्य	एटली	लेबर पार्टी
सदस्य	बर्नोन हार्ट शोर्न	लेबर पार्टी

Nitin-Gupta.com

GET IT ON Google Play Best Study PDF के लिए हमारी App को Download करें "GK Trick By Nitin Gupta"

सर्वदलीय सम्मेलन एवं नेहरू रिपोर्ट (1928 ई.)

- साइमन कमीशन में किसी भारतीय को न रखे जाने का कारण बताते हुए सरकार ने यह कहा कि भारतीयों में पारस्परिक मतभेद अधिक है।
- इसी अवसर पर भारत सचिव लार्ड बर्किन हेड ने भारतीयों को यह चुनौती दी कि वे एक ऐसे संविधान का निर्माण करें जिससे सभी भारतीय दल सहमत हों।
- कांग्रेस ने इस चुनौती को स्वीकार कर सर्वदल सम्मेलन बुलाने का निर्णय लिया।
- कांग्रेस द्वारा बुलाया गया सर्वदल सम्मेलन दिल्ली में मार्च 1928 में आरम्भ हुआ। सभी दलों ने घोषणा की कि वे ब्रिटिश सरकार के साथ समझौता वार्ता तभी चलायेंगे जब अधिराज्य देने का वायदा किया जाए।
- सर्वदल सम्मेलन का तीसरा सम्मेलन मई 1928 में डा. अन्सारी की सदारत में हुआ। इसमें मोतीलाल नेहरू की अध्यक्षता में एक कमेटी नियुक्त की गई और उसे एक जुलाई 1928 के पहले भारत के संविधान के सिद्धांतों का एक मसविदा तैयार करने का काम सौंपा।
- 9 सदस्यीय इस कमेटी के मुख्य सदस्यों में अली इमाम, तेज बहादुर सप्रू और सरदार मंगल सिंह थे।
- 29 राजनीतिक संगठनों ने इस प्रस्ताव का समर्थन किया।
- इस कमेटी ने अपना मसविदा जुलाई 1928 में प्रकाशित किया। इतिहास में यह नेहरू रिपोर्ट के नाम से जाना जाता है। इसका आधार डोमीनियन स्टेट्स था। नेहरू रिपोर्ट के मुख्य बिन्दु इस प्रकार हैं—
- भाषा के आधार पर प्रान्तों के गठन तथा प्रान्तों के स्वायत्त शासन देने की बात कही गई, सारी शक्ति केन्द्रीय विधानसभा के प्रति उत्तरदायी भारत सरकार के हाथ में रखी गई। केवल विदेशी मामलों और सुरक्षा को ब्रिटिश नियंत्रण में रखा गया था।
- नागरिक अधिकारों के बारे में कहा गया कि लोगों को भाषण देने, समाचार-पत्र निकालने, सभाएं करने, संगठन बनाने आदि की स्वतंत्रता प्राप्त थी।
- अलग साम्प्रदायिक प्रतिनिधित्व का विरोध किया गया।
- सभी बालिगों को मतदान का अधिकार दिया गया।
- मुस्लिम लीग ने हिन्दू-मुस्लिम समझौते की सिफारिशों को ठुकरा दिया और प्रस्तावित संविधान को पास करने से इंकार कर दिया, बदले में जिन्ना ने अपनी स्थिति सुदृढ़ करने के लिए मार्च 1929 में एक 14 सूत्रीय मांग पत्र रखा जिसमें पृथक निर्वाचक मण्डल केन्द्र व प्रदेशों में सीटों का आरक्षण, रोजगार में मुसलमानों के लिए आरक्षण और नए बहुसंख्यक मुस्लिम प्रदेशों की स्थापना प्रमुख मांग थी।
- जवाहर लाल नेहरू और सुभाष चन्द्र बोस डोमिनियन स्टेट्स से संतुष्ट नहीं थे, ये पूर्ण स्वाधीनता चाहते थे।
- 1928 के कलकत्ता अधिवेशन में कहा गया कि यदि सरकार नेहरू रिपोर्ट 31 दिसम्बर, 1930 तक स्वीकार नहीं करेगी तो कांग्रेस अहिंसक असहयोग आन्दोलन शुरू करेगी लेकिन सुभाष चन्द्र बोस एवं जे. एल. नेहरू के दबाव के कारण यह समय 31 दिसम्बर, 1929 कर दिया।

महत्वपूर्ण तथ्य

- सर्वप्रथम भारत के लिए औपनिवेशिक स्वराज की मांग सर तेजबहादुर सप्रू एवं जयकर ने की थी क्योंकि ये दोनों नेहरू रिपोर्ट तैयार करने वाली समिति के सदस्य थे। नेहरू रिपोर्ट का आधार औपनिवेशिक स्वराज्य (डोमेनियन स्टेट्स) था।
- औपनिवेशिक स्वराज्य की जगह पूर्ण स्वराज्य की मांग को प्रभावशाली बनाने के लिए जवाहर लाल नेहरू एवं सुभाषचन्द्र बोस ने मिलकर 1928 ई. में 'इंडिपेंडेंस फॉर लीग' का गठन किया।

Nitin-Gupta.com

GET IT ON Google Play Best Study PDF के लिए हमारी App को Download करें "GK Trick By Nitin Gupta"

आल इण्डिया इन्डिपेंडेंस लीग

- भारत के लिए पूर्ण स्वाधीनता के लिए नवम्बर 1928 में इसकी स्थापना की गई। इसने नेता जवाहर लाल नेहरू व सुभाष चन्द्र बोस थे।
- दिसम्बर 1929 में कांग्रेस का अधिवेशन लाहौर में हुआ, इस अधिवेशन के अध्यक्ष गांधी जी चुने गए थे लेकिन उन्होंने अपनी जगह जवाहर लाल नेहरू को अध्यक्ष बनाया।
- इस अधिवेशन में स्पष्ट कहा गया कि नेहरू रिपोर्ट को लागू करने की अवधि समाप्त हो गई तथा अब पूर्ण स्वाधीनता की मांग बुलंद की गई।
- कांग्रेस की नई वर्किंग कमेटी की बैठक 2 जनवरी, 1930 को हुई जिसमें 26 जनवरी, 1930 को पूर्ण स्वाधीनता दिवस सारे भारत में मनाने का आदेश दिया गया।
- लाहौर अधिवेशन में सविनय अवज्ञा आन्दोलन शुरू करने की घोषणा की गई तथा संघर्ष का कार्य गांधी जी पर छोड़ दिया गया और इस तरह राष्ट्रीय आन्दोलन का नेतृत्व गांधी जी के हाथों में दे दिया गया।

नेहरू कमेटी के सदस्य		
अध्यक्ष	—	मोती लाल नेहरू
सदस्य	—	अली इमाम
सदस्य	—	शुएब कुरैशी
सदस्य	—	तेजबहादुर सप्रू
सदस्य	—	सुभाष चन्द्र बोस
सदस्य	—	सरदार मंगल सिंह
सदस्य	—	एन.एम. जोशी
सदस्य	—	एम.एस. आणे
सदस्य	—	एम.आर. जयकर

भारत के कम्युनिस्ट पार्टी की स्थापना

- भारत में वामपंथी आन्दोलन का उदय आधुनिक उद्योगों के विकास, दो विश्वयुद्धों के मध्यकाल में आर्थिक मंदी की भयावहता तथा रूस में 1917 ई. को बोल्शेविक क्रान्ति के परिणामस्वरूप हुआ था।
- मानवेन्द्र नाथ राय (नरेन्द्र नाथ भट्टाचार्य) ने सोवियत संघ की यात्रा कर रूसी कम्युनिस्ट पार्टी से सम्बन्ध स्थापित कर अक्टूबर 1920 ई. में ताशकन्द में "भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी की स्थापना की थी।"
- राजा महेन्द्रप्रताप के नेतृत्व में भारतीयों का पहला प्रतिनिधि मंडल लेनिन से मिला था।
- भारत में कम्युनिस्ट पार्टी की स्थापना के उद्देश्य से एम.एन. राय अप्रैल 1922 ई. में भारत आये।
- भारत में साम्यवादी पार्टी की स्थापना की दिशा में प्रयत्नरत नेताओं को 1924 ई. में बन्दी बनाकर कानपुर षडयंत्र केस के अन्तर्गत मुकदमा चलाया गया।
- कानपुर षड़यंत्र केस के अन्तर्गत साम्यवादी नेता मानवेन्द्र नाथ राय, सिंगार वेरू चेट्टियार, मुजफ्फर अहमद, श्रीपद अमृत डांगे, गुलाम हुसैन, रामचरण लाल शर्मा पर सरकार के विरुद्ध षडयंत्र रचने, क्रान्तिकारी गतिविधियों को संचालित करने, भारत में क्राउन की सत्ता को उखाड़ने का आरोप लगाकर मुकदमा चलाया गया।
- अंततः 1 दिसम्बर, 1925 ई. को भारत में साम्यवादी दल की स्थापना की घोषणा की गई।
- भारत के लिए पूर्ण स्वाधीनता की मांग करने वाली यह पहली पार्टी थी।
- इस पार्टी ने घोषणा की थी कि —"राजनीतिक स्वतंत्रता एक साधन है और आर्थिक स्वतंत्रता एक लक्ष्य।"
- 1927 ई. में भारत में पहली बार 1 मई को मई दिवस मनाया गया जो भारत में मजदूरों की बढ़ती हुई राजनीतिक चेतना की सूचक थी।

Nitin-Gupta.com

GET IT ON Google Play Best Study PDF के लिए हमारी App को Download करें "GK Trick By Nitin Gupta"

- इन बन्दी नेताओं में तीन ब्रिटिश नागरिक भी थे, ये थे— फिलिप स्प्रेट, वेन ब्रैडले, लेस्टर हचिन्सन।

ट्रेड यूनियन

- 19वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में भारत में आधुनिक मजदूर वर्ग का उदय हुआ।
- एन.एम. लोखंडे ने 1890 में 'बाम्बे मिल हैंड्स एसोसिएशन की स्थापना की, जिसे प्रायः भारत में गठित प्रथम मजदूर संगठन कहा जाता है। यद्यपि यह ट्रेड यूनियन नहीं था।
- नियमित सदस्यता और शुल्क के साथ पहला व्यवस्थित श्रम संघ 'मद्रास श्रमिक संघ' था, जिसकी स्थापना वी.पी. वाडिया ने 1918 में मद्रास में की थी। यह कपड़ा उद्योग से सम्बन्धित था। यही भारत का पहला ट्रेड यूनियन था।
- गाँधीजी 1918 में अहमदाबाद टेक्सटाइल लेबर एसोसिएशन की स्थापना की। यह उस समय की सबसे बड़ी ट्रेड यूनियन थी।
- मजदूर संघ आन्दोलन की सबसे महत्वपूर्ण घटना 'आल इंडिया ट्रेड यूनियन कांग्रेस' (एटक) की स्थापना है। जिसे 21 अक्टूबर, 1920 को एन.एम. जोशी ने किया।
- एटक का प्रथम अधिवेशन 1920 में बम्बई में लाला लाजपतराय की अध्यक्षता में हुआ।
- 1919 ई. में अन्तर्राष्ट्रीय श्रम संगठन की स्थापना की गई। जिसमें सरकार, उद्योगपतियों तथा मजदूरों के प्रतिनिधि एकत्र होकर मजदूरों की भलाई के प्रश्नों पर विचार करते थे।
- एटक के प्रतिनिधि के रूप में एन.एम. जोशी अन्तर्राष्ट्रीय श्रम संगठन में भेजे गये।
- 1925 में सर्वप्रथम कलकत्ता में प्रान्तीय स्तरीय मजदूर किसान पार्टी बनी।
- 1928 में बम्बई में सूती कपड़ा मिलों में एक बड़ी आम हड़ताल मजदूरों ने की, इसमें कम्यूनिस्टों के नेतृत्व वाली गिरनी कामगार यूनियन ने महत्वपूर्ण स्थिति हासिल की।
- 1928 के अंत तक इसकी सदस्य संख्या 32 से बढ़कर 54 हजार हो गई।
- 1928 में झरिया आन्दोलन के समय तक AITUC में भी वामपन्थियों की स्थिति प्रभावशाली हो गई।
- 1929 में एन.एम. जोशी के नेतृत्व में कुछ लोग (AITUC) से बाहर आ गए और इन लोगों ने इण्डियन ट्रेड यूनियन फेडरेशन की स्थापना की। दन्तोपन्त थेंगडी ने सर्वप्रथम ट्रेड यूनियन के मंच से वर्ग संघर्ष की शुरुआत की।
- इण्डियन ट्रेड यूनियन फेडरेशन, 1935 में एटक (AITUC) में मिल गए और 1938 में इनका पहला संयुक्त अधिवेशन नागपुर में हुआ।
- द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान मजदूर गतिविधियाँ कुछ हद तक रुक गईं लेकिन 1945 के बाद इनकी गतिविधियाँ पुनः तेज हुईं।
- कांग्रेस राष्ट्रवादियों ने 1947 में AITUC से निकलकर इण्डियन नेशनल ट्रेड यूनियन कांग्रेस की स्थापना की।

सविनय अवज्ञा आन्दोलन (1930 ई.)

- 30 जनवरी 1930 को गाँधीजी अपने पत्र यंग इंडिया में 11 सूत्रीय माँग सरकार के सामने रखी। परन्तु वायसराय लार्ड इर्विन इस पर कोई ध्यान नहीं दिया।
- 6 मार्च, 1930 को गाँधीजी लार्ड इर्विन को पत्र लिखा जिसमें माँगे न स्वीकृत किये जाने पर सविनय अवज्ञा आन्दोलन करने की धमकी दी। लेकिन लार्ड इर्विन ने पुनः कोई ध्यान नहीं दिया।
- 12 मार्च, 1930 को गाँधी जी अपने 78 चुने हुए अनुयायियों के साथ साबरमती आश्रम से प्रसिद्ध दांडी यात्रा प्रारम्भ की।

Nitin-Gupta.com

GET IT ON Google Play Best Study PDF के लिए हमारी App को Download करें "GK Trick By Nitin Gupta"

- 5 अप्रैल, 1930 को गाँधीजी दांडी पहुँचे और 6 अप्रैल, 1930 को दांडी में अवैध रूप से नमक बनाकर नमक कानून तोड़ा। इसके बाद सम्पूर्ण देश में नमक सत्याग्रह आन्दोलन प्रारम्भ हो गया।
- 5 मई, 1930 को गाँधीजी को गिरफ्तार कर पूना के यरवदा जेल में रखा गया।
- गाँधी जी ने यह घोषणा की थी कि वे धराशना (गुजरात) के नमक कार्यशाला में धावा बोलकर नमक कानून तोड़ेंगे।
- 31 मई, 1930 को गाँधी जी के द्वारा आह्वान किये गये इस आन्दोलन को सरोजनी नायडू, दोस्त इमाम साहब, गाँधीजी के पुत्र मणिलाल गाँधी हजारों कार्यकर्ताओं के साथ धराशना के नमक कार्यशाला में धावा बोला, इन पर पुलिस ने भीषण लाठीचार्ज किया।
- अमेरिकी पत्रकार वेब मिलर धराशना के नृशंस लाठी चार्ज का आँखों देखा वर्णन अपने पत्र न्यू फ्रीमैन में किया है।
- खान अब्दुल गफ्फार खाँ (सीमांत गाँधी) अहिंसक आन्दोलनकारियों का एक दल तैयार किया जिसे 'खुदाई खिदमतगार' के नाम से जाना जाता है।
- खुदाई खिदमतगार के सदस्य लाल रंग की वर्दी पहनते थे अतः इन्हें लाल कुर्ती के नाम से जाना जाता है और इनके आन्दोलन को लालकुर्ती आन्दोलन कहा जाता है।
- पूर्वोत्तर क्षेत्र मणिपुर में भी यह आन्दोलन चला। यहाँ पर नागाओं ने यदुनाग के नेतृत्व में ब्रिटिश शासकों से पूर्ण असहयोग एवं कर बन्दी का आन्दोलन चलाया। इस आन्दोलन को जिया-तरंग आन्दोलन के नाम से जाना जाता है।
- यदुनाग के बाद उसकी बहन गैडनिल्यू (रानी गिडालू) ने नागा आन्दोलन का नेतृत्व किया। इन्हें गिरफ्तार कर आजीवन कारावास की सजा दी गई।
- इनके बारे में जवाहर लाल नेहरू ने लिखा है कि 'एक दिन ऐसा आयेगा जब पूरा देश इन्हें (गैडनिल्यूको) स्नेहपूर्वक स्मरण करेगा।
- छतरपुर में करबन्दी आन्दोलन चला। यहाँ आन्दोलन का नेतृत्व डाकू मंगल सिंह ने किया।
- तमिलनाडु में सी. राजगोपालाचारी के नेतृत्व में नमक सत्याग्रह चला, इन्होंने त्रिचनापल्ली से लेकर वेदारण्य की पद यात्रा की।
- महाराष्ट्र, कर्नाटक एवं मध्य भारत में जंगल नियमों के उल्लंघन का आन्दोलन चला।

महत्वपूर्ण तथ्य

- दांडी मार्च में महात्मा गांधी के साथ अमेरिकी पत्रकार वेब मिलर भी था।
- 12 मार्च 1930 को गांधीजी ने प्रसिद्ध डाँडी मार्च प्रारम्भ किया। 78 अनुयायियों के साथ गांधीजी साबरमती आश्रम (अहमदाबाद) से गुजरात के समुद्र तट पर स्थित डांडी की यात्रा प्रारम्भ की। 78 अनुयायियों में सर्वाधिक 31 अनुयायी गुजरात से थे। उत्तर प्रदेश से 8 अनुयायी सम्मिलित हुए थे। बिहार से केवल एक अनुयायी गिरिवरधारी चौधरी सम्मिलित हुए थे।
- महात्मा गांधी ने 12 मार्च 1930 को डांडी यात्रा प्रारम्भ की और 5 अप्रैल 1930 को ये डांडी पहुंचे और यहाँ आये हुए सभी राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय पत्रकारों को सम्बोधित करते हुए गांधीजी ने कहा था कि ''शक्ति के विरुद्ध अधिकार की इस लड़ाई में मैं विश्व की सहानुभूति चाहता हूँ।''
- नमक सत्याग्रह के समय 5 मई 1930 ई. को गांधीजी के गिरफ्तार हो जाने के बाद, आन्दोलन के नेता के रूप में उनका स्थान अब्बास तैय्यबजी ने लिया था।

Nitin-Gupta.com

GET IT ON Google Play Best Study PDF के लिए हमारी App को Download करें "GK Trick By Nitin Gupta"

Nitin-Gupta.com

गाँधी जी की 11 सूत्रीय माँगे

1. रुपये की विनिमय दर घटाकर 1 शिलिंग 4 पेंस कर दी जाये।
2. भू-राजस्व में 50% की कमी की जाये।
3. सिविल अधिकारियों के वेतन में 50% की कमी की जाये।
4. सैनिक खर्च में 50% की कमी की जाये।
5. रक्षात्मक शुल्क लगाया जाये और आयात में कमी की जाये।
6. नमक कर समाप्त किया जाये।
7. तटीय यातायात रक्षा विधेयक पारित किया जाये।
8. सी.आई.डी. विभाग समाप्त किया जाये।
9. भारतीयों को आग्नेय अस्त्र का लाइसेंस दिया जाये।
10. नशीली वस्तुओं के विक्रय को बंद किया जाये।
11. उन सभी राजनीतिक बंदियों की रिहाई की जाये जिन पर हत्या का आरोप न हो।

दांडी मार्च

- दांडी गुजरात प्रांत के नौसारी जिले में स्थित है।
- साबरमती आश्रम से दांडी की दूरी 241 मील है।
- गाँधीजी साबरमती से दांडी 24 दिनों के बाद 5 अप्रैल, 1930 को पैदल चलकर पहुँचे।
- 6 अप्रैल को प्रातः इन्होंने दांडी समुद्र तट पर नमक बनाकर नमक कानून तोड़े।

प्रथम गोलमेज सम्मेलन (1930-31 ई.)

- यह सम्मेलन 12 नवंबर, 1930 से लेकर 19 जनवरी, 1931 ई. तक चला।
- यह सम्मेलन सेंट जेम्स पैलेस लंदन में आयोजित हुआ।
- इसका उद्घाटन ब्रिटिश सम्राट जार्ज V ने किया। इस समय ब्रिटेन के प्रधानमंत्री सर रैम्जे मैक्डोनाल्ड थे जो सम्मेलन के अध्यक्ष भी थे।
- इस सम्मेलन में कुल 89 प्रतिनिधियों ने भाग लिया। जिनमें 16 ब्रिटिश राजनयिक दलों और शेष 73 भारत का प्रतिनिधित्व करते थे। भारतीय देशी रियासतों के 16 नरेशों ने इसमें भाग लिया।
- कांग्रेस का कोई भी प्रतिनिधि इस सम्मेलन में उपस्थित नहीं हुआ।

प्रथम गोलमेज सम्मेलन में दल व उनके प्रतिनिधि

उदारवादी दल	टी.बी. सप्रू एवं सी.वाई. चिंतामणि
हिन्दू महासभा	एम.आर. जयकर एवं बी.एस. मुंजे
मुस्लिम लीग	सर आगा खाँ, मुहम्मद शफी एवं मुहम्मद अली जिन्ना।
दलित वर्ग	डा. बी.आर. अंबेडकर
एंग्लो इंडियन	के.टी. पॉल
सिक्ख	सरदार सम्पूर्ण सिंह

गाँधी-इर्विन पैक्ट (1931 ई.)

- यह समझौता 5 मार्च, 1931 को वायसराय इर्विन एवं गाँधीजी के बीच दिल्ली में हुआ। अतः इसे दिल्ली पैक्ट के नाम से जाना जाता है।
- समझौते के मुख्य बिन्दु इस प्रकार थे—
  1. गाँधीजी सविनय अवज्ञा आन्दोलन स्थगित करेंगे।
  2. कांग्रेस द्वितीय गोलमेज सम्मेलन में भाग लेगी।
  3. सरकार उन सभी राजनीतिक बंदियों को रिहा करेगी जिन पर हिंसा का कोई मुकदमा नहीं है।
  4. राजनीतिक बंदियों की जब्त की गई संपत्ति वापस की जायेगी।
  5. भारतीयों का नमक बनाने का अधिकार प्राप्त हुआ।
- इस समझौते के बारे में कहा जाता है कि गाँधी जी तीन क्रान्तिकारियों भगत सिंह, राजगुरु एवं सुखदेव को फांसी से नहीं बचा सके।
- इस समझौते में टी.बी. सप्रू एवं जयकर की महत्वपूर्ण भूमिका रही।

GET IT ON Google Play Best Study PDF के लिए हमारी App को Download करें "GK Trick By Nitin Gupta"

Nitin-Gupta.com

कांग्रेस का कराची अधिवेशन (1931)

- सुभाषचन्द्र बोस ने भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के कराची अधिवेशन (1931) को महात्मा गांधी की लोकप्रियता और सम्मान की पराकाष्ठा माना है।
- 1931 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के कराची अधिवेशन के लिए, जिसकी अध्यक्षता सरदार पटेल कर रहे थे, पंडित जवाहरलाल नेहरू ने मूल अधिकारों तथा आर्थिक कार्यक्रम पर संकल्प प्रारूपित किया था।

द्वितीय गोलमेज सम्मेलन (1931 ई.)

- इस सम्मेलन का आयोजन 7 सितंबर, 1931 से 1 दिसंबर, 1931 तक लंदन में हुआ।
- इस सम्मेलन में कुल 31 प्रतिनिधि उपस्थित हुए।
- कांग्रेस के एकमात्र प्रतिनिधि के रूप में गाँधीजी उपस्थित हुए।
- गाँधी एस.एस. राजपूताना नामक जहाज से लंदन गये।
- उदारवादी दल के टी.बी. सप्रू एवं मुस्लिम लीग के मु. अली जिन्ना तथा दलित नेता बी.आर. अंबेडकर सम्मिलित हुए।
- द्वितीय गोलमेज सम्मेलन में साम्प्रदायिक समस्या उभरकर सामने आयी।
- बिना किसी नतीजे के यह सम्मेलन समाप्त हुआ।
- गाँधी जी वापस भारत लौट आये और कहा मैं खाली हाथ लौटा हूँ परन्तु मैंने अपने देश की इज्जत को बट्टा नहीं लगने दिया।

साम्प्रदायिक पंचाट (कम्युनल अवार्ड) 1932 ई.

- 16 अगस्त, 1932 को ब्रिटिश प्रधानमंत्री रैम्जे मैक्डोनाल्ड ने साम्प्रदायिक पंचाट की घोषणा की।
- इस निर्णय के तहत अल्पसंख्यक समुदायों के लिए प्रांतीय विधानमंडलों में पृथक निर्वाचक मंडल की व्यवस्था की गई थी।
- दलित वर्ग को अल्पसंख्यक मानकर हिन्दुओं से अलग कर दिया गया था।
- इसका उद्देश्य साम्प्रदायिक फूट को बढ़ावा देकर राष्ट्रीय आन्दोलन को कमजोर करना था।

पूना पैक्ट (26 सितम्बर, 1932)

- गाँधी जी दलितों के लिए पृथक निर्वाचक मंडल बनाये जाने से बहुत दुखी हुए और 20 सितम्बर, 1932 से पूना के यरवदा जेल में आमरण अनशन प्रारम्भ किया।
- मदनमोहन मालवीय, डा. राजेन्द्र प्रसाद एवं सी. राजगोपालाचारी के प्रयासों से पूना में गाँधी जी एवं डा. अंबेडकर के मध्य एक समझौता हुआ।
- समझौते के अनुसार दलितों के लिए पृथक निर्वाचक मंडल समाप्त कर दिया गया।
- प्रान्तों में दलितों के लिए सुरक्षित सीटें 71 से बढ़ाकर 147 कर दी गईं।
- इस समझौते पर गाँधीजी एवं डा. अंबेडकर के हस्ताक्षर हुए।

महत्वपूर्ण तथ्य

- 'हरिजन सेवक संघ' का पूर्व नाम ऑल इंडिया एंटी अनटचेबिलिटी लीग था। समाज से छुआछूत को समाप्त करने हेतु गांधीजी ने 30 सितम्बर 1932 को इसकी स्थापना की थी। बाद में इसी का नाम 'हरिजन सेवक संघ' पड़ा।
- 26 सितम्बर 1932 को हुए पूना पैक्ट के बाद गांधीजी 30 सितम्बर 1932 को 'आल इंडिया एंटी अनटचेबिलिटी लीग' की स्थापना की, जो बाद में 'हरिजन सेवक संघ' के नाम से प्रसिद्ध हुआ। इसके प्रथम अध्यक्ष घनश्याम दास बिड़ला थे।
- मैक्डोनॉल्ड के साम्प्रदायिक पंचाट ने मुसलमानों, दलितों एवं सिक्खों को पृथक चुनाव क्षेत्र एवं आरक्षित सीटें आवंटित की थीं, लेकिन बौद्धों को नहीं की थी।

GET IT ON Google Play Best Study PDF के लिए हमारी App को Download करें "GK Trick By Nitin Gupta"

- डॉ. भीमराव अम्बेडकर ने 1920 ई. में 'दलित वर्गों का संघ' स्थापित किया था। इसके अतिरिक्त डा. अम्बेडकर ने 1924 में 'बहिष्कृत हितकारिणी सभा' की भी स्थापना की थी और 1927 में 'बहिष्कृत भारत' नामक पत्रिका का भी प्रकाशन मराठी भाषा में किया था।

तृतीय गोलमेज सम्मेलन

- यह गोलमेज सम्मेलन 17 नवंबर, 1932 से 24 दिसंबर, 1932 तक लंदन में आयोजित हुआ।
- इस सम्मेलन में कुल 46 प्रतिनिधियों ने भाग लिया।
- इसमें कांग्रेस तथा इंग्लैंड की लेबर पार्टी ने भाग नहीं लिया।
- इस सम्मेलन में सरकार ने ऐसे किसी व्यक्ति को आमंत्रित नहीं किया जिससे सरकार का विरोध हो सकता था।
- मु. अली जिन्ना को भी आमंत्रित नहीं किया था। ज्यादातर प्रतिनिधि उदारवादी एवं साम्प्रदायिक दल के थे।
- डा. अंबेडकर एवं टी.बी. सप्रू उपस्थित हुए।

श्वेत पत्र

- इस सम्मेलन के बाद मार्च 1933 में ब्रिटिश सरकार ने एक श्वेत पत्र प्रकाशित किया, जिसमें भारत के नये संवैधानिक उपबन्धों का उल्लेख था।
- अप्रैल 1933 में ब्रिटिश संसद के दोनों सदनों की एक संयुक्त प्रवर समिति बनाई गई जिसके अध्यक्ष लार्ड लिनलिथगो थे।
- प्रवर समिति का कार्य श्वेतपत्र के उपबन्धों का मूल्यांकन करना था।
- 11 नवंबर, 1934 को प्रवर समिति की रिपोर्ट प्रकाशित हुई जिसके आधार पर ब्रिटिश संसद में एक विधेयक प्रस्तुत किया गया।
- 1935 में भारतीय शासन अधिनियम पारित हुआ।

कांग्रेस समाजवादी पार्टी

- जय प्रकाश नारायण एवं आचार्य नरेन्द्र देव ने 1934 ई. में बम्बई में कांग्रेस समाजवादी पार्टी की स्थापना की।
- कांग्रेस की अप्रगतिवादी नीतियों से असंतुष्ट होकर 1931 में जयप्रकाश नारायण के नेतृत्व में बिहार समाजवादी दल और 1933 में बृजलाल के नेतृत्व में पंजाब समाजवादी दल का गठन हुआ।
- इन संगठनों को मिलाकर बम्बई में 1934 ई. में कांग्रेस समाजवादी पार्टी की स्थापना की गई।

1937 का प्रान्तीय चुनाव

- 1935 के अधिनियम की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता थी। प्रान्तों को पूर्ण स्वायत्तता दिया जाना।
- 1935 के अधिनियम के बनते ही अनेक क्षेत्रीय पार्टियों का गठन प्रारम्भ हो गया।
- बंगाल में फजलुल हक के नेतृत्व में प्रजा कृषक पार्टी का गठन हुआ।
- पंजाब में अफसर हुसैन के नेतृत्व में यूनियनिस्ट पार्टी का गठन हुआ।
- महाराष्ट्र एवं मध्य प्रान्त में डा. बी.आर. अंबेडकर के नेतृत्व में स्वतंत्र कामगार दल की स्थापना हुई।
- 1937 में ब्रिटिश भारत के 11 प्रान्तों में चुनाव हुए। कांग्रेस भी इस चुनाव में सम्मिलित हुई।
- कांग्रेस को मद्रास, म. प्रान्त, संयुक्त प्रांत, बिहार एवं उड़ीसा में पूर्ण बहुमत प्राप्त हुआ तथा बम्बई में केवल एक सीट से पूर्ण बहुमत से पीछे थी। प्रारम्भ में छह प्रान्तों में कांग्रेस की सरकार बनी।

Nitin-Gupta.com

Best Study PDF के लिए हमारी App को Download करें "GK Trick By Nitin Gupta"

- बंगाल में प्रजा कृषक पार्टी मुस्लिम लीग के सहयोग से फजलुल हक के नेतृत्व में सरकार बनाई।
- पंजाब में यूनियनिस्ट पार्टी ने मुस्लिम लीग के सहयोग से सिकन्दर हयात खाँ के नेतृत्व में सरकार बनाई।
- सिन्ध में अब्दुल्ला हारुन के नेतृत्व में स्वतंत्र दल की सरकार बनी।
- कांग्रेस ने कुल 8 प्रान्तों में सरकार बनाई। इसने अपने शासन काल में प्राथमिक शिक्षा के विकास, किसानों के ऋण की समस्या तथा राजनीतिक बन्दियों की रिहाई से सम्बन्धित कार्य किये।
- मुस्लिम लीग आरोप लगाया कि कांग्रेस शासित प्रान्तों में मुसलमानों पर अत्याचार किया जा रहा है।
- 1939 में द्वितीय विश्व युद्ध प्रारम्भ हुआ, ब्रिटिश सरकार ने भारत को भी विश्व युद्ध में सम्मिलित कर दिया और कांग्रेस के बहुत पूछे जाने के बाद भी युद्ध के उद्देश्यों को स्पष्ट नहीं किया।
- नवंबर 1939 में आठों प्रान्तों की कांग्रेसी सरकार ने 28 महीने के शासन के बाद इस्तीफा दे दिया।
- मुस्लिम लीग ने 22 दिसम्बर, 1939 को मुक्ति दिवस मनाया।

अगस्त प्रस्ताव 1940

- द्वितीय विश्व युद्ध में भारतीयों का सहयोग पाने के उद्देश्य से 8 अगस्त, 1940 को वायसराय लिनलिथगो ने अपने प्रस्तावों की घोषणा की जिसे अगस्त प्रस्ताव के नाम से जाना जाता है।
- इसके मुख्य बिन्दु इस प्रकार हैं—
  1. केन्द्र में वायसराय की नई कार्यकारिणी का गठन किया जायेगा जिसमें भारतीयों को भी सम्मिलित किया जायेगा।
  2. भारतीयों को अपना संविधान बनाने का अधिकार है युद्ध के बाद एक संविधान निर्मात्री सभा का गठन किया जायेगा।
  3. भारतीयों को सम्मिलित करते हुए एक भारत रक्षा समिति का गठन किया जायेगा।
  4. भारतीयों का शासन किसी ऐसे दल या समुदाय को नहीं सौंपा जायेगा जिसका विरोध कोई प्रभावशाली दल या वर्ग करेगा।
- कांग्रेस एवं मुस्लिम लीग दोनों ने इस प्रस्ताव को ठुकरा दिया। क्योंकि कांग्रेस पूर्णस्वराज्य की माँग कर रही थी तथा मुस्लिम लीग पाकिस्तान की माँग कर रही थी और इस प्रस्ताव में ये दोनों चीजें नहीं थी।

व्यक्तिगत सत्याग्रह (1940 ई.)

- अगस्त प्रस्ताव के विरोध में तथा द्वितीय विश्व युद्ध से अपने को अलग सिद्ध करने के लिए कांग्रेस ने व्यक्तिगत सत्याग्रह प्रारम्भ किया।
- व्यक्तिगत सत्याग्रह की विचारधारा गाँधीजी की थी अर्थात् गाँधीजी जिस व्यक्ति को नामित करेंगे वही व्यक्तिगत सत्याग्रह प्रारम्भ करेगा।
- व्यक्तिगत सत्याग्रह 17 अक्टूबर, 1940 को पवनार आश्रम (महाराष्ट्र) से प्रारम्भ हुआ।
- पहले सत्याग्रही विनोबा भावे तथा दूसरे सत्याग्रही जवाहर लाल नेहरू थे।

अटलांटिक चार्टर

- अगस्त 1941 में अटलांटिक चार्टर की घोषणा हुई जिसे ब्रिटेन एवं अमेरिका ने संयुक्त रूप से जारी किया था।
- इसमें कहा गया था कि ये सब कौमों के शासन के रूप में जिसके मातहत वे रहेंगी चुनने के अधिकार का आदर करते हैं। उन लोगों को स्वराज पुनः दिया जाये जिनसे बलपूर्वक छीना गया है।
- इस घोषणा से भारतीय नेताओं को आशा बँधी लेकिन 9 सितम्बर, 1941 को ब्रिटिश प्रधानमंत्री चर्चिल की घोषणा ने भारतीयों की आशा पर पानी फेर दिया जिसमें चर्चिल ने कहा था कि अटलांटिक चार्टर भारत, बर्मा जैसे एशियाई उपनिवेशों में लागू नहीं होगा।

Nitin-Gupta.com

GET IT ON Google Play Best Study PDF के लिए हमारी App को Download करें "GK Trick By Nitin Gupta"

क्रिप्स प्रस्ताव (1942 ई.)

- जापान मित्र राष्ट्रों के विरोध में युद्ध कर रहा था जिससे भारत की सुरक्षा को खतरा उत्पन्न हो गया।
- कांग्रेस ने कहा कि वह सरकार के साथ तभी सहयोग करेगी जब ब्रिटेन युद्ध के बाद भारत को स्वतंत्र करने का वचन दे।
- जब जापान ने सिंगापुर एवं रंगून पर कब्जा कर लिया तब इस अवसर पर अमेरिकी राष्ट्रपति रुजवेल्ट ने ब्रिटिश प्रधानमंत्री चर्चिल पर दबाव डाला कि वह भारतीयों से समझौता करें।
- तब चर्चिल सर स्टेफर्ड क्रिप्स के नेतृत्व में एक मिशन की घोषणा की जिसे क्रिप्स मिशन के नाम से जाना जाता है।
- मार्च 1942 में क्रिप्स मिशन भारत आया इसमें कुल 3 सदस्य थे—सर स्टेफर्ड क्रिप्स, ए.बी. एलेक्जेंडर एवं लार्ड पैंथिक लारेंस।
- क्रिप्स प्रस्ताव के मुख्य बिन्दु इस प्रकार हैं—
  1. एक नये भारत संघ का निर्माण किया जायेगा, जिसका स्तर अधिराज्य का होगा।
  2. युद्ध के बाद एक संविधान निर्मात्री सभा का गठन किया जायेगा जिसमें ब्रिटिश भारत एवं देशी रियासतों के प्रतिनिधि होंगे।
  3. जातीय एवं धार्मिक अल्पसंख्यकों को सुरक्षा प्रदान की जायेगी।
- कांग्रेस एवं मुस्लिम दोनों ने इसे ठुकरा दिया।
- जवाहर लाल नेहरू ने इसे दिवालिया बैंक का अग्रिम तिथि का चेक कहा है।
- गाँधी जी ने इसे अग्रिम तिथि का चेक कहा है।

भारत छोड़ो आन्दोलन (1942)

- इसे अगस्त क्रांति भी कहा जाता है।
- गांधी जी का यह मानना था कि अंग्रेज भारत छोड़ दें तो भारत की सभी समस्याओं का समाधान अपने आप हो जायेंगे।
- 7 व 8 अगस्त, 1942 को बम्बई में कांग्रेस का अधिवेशन हुआ, जिसकी अध्यक्षता अबुल कलाम आजाद ने की। यहीं पर भारत छोड़ों आन्दोलन का प्रस्ताव पास किया गया।
- गांधी जी ने अपने भाषण में कहा कि मैंने कांग्रेस का साथ निभाने का प्रण किया है, कांग्रेस या तो कार्य करेगी या मर जायेगी अर्थात् 'करो या मरो' का नारा दिया। यहां गांधी जी ने कहा कि हम अपनी गुलामी स्थायी बनाया जाना देखने के लिए जिंदा नहीं रहेंगे।
- 8 अगस्त की मध्यरात्रि के बाद ही सरकार ने बड़े कांग्रेसी नेताओं की गिरफ्तारी की योजना बना ली। 9 अगस्त की सुबह गांधी जी एवं कांग्रेस के अन्य कार्यकर्ता गिरफ्तार कर लिए गए।
- इस आन्दोलन में हिंसा और अहिंसा का मिश्रण देखने को मिला। सरकार ने इसका कठोरतापूर्वक दमन किया, परिणामस्वरूप इस आन्दोलन में एक भूमिगत संगठनात्मक ढाँचा भी तैयार हो गया।
- रेडिया प्रसारण का सर्वप्रथम कार्य, आन्दोलन शुरु होने के 5 दिन बाद ही 14 अगस्त से सर्वप्रथम उषा मेहता ने प्रारम्भ किया। अन्य एक केन्द्र बाबू भाई चला रहे थे, जबकि राम मनोहर लोहिया नियमित रूप से कांग्रेस रेडियो पर बोलते थे। नवम्बर 1942 में पुलिस ने इसे खोज निकाला और जब्त कर लिया। इस अपराध में उषा मेहता व बाबू भाई को 4 वर्ष की सजा हुई।
- गांधी जी को आगा खां पैलेस, पूना में कैद किया गया था। 10 फरवरी, 1944 से उन्होंने 21 दिन का उपवास

Nitin-Gupta.com

GET IT ON Google Play Best Study PDF के लिए हमारी App को Download करें "GK Trick By Nitin Gupta"

आरम्भ किया, इसका देश पर व्यापक प्रभाव पड़ा।

- जनता ने सरकार पर गांधी जी को रिहा करने के लिए दबाव डाला। विदेशी समाचार-पत्रों और संस्थाओं ने भी गांधी जी की रिहाई का सुझाव दिया परन्तु चर्चिल ने कहा कि जब हम दुनिया में हर जगह जीत रहे हैं तो ऐसे समय में एक बुड्ढे के सामने कैसे झुक सकते हैं जो हमेशा से हमारा दुश्मन रहा है।
- गांधी जी को बाद में बीमारी के आधार पर 6 मई, 1944 को छोड़ दिया गया।
- भारत छोड़ो आन्दोलन की एक विशेषता यह भी थी कि इस दौरान देश के कुछ भागों में समानान्तर सरकार की स्थापना हुई। पहली ऐसी सरकार बलिया में चित्तू पाण्डे के नेतृत्व में बनी।
- मिदनापुर जिले (बंगाल) के तामलूक में गठित जातीय सरकार 1944 तक चलती रही। सतारा की सरकार सबसे दीर्घजीवी रही, यह 1945 तक कार्यरत रही, इसके नेता वाई.वी. चौहान एवं नाना पाटिल थे।
- ब्रिटिश शासन का विरोध इतने प्रबल रूप में भारतीय जनता द्वारा पहली बार हुआ।
- डा. ईश्वरी प्रसाद के अनुसार—अगस्त की क्रांति सरकार के विरुद्ध प्रजा का विरोध था, इसकी तुलना फ्रांस के इतिहास में ब्रैस्टिल के पतन से या रूस की अक्टूबर क्रान्ति से भी की जा सकती है।

भारत छोड़ो आन्दोलन के समय बनी समानान्तर सरकारें

बलिया (उ. प्र.)	चित्तू पाण्डेय के नेतृत्व में
तामलुक (बंगाल)	सतीश सावंत के नेतृत्व में (तामलुक जातीय सरकार)
सतारा	नाना पाटिल एवं वाई.वी. चव्हाण (सर्वाधिक दीर्घ जीवी)

भारत छोड़ो आन्दोलन से अलग रहने वाले दल

मुस्लिम लीग	आर.एस.एस.
वामपंथी	अकाली दल
साम्यवादी	यूनियनिस्ट पार्टी
उदारवादी	जस्टिस पार्टी
हिन्दू महासभा	ईसाई समुदाय

सी.आर. फार्मूला (1944 ई.)

- राजगोपालाचारी जिन्हें सी.आर. के नाम से जाना जाता है। इन्होंने साम्प्रदायिक समस्या के समाधान के लिए मुस्लिम लीग की पाकिस्तान की माँग को स्वीकार करने की सोची।
- कांग्रेस ने इनके इस विचार को स्वीकार नहीं किया। परिणामस्वरूप इन्होंने कांग्रेस से त्यागपत्र देकर पाकिस्तान के सम्बन्ध में निहित योजना तैयार की।
- योजना के मुख्य बिन्दु इस प्रकार हैं—
  1. युद्ध के दौरान मु0 लीग को पूर्ण स्वाधीनता की माँग का समर्थन करना चाहिए। और संक्रमणकाल के दौरान अस्थायी सरकार बनाने में कांग्रेस का सहयोग करना चाहिए।
  2. युद्ध के बाद मुस्लिम बहुमत के क्षेत्रों का निर्धारण एक आयोग द्वारा होगा, जहाँ बाद में जनमत द्वारा यह निर्णय लिया जायेगा कि वे अलग राज्य चाहते हैं या नहीं।
  3. जनसंख्या का कोई भी स्थानांतरण ऐच्छिक आधार पर होगा।
  4. यह बातें तभी लागू होंगी जब इंग्लैंड सत्ता भारत को सौंप देगा।
- गांधी जी ने इसी फार्मूले के आधार पर जिन्ना से वार्ता की लेकिन कोई समझौता नहीं हो सका।

Nitin-Gupta.com

GET IT ON Google Play Best Study PDF के लिए हमारी App को Download करें "GK Trick By Nitin Gupta"

आजाद हिन्द फौज

- द्वितीय विश्व युद्ध के बीच भारतीयों में राष्ट्रीय भावना को उद्वेलित करने में आजाद हिन्द फौज की प्रमुख भूमिका रही। आजाद हिन्द फौज की स्थापना सितम्बर 1942 ई. में कैप्टन मोहन सिंह ने कर ली थी, किन्तु अक्टूबर 1943 ई. में सिंगापुर में सुभाष चन्द्र बोस ने आजाद हिन्द फौज सरकार की स्थापना कर इसमें नई जान डाली।
- जापान ने अंडमान एवं निकोबार को जीतकर आजाद हिन्द फौज को सौंप दिया। सुभाष ने अंडमान का नाम स्वराज और निकोबार का नाम शहीद रखा।
- आजाद हिन्द फौज के गिरफ्तार सैनिकों तथा अधिकारियों मेजर शहनवाज खां, कर्नल प्रेम सहगल और कर्नल गुरु दयाल सिंह आदि पर नवंबर 1945 ई. में दिल्ली के लाल किले में अंग्रेजी सरकार ने मुकदमा चलाया। आजाद हिन्द फौज के अधिकारियों को बचाने के लिए भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने भूलाभाई देसाई के नेतृत्व में तेज बहादुर सप्रू, आसफ अली, कैलाश नाथ काटजू, जवाहर लाल नेहरू को लेकर आजाद हिन्द फौज बचाव समिति का गठन किया। उपरोक्त लोगों के वकालत करने के बाद भी ब्रिटिश अदालत ने आजाद हिन्द फौज के अधिकारियों को फांसी की सजा सुनाई। किन्तु जन आन्दोलनों व विरोधी तेवरों को देखकर तत्कालीन वायसराय लार्ड वेवेल ने उक्त अधिकारियों की सजा माफ कर दी।

सुभाष चन्द्र बोस

- सुभाष चन्द्र बोस का जन्म कटक (उड़ीसा) के एक बंगाली परिवार में 23 जनवरी, 1897 ई. को हुआ था।
- 1919 ई. में दर्शनशास्त्र से स्नातक (प्रथम श्रेणी से पास) करने के बाद वे उसी वर्ष आई.सी.एस. की परीक्षा देने इंग्लैण्ड गये और उसी परीक्षा में (1920 ई. में) उन्होंने चौथा स्थान प्राप्त किया।
- भारत में रौलेट ऐक्ट, जलियांवाला बाग हत्याकाण्ड जैसे अंग्रेजी शासन के कृत्यों को देखकर उन्होंने अप्रैल 1921 ई. में आई.सी.एस. से त्यागपत्र दे दिया और भारत आ गए।
- सुभाष चितरंजन दास से मिले और उन्हें अपना राजनीतिक गुरु मान लिया।
- चितरंजन दास इन्हें "ए यंग ओल्डमैन" कहा करते थे।
- भारत आकर महात्मा गांधी के कहने पर उन्होंने अपने राजनीतिक गुरु देशबन्धु चितरंजन दास के साथ मिलकर 1921 ई. में इंग्लैण्ड के युवराज के आगमन का बहिष्कार कार्यक्रम चलाया, जिसके लिए उन्हें 1924 ई. में देश निकाला देकर माण्डले जेल में भेज दिया गया। 1927 ई. में खराब स्वास्थ्य के कारण उन्हें रिहा किया गया।
- 1931 में इन्हें नव जवान भारत सभा का अध्यक्ष चुना गया।
- 1935 ई. में उनकी पुस्तक 'दि इण्डियन स्ट्रगल' प्रकाशित हुई।
- 1938 ई. में उन्होंने भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के हरिपुरा अधिवेशन की अध्यक्षता की थी तथा त्रिपुरी अधिवेशन में उन्होंने महात्मा गांधी समर्थित पट्टाभि सीतारमैय्या को हराया और अध्यक्ष बने। लेकिन महात्मा गांधी से मतभेद हो जाने के कारण 1939 ई. में कांग्रेस अध्यक्ष पद से इस्तीफा दे दिया और इसी वर्ष कांग्रेस के अन्दर 'फारवर्ड ब्लाक' का गठन किया।
- 1939 के त्रिपुरी अधिवेशन में पट्टाभि सीतारमैय्या को पराजित कर पुनः अध्यक्ष चुने गये।
- 1940 ई. में ब्रिटिश शासन द्वारा उनके घर में ही नजरबन्द किये जाने पर वे पठान जियाउद्दीन के वेश में घर से निकलकर बर्लिन शहर (जर्मनी) पहुँचे, वहाँ उन्होंने हिटलर व उसके सचिव रिबेट्रोप से मुलाकात की।

Nitin-Gupta.com

GET IT ON Google Play Best Study PDF के लिए हमारी App को Download करें "GK Trick By Nitin Gupta"

जर्मनी की जनता ने उन्हें 'नेताजी' के उपनाम से सम्बोधित किया।

- आजाद हिन्द फौज में एक हजार स्त्री सैनिकों वाली रानी झांसी रेजीमेंट भी शामिल थी जिसका कमान लक्ष्मी स्वामीनाथन को सौंपी गई थी।
- सुभाष चन्द्र बोस ने जापानी (टोकियो) रेडियो से भारत की स्वतंत्रता का प्रथम संदेश दिया था।
- सुभाष 2 जुलाई, 1943 ई. को सिंगापुर पहुंचे और 5 जुलाई, 1943 ई. को रासबिहारी बोस ने उन्हें भारतीय स्वतंत्रता लीग की अध्यक्षता का भार सौंपा, अब सुभाष चन्द्र बोस 'नेताजी' कहलाने लगे।
- सुभाष चन्द्र बोस ने जर्मनी जाने के लिए ओरलैण्डो मजोट्टा के नाम से पासपोर्ट बनवाया था।
- सुभाष चन्द्र बोस का प्रसिद्ध नारा था—दिल्ली चलो और तुम मुझे खून दो मैं तुम्हें आजादी दूँगा।

देशी रियासतों के प्रति ब्रिटिश नीति (1906-47 ई.)

- 1906 ई. के बाद देशी राज्यों के प्रति ब्रिटिश शासन की नीति बदली और उन्होंने देशी नरेशों के प्रति "अधीनस्थ सहयोग की नीति" अपनाई।
- वायसराय लार्ड मिन्टो ने देशी राज्यों पर "दबाव कम करने की नीति" अपनाई।
- मौंटफोर्ड रिपोर्ट के कुछ समय बाद देशी नरेशों के मण्डल की स्थापना 1921 ई. में की गई जिसे "चेम्बर ऑफ प्रिंसेज" कहा गया। इससे देशी राज्यों को ब्रिटिश शासन ने अपने पक्ष में करने की कोशिश की।
- देशी नरेशों के साथ भारत सरकार के सम्बंधों पर विचार करने के लिए 1927 ई. में बटलर कमेटी की नियुक्ति की गई।
- इस कमेटी ने ब्रिटिश ताज और देशी नरेशों के बीच सीधे सम्बंध स्वीकार किये।
- 1935 ई. के ऐक्ट में पहली बार देश में संघ स्थापित करने के लिए ब्रिटिश भारतीय क्षेत्रों के अलावा देशी राज्यों के प्रतिनिधियों के लिए भी सीटें निर्धारित की गई।
- 1947 ई. में भारत की स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद सभी देशी राज्य स्वतंत्र हो गये। अतः कांग्रेस सरकार ने निश्चित नीति बनानी तय की। उधर संवैधानिक स्थिति से कुछ देशी राज्यों यथा ट्रावनकोर, कोचिन, भोपाल, जूनागढ़ आदि ने अपनी स्वतंत्र सत्ता की घोषणा कर दी, लेकिन जवाहर लाल नेहरू व सरदार वल्लभ भाई पटेल ने दृढ़ता से भारतीय रियासतों को भारतीय संघ में शामिल कराया।

प्रमुख नारे

- स्वराज हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है—लोकमान्य तिलक
- वन्दे मातरम्—बंकिम चन्द्र चटर्जी
- तुम मुझे खून दो मैं तुम्हें आजादी दूँगा, जय हिन्द, दिल्ली चलो—सुभाष चन्द्र बोस
- करो या मरो, सत्य और अहिंसा मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है—महात्मा गांधी
- इंकलाब जिन्दाबाद—भगत सिंह
- वेदों की ओर लौटो—स्वामी दयानंद सरस्वती
- सारे जहाँ से अच्छा हिन्दुस्तान हमारा—मुहम्मद इकबाल
- जन-गण-मन अधिनायक जय हे—रवीन्द्र नाथ टैगोर की रचना गीतांजली से उद्धृत
- आराम हराम है—पं. जवाहर लाल नेहरू

Nitin-Gupta.com

GET IT ON Google Play Best Study PDF के लिए हमारी App को Download करें "GK Trick By Nitin Gupta"

स्वतंत्रता आन्दोलन के समय लिखी गई महत्वपूर्ण पुस्तकें व उनके लेखक

- यंग इण्डिया—महात्मा गांधी
- अनहैप्पी इण्डिया—लाला लाजपत राय
- इण्डिया डिवाइडेड—राजेन्द्र प्रसाद
- डिस्कवरी ऑफ इण्डिया—पं. जवाहर लाल नेहरू
- ग्लिम्पसज ऑफ वर्ल्ड हिस्ट्री—पं. जवाहर लाल नेहरू
- नील दर्पण—दीनबन्धु मित्र
- गीता रहस्य—बाल गंगाधर तिलक
- सत्यार्थ प्रकाश—दयानंद सरस्वती
- इण्डिया विन्स फ्रीडम—अबुल कलाम आजाद
- अलहिलाल—अबुल कलाम आजाद
- आनंदमठ, कुण्डली—बंकिम चन्द्र चटर्जी
- इण्डिया टुडे—रजनी पाम दत्त
- एलन आक्टोवियन ह्यूम—विलियम वुडेनबर्न
- इण्डियन रेनेशा—सी.एफ. एण्ड्रूज
- इण्डियन स्ट्रगल—सुभाष चन्द्र बोस
- गीतांजली, गोरा—रवीन्द्रनाथ टैगोर
- पावर्टी एण्ड अन ब्रिटिश रूल आफ इण्डिया—दादा भाई नौरोजी
- पाकिस्तान ऑर द पार्टिसन ऑफ इण्डिया—मूक नायक वी.आर. अम्बेडकर
- टेलिजन एण्ड सोशल रिफॉर्म्स—एम.जी. रानाडे
- फ्रीडम एटमिडनाइट—लैपियर
- न्यू इण्डिया—ऐनी बेसेन्ट
- आवर इण्डियन मुसलमान—डब्ल्यू.डब्ल्यू. हंटर
- ए नेशन इन मेकिंग—सुरेन्द्र नाथ बनर्जी
- भारत विभाजन के गुनहगार—डॉ. राम मनोहर लोहिया
- द स्टोरी आफ माई लाइफ—मोरारजी देसाई
- इण्डिया एण्ड इंडियन मिशन—अलेक्जेंडर डफ
- द स्कोप आफ हैप्पीनेस—विजय लक्ष्मी पंडित
- अभ्युदय—मदन मोहन मालवीय
- वार ऑफ इण्डिया इंडिपेंडेंस—वीर सावरकर
- द ग्रेट रिबेलियन—अशोक मेहता
- सिपॉय म्यूटिनी रिवोल्ट ऑफ 1857—आर.सी. मजूमदार
- समाजवादी क्यों—जय प्रकाश नारायण
- भारत-भारती—मैथिलीशरण गुप्त

स्वतंत्रता संग्राम के प्रमुख व्यक्तियों के उपनाम

व्यक्ति	उपनाम	व्यक्ति	उपनाम
पं. मदन मोहन मालवीय	महामना	बालगंगाधर तिलक	लोकमान्य
राजगोपालाचारी	राजाजी	जय प्रकाश नारायण	लोकनायक
भगत सिंह	शहीदे आजम	दादाभाई नौरोजी	ग्रैंड ओल्डमैन ऑफ इण्डिया
वल्लभ भाई पटेल	लौह पुरुष	मुहम्मद अली जिन्ना	कायदे आजम
रवीन्द्र नाथ टैगोर	गुरुदेव	वल्लभ भाई पटेल	सरदार
मैथिलीशरण गुप्त	राष्ट्रकवि	जिन्ना	'हिन्दू-मुस्लिम एकता के राजदूत' (सरोजिनी नायडू द्वारा)
चितरंजन दास	देशबन्धु		
अब्दुल गफ्फार खाँ	सीमान्त गांधी		

Nitin-Gupta.com

GET IT ON Google Play Best Study PDF के लिए हमारी App को Download करें "GK Trick By Nitin Gupta"

वेबेल योजना (1945 ई.)ह

- लार्ड वेबेल विश्व युद्ध में भारतीयों का सहयोग पाने के लिए 14 जून, 1945 को अपनी योजना की घोषणा की जिसे वेबेल योजना के नाम से जाना जाता है। इसके मुख्य बिन्दु इस प्रकार हैं—
  1. केन्द्र में एक नई कार्यकारिणी का गठन किया जायेगा जिसमें वायसराय एवं कमांडर इन चीफ को छोड़कर सभी सदस्य भारतीय होंगे।
  2. रक्षा एवं विदेश विभाग को छोड़कर सभी विभाग भारतीयों के हाथ में होंगे।
  3. कार्यकारिणी में 40% सवर्ण हिन्दु, 40% मुसलमान एवं 20% अन्य वर्ग के सदस्य होंगे।
  4. वायसराय को मंत्रियों की राय ठुकराने का अधिकार होगा लेकिन अकारण राय नहीं ठुकरायेगा।

शिमला सम्मेलन (25 जून, 1945 ई.)

- वेबेल योजना पर विचार विमर्श करने हेतु वायसराय ने शिमला में एक सम्मेलन बुलाया। इस सम्मेलन में कुल 21 नेताओं ने भाग लिया।
- इस सम्मेलन में मुस्लिम सदस्य चुनने के मुद्दे पर सम्मेलन असफल हो गया।
- कांग्रेस ने एक मुस्लिम अबुल कलाम आजाद को कार्यकारिणी में रखने के लिए चुना लेकिन जिन्ना ने कहा कि मुस्लिम सदस्य चुनने का अधिकार केवल मुस्लिम लीग को है।
- इसी मुद्दे पर यह योजना असफल हो गई।

कैबिनेट मिशन योजना (1946 ई.)

- भारत की राजनीतिक समस्याओं के समाधान के लिए ब्रिटिश प्रधानमंत्री एटली 19 फरवरी, 1946 को ब्रिटिश कैबिनेट मंत्रियों का एक मिशन भेजने की घोषणा की।
- इस मिशन के सदस्य थे—भारत सचिव लार्ड पैंथिक लारेंस व्यापार बोर्ड के अध्यक्ष सर स्टेफर्ड क्रिप्स तथा नौसेना प्रमुख ए.वी. एलेक्जेंडर।
- चूँकि ये सभी सदस्य ब्रिटिश सरकार के कैबिनेट सदस्य थे अतः इसे कैबिनेट मिशन के नाम से जाना जाता है।
- इसका उद्देश्य सत्ता के हस्तांतरण से सम्बन्धित लघुकालीन एवं दीर्घकालीन व्यवस्था का निर्माण करना।
- कैबिनेट मिशन 23 मार्च, 1946 को भारत पहुँचा और 5 सप्ताह तक विभिन्न दलों एवं वर्गों के नेताओं से वार्ता की लेकिन कोई निष्कर्ष नहीं निकला।
- अंततः कैबिनेट मिशन ने 16 मई, 1946 को अपनी तरफ से एक योजना प्रस्तुत जिसे हम कैबिनेट मिशन योजना के नाम से जानते हैं। इसके मुख्य बिन्दु इस प्रकार हैं—
- ब्रिटिश भारत एवं देशी रियासतों को मिलाकर भारत संघ का निर्माण किया जायेगा।
- संघ की व्यवस्थापिका एवं कार्यपालिका प्रान्तों तथा देशी राज्यों के प्रतिनिधियों से मिलकर गठित होगी।
- संविधान बनाने के लिए एक संविधान सभा का गठन होगा।
- संविधान सभा के सदस्यों की संख्या 389 होगी। जिसमें 292 सदस्य ब्रिटिश भारत के, 93 सदस्य देशी रियासतों के और 4 सदस्य चीफ कमिश्नर प्रांतों के होंगे।
- प्रत्येक प्रान्त से 10 लाख की जनसंख्या पर एक प्रतिनिधि होगा।
- प्रत्येक प्रान्त के लिए निर्धारित स्थान जनसंख्या के आधार पर मुस्लिम, सिक्ख व सामान्य आधार पर विभाजित किये जायेंगे।
- एक अंतरिम सरकार का गठन किया जायेगा जिसमें सभी दलों के लोगों को सम्मिलित किया जायेगा।
- यदि कोई दल नहीं सम्मिलित होना चाहे तो भी अंतरिम सरकार का गठन होगा।

Nitin-Gupta.com

GET IT ON Google Play Best Study PDF के लिए हमारी App को Download करें "GK Trick By Nitin Gupta"

अंतरिम सरकार का गठन

- संविधान निर्माण का कार्य पूरा होने तक देश का प्रशासन चलाने के लिए एक अंतरिम सरकार की व्यवस्था की बात कैबिनेट मिशन में की गई थी।
- प्रारम्भ कांग्रेस एवं मुस्लिम लीग दोनों ने कैबिनेट मिशन योजना स्वीकार कर ली।
- लेकिन जब संविधान सभा के परिणाम सामने आये तो मुस्लिम लीग अपनी कमजोर स्थिति को देखते हुए कैबिनेट मिशन योजना मानने से इंकार कर दिया। और अपनी पाकिस्तान की माँग पुनः दोहराई।
- 16 अगस्त, 1946 को मुस्लिम लीग ने "प्रत्यक्ष कार्यवाही दिवस" मनाया। इस अवसर पर भीषण साम्प्रदायिक दंगे हुए।
- 24 अगस्त, 1946 को वायसराय ने अंतरिम सरकार गठित करने की घोषणा की।
- 2 सितंबर, 1946 को अंतरिम सरकार ने कार्य करना प्रारंभ किया।
- प्रारम्भ में मुस्लिम लीग अंतरिम सरकार में सम्मिलित नहीं हुई।
- लेकिन अक्टूबर 1946 में सरकार को असहयोग करने के उद्देश्य से सरकार में सम्मिलित होने का निर्णय लिया।
- मुस्लिम लीग के लियाकत अली को वित्त मंत्री बनाया गया जो सरकार को अत्यधिक असहयोग किये।

अंतरिम सरकार के सदस्य

1. जवाहर लाल नेहरू	7. शरतचन्द्र बोस
2. सरदार वल्लभ भाई पटेल	8. डॉ. जॉन मथाई
3. डॉ. राजेन्द्र प्रसाद	9. सरदार बलदेव सिंह
4. एम. आसफ अली	10. सर शफात खाँ
5. सी. राजगोपालाचारी	11. सैय्यद अली जहीर
6. जगजीवन राम	12. सी.एच. भाभा

बाद में शरत चन्द्र बोस, सर शफात खाँ एवं सैय्यद अली जहीर ने त्यागपत्र दे दिया।

- मुस्लिम लीग के 5 प्रतिनिधि थे—लियाकल अली, राजा गजनफर अली, अब्दुल रब निस्तार, आई.आई. चन्द्रीगर, योगेन्द्रनाथ मंडल

एटली की घोषणा (20 फरवरी, 1947 ई.)

- 20 फरवरी 1947 को ब्रिटिश प्रधानमंत्री क्लीमेंट एटली ने ब्रिटिश संसद में (हाउस ऑफ कामंस में) एक ऐतिहासिक घोषणा करते हुए कहा कि अंग्रेज जून 1948 से पहले ही उत्तरदायी लोगों को सत्ता सौंपकर भारत छोड़ देंगे।
- अपने भाषण के अंत में एटली ने लार्ड वेबेल के स्थान पर लार्ड माउंटबेटेन को भारत का गवर्नर जनरल बनाने की घोषणा की और कहा कि माउंटबेटेन मार्च 1947 में कार्यभार ग्रहण कर भारतीयों के हाथों में शासन का उत्तरदायित्व सौंपेंगे।
- जवाहर लाल नेहरू ने एटली की घोषणा का स्वागत करते हुए इसे एक बुद्धिमत्तापूर्ण एवं साहसपूर्ण निर्णय बताया।

माउण्टबेटेन योजना (3 जून, 1947 ई.)

- 22 मार्च, 1947 को ब्रिटिश भारत के 34वें एवं अंतिम गवर्नर जनरल लार्ड माउंटबेटेन भारत आये और सत्ता हस्तांतरण के कार्य में लग गये।
- लगभग दो महीने के वार्ता के पश्चात लार्ड माउण्टबेटेन इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि भारत का विभाजन अनिवार्य है।
- यद्यपि गाँधी जी एवं मौलाना अबुल कलाम आजाद विभाजन के सख्त खिलाफ थे।
- गाँधी जी ने विभाजन को रोकने के लिए लार्ड माउण्टबेटेन को यह सुझाव भेजा कि मु. अली जिन्ना को प्रधानमंत्री बना दिया जाये और उन्हें कैबिनेट चुनने का अधिकार दे दिया जाये लेकिन जवाहर लाल नेहरू एवं पटेल ने इसका विरोध किया।

Nitin-Gupta.com

GET IT ON Google Play Best Study PDF के लिए हमारी App को Download करें "GK Trick By Nitin Gupta"

- माउण्टबेटेन अथवा 3 जून की योजना के मुख्य बिन्दु इस प्रकार हैं—
  1. पंजाब, बंगाल व आसाम के बँटवारे हेतु एक सीमा आयोग का गठन होगा।
  2. देशी रियासतों को यह निर्णय लेना होगा कि वे भारत में रहना चाहते हैं या पाकिस्तान में।
  3. सिन्ध एवं बलूचिस्तान के सन्दर्भ में प्रान्तीय विधानमंडल सीधे निर्णय लेंगे।
  4. बंगाल एवं पंजाब की विधानसभाओं को दो भागों में विभाजित किया जायेगा। एक मुस्लिम बाहुल्य जिले दूसरे में बाकी जिले के प्रतिनिधि होंगे।
- माउण्टबेटेन योजना के आधार पर 22 जून, 1947 को एक विधेयक तैयार किया गया।
- 4 जुलाई, 1947 को विधेयक को ब्रिटिश संसद में प्रस्तुत किया गया।
- 15 जुलाई, 1947 को हाउस ऑफ कामंस में तथा 16 जुलाई, 1947 को हाउस लार्ड्स में विधेयक पारित हो गया।
- 18 जुलाई, 1947 को ब्रिटिश सम्राट जार्ज VI ने विधेयक पर हस्ताक्षर कर दिया, इस तरह भारत स्वतंत्रता अधिनियम पारित हो गया।

भारत स्वतंत्रता अधिनियम (1947 ई.)

- भारत एवं पाकिस्तान नाम से दो डोमेनियन की स्थापना होगी।
- देशी नरेश भारत अथवा पाकिस्तान में अपनी इच्छानुसार मिल सकते हैं। यदि न मिलना चाहें तो ब्रिटेन के साथ पूर्ववत सम्बन्ध बने रहेंगे।
- प्रत्येक डोमेनियन की विधानसभा को अपने क्षेत्र के लिए कानून बनाने का अधिकार होगा।
- 15 अगस्त, 1947 के बाद ब्रिटिश संसद द्वारा पारित कोई भी कानून किसी भी डोमेनियन में लागू नहीं होगा।
- भारत के राज्य क्षेत्र में उन क्षेत्रों को छोड़कर जो पाकिस्तान में सम्मिलित होंगे ब्रिटिश भारत के सभी प्रांत सम्मिलित होंगे।
- पाकिस्तान के राज्य क्षेत्र में पश्चिमी पंजाब, पूर्वी बंगाल, सिन्ध बलूचिस्तान और उत्तर-पश्चिम सीमा प्रांत शामिल होंगे।
- दोनों डोमेनियन का संचालन 1935 के अधिनियम के अनुसार तब तक होगा जब तक कि संविधान सभा इसकी वैकल्पिक व्यवस्था नहीं कर देता।
- भारत स्वतंत्रता अधिनियम के अनुसार 14 अगस्त, 1947 को भारत का विभाजन कर पाकिस्तान का निर्माण किया गया।
- पाकिस्तान के प्रथम गवर्नर जनरल मु. अली जिन्ना एवं प्रधानमंत्री लियाकत अली बने।
- 15 अगस्त, 1947 को भारत को स्वतंत्रता प्राप्त हुई। स्वतंत्र भारत के प्रथम गवर्नर जनरल लार्ड माउण्टबेटेन तथा प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू बने।
- स्वतंत्र भारत के प्रथम और अंतिम भारतीय गवर्नर जनरल सी. राजगोपालाचारी थे।

◆◆◆

Nitin-Gupta.com

GET IT ON Google Play Best Study PDF के लिए हमारी App को Download करें "GK Trick By Nitin Gupta"

Best PDF Notes के लिए हमारी App के Popular Course

बहुत ही कम कीमत में

🟩 Best PDF Notes in Hindi – All Subjects	Join Now
🟦 Best PDF Notes in English – All Subjects	Join Now
🎯 GK Trick by Nitin Gupta – GK and Current Affairs	Join Now
📰 Current Affairs 2024-25 in Hindi	Join Now
🚂 RRB NTPC 2025 – Notes + Test Series	Join Now
🚆 RRB Group D 2025 – Notes + Test Series	Join Now

📢 हमें Social Media पर Follow करें